MAHBOOBE ATTAR KI 122 HIKAYAT

महबूबे अत्तार की 122 हिकायात

मर्हूम रुक्ने शूरा हाजी ज़म ज़म रज़ा अत्तारी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ के हालाते ज़िन्दगी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(المُستطرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفکر بیروت)

***नोट :** अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।*

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

*किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये ।*

www.dawateislami.net

महबूबे अ़त्तार की 122 हि़कायात

येह किताब **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने "उर्दू" **ज़बान** में पेश की है। **मजलिसे तराजिम** (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को "**हिन्दी**" **रस्मुल ख़त़** में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस में अगर किसी जगह **कमी–बेशी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, e-mail या sms) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर षवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी (रस्मुल ख़त़) का तराजिम चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	ष = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح

ज़ = ژ	ज़ = زھ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = ع
य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
ृ = ٗ	ु = ُ	ि = ِ	– = َ	ी = ئ	ू = وُ	ा = آ

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,

नागर वाड़ा, मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

मर्हूम रुक्ने शूरा हाजी ज़म ज़म रज़ा अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى

के हालाते ज़िन्दगी

महबूबे अत्तार की 122 हिकायात

–: पेशकश :–

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(शो'बए इस्लाही कुतुब)

–: नाशिर :–

मक्तबतुल मदीना, मदीनतुल औलिया अहमदाबाद

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

नाम किताब : महबूबे अत्तार की 122 हिकायात

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(शो'बए इस्लाही कुतुब)

सिने तबाअत : ज़ुल क़'दतुल हराम, सि. 1434 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, तीन दरवाज़ा, अहमदाबाद-1

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 24 रबीउल अव्वल, 1434 हि. **हवाला** : 172

الحمد للّٰہ رب العٰلمین والصلوٰۃ والسلام علٰی سید المرسلین وعلٰی اٰلہ واصحابہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

"महबूबे अत्तार की 122 हिकायात" (उर्दू)

(मत्बूआ : मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे षानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अक़ाइद, कुफ़्रिय्या इबारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़्ही मसाइल और अरबी इबारात वग़ैरा के हवाले से मक़्दूर भर मुलाहज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल

(दा'वते इस्लामी)

06-02-2013

E - mail : ilmia@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"इताअत में बरकत है" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "14 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:**
"نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ मुसलमान की निय्यत उस के अमल से बेहतर है।"
(المعجم الكبير للطبرانی، ٦/١٨٥، الحديث:٥٩٤٢)

दो मदनी फूल :-

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अमले ख़ैर का षवाब नहीं मिलता।
﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा।

इस किताब को पढ़ने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लीजिये, मषलन ﴾1﴿ हर बार हम्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअव्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़हे पर ऊपर दी हुई दो अरबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अमल हो जाएगा)। ﴾5﴿ हत्तल वस्अ इस का बा वुज़ू और ﴾6﴿ क़िब्ला रू मुतालआ करूंगा। ﴾7﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾8﴿ अहादीषे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾9﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾10﴿ जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴾11﴿ सालिहीन का ज़िक्रे ख़ैर पढ़ूंगा। ﴾12﴿ अगर कोई बात समझ न आई तो उ-लमा से पूछ लूंगा। ﴾13﴿ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। ﴾14﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तहरीरी तौर पर मुत्तलअ करूंगा।

(मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल* ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार*** *क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और **इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त** को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

www.dawateislami.net

"**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़षे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह़ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में जगह नसीब फ़रमाए । اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

शैतान लाख सुस्ती दिलाए मगर येह किताब (208 सफ़हात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ *आप को अपनी इस्लाह़ का जज़्बा मिलेगा।*

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : اَوْلَى النَّاسِ بِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اَكْثَرُهُمْ عَلَيَّ صَلَاةً या'नी बरोज़े क़ियामत लोगों में मेरे क़रीब तर वोह होगा, जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे।''

(جامع الترمذي، أبواب الوتر، باب ماجاء في فضل الصلاة على النبي ﷺ، ٢/٢٧، الحديث ٤٨٤)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! क़ियामत में सब से आराम में वोह होगा जो **रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ रहे और हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की हमराही नसीब होने का ज़रीआ़ दुरूद शरीफ़ की कषरत है। इस से मा'लूम हुवा कि दुरूदे पाक बेहतरीन नेकी है कि तमाम नेकियों से **जन्नत** मिलती है और इस (या'नी दुरूदे पाक) से **बज़्मे जन्नत के दुल्हा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم। (मिरआतुल मनाजीह़ 2/100)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बादशाहों की हड्डियां

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ रिसाले "**बादशाहों की हड्डियां**" के सफ़ह़ा 1 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं : **मन्क़ूल** है कि एक बादशाह शिकार के लिये निकला मगर जंगल में अपने मुसाह़िबों से बिछड़ गया। उस ने एक कमज़ोर और ग़मगीन नौजवान को देखा जो **इन्सानी हड्डियों** को उलट पलट रहा है, पूछा : तुम्हारी येह ह़ालत कैसे हो गई है? और इस सुन्सान बियाबान में अकेले क्या कर रहे हो? उस ने जवाब दिया : मेरा येह ह़ाल इस वजह से है कि मुझे त़वील सफ़र दरपेश है। दो मुवक्कल (दिन और रात की सूरत में) मेरे पीछे लगे हुए हैं और मुझे ख़ौफ़ज़दा कर के आगे को दौड़ा रहे हैं या'नी जो भी दिन और रात गुज़रते हैं वोह मुझे मौत से क़रीब करते चले जा रहे हैं, मेरे सामने तंगो तारीक तक्लीफ़ों भरी क़ब्र है, आह! गलने सड़ने के लिये अ़न क़रीब मुझे ज़ेरे ज़मीन रख दिया जाएगा, हाए! हाए! वहां तंगी व परेशानी होगी, वहां मुझे कीड़ों की ख़ूराक बनना होगा, मेरी हड्डियां जुदा-जुदा हो जाएंगी और इसी पर इक्तिफ़ा नहीं बल्कि इस के बा'द क़ियामत बरपा होगी जो कि निहायत ही कठिन मर्ह़ला होगा। मा'लूम नहीं बा'द अज़ां मेरा जन्नत ठिकाना होगा या مَعَاذَاللّٰه जहन्नम में जाना होगा। तुम ही बताओ, जो इतने ख़त़रनाक मराह़िल से दो चार हो वोह भला कैसे ख़ुशी मनाए? येह बातें सुन कर **बादशाह** रंजो मलाल से

www.dawateislami.net

निढाल हो कर घोड़े से उतरा और उस के सामने बैठ कर अर्ज़ गुज़ार हुवा : ऐ नौजवान ! आप की बातों ने मेरा सारा चैन छीन लिया और दिल को अपनी गिरिफ़्त में ले लिया, ज़रा इन बातों की मज़ीद वज़ाहत फ़रमा दीजिये ! तो उस ने कहा, येह मेरे सामने जो हड्डियां जम्अ़ हैं इन्हें देख रहे हो ? येह ऐसे **बादशाहों की हड्डियां** हैं जिन्हें दुन्या ने अपनी ज़ीनत में **उलझा** कर फ़रेब में मुब्तला कर दिया था, येह ख़ुद तो लोगों पर हुकूमत करते रहे मगर ग़फ़्लत ने इन के दिलों पर हुक्मरानी की, येह लोग आख़िरत से ग़ाफ़िल रहे यहां तक कि इन्हें अचानक मौत आ गई ! इन की तमाम आरज़ूएं धरी की धरी रह गईं, ने'मतें सल्ब कर ली गईं, क़ब्रों में इन के जिस्म गल-सड़ गए और आज इन्तिहाई **कस्मपुर्सी** के आ़लम में इन की हड्डियां बिखरी पड़ी हैं। अ़न क़रीब इन की हड्डियों को फिर ज़िन्दगी मिलेगी और इन के जिस्म मुकम्मल हो जाएंगे, फिर इन्हें इन के आ'माल का बदला मिलेगा, और येह ने'मतों वाले घर जन्नत या अ़ज़ाब वाले घर दोज़ख़ में जाएंगे। इतना कहने के बा'द वोह नौजवान **बादशाह** की आंखों से औझल हो कर मा'लूम नहीं कहां चला गया ! इधर ख़ुद्दाम जब ढूंडते हुए पहुंचे तो बादशाह का चेहरा उदास और उस की आंखों से सैले अश्क रवां था। रात आई तो बादशाह ने लिबासे शाही उतारा और दो चादरें जिस्म पर डाल कर इबादत के लिये जंगल की त़रफ़ निकल गया। फिर उस का पता न चला कि कहां गया।

(बादशाहों की हड्डियां, ब ह़वाला रौज़ुर्रियाह़ीन स. 107)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या के बादशाहों की हुकूमत अज्साम पर होती है जो निहायत ना पाएदार होती है, इन्हें या तो लोग एह्तिजाज कर के शोर मचा कर या हंगामे कर के इक्तिदार से मह्रूम करते हैं वरना बिल आख़िर मौत इन से ताजो तख़्त छीन कर इन्हें अन्धेरी क़ब्र में उतार देती है। इस दुन्या में बड़े बड़े बादशाहों ने दम तोड़ा, बड़े बड़े वज़ीरों ने मौत का जाम पिया, बड़े बड़े सरमाया दार और अपनी क़ौमों के सरदार राहिये मुल्के अ़दम हुए, आ़रिज़ी तौ़र पर इन के साथ भीड़ भाड़ भी हुई, लोगों की कषीर ता'दाद इन के जनाज़ों में भी गई मगर वक़्त के साथ साथ सब भुला दिये गए, आज इन की क़ब्रों पर कोई जाने वाला नहीं, इन को कोई पूछने वाला नहीं, इन को ईसाले षवाब करने वाला भी कोई नहीं, लेकिन जो ब ज़ाहिर बेशक ग़ुर्बत के मारे हो, ब ज़ाहिर उन के पास कोई इक्तिदार न हो लेकिन उन में से बा'ज़ ऐसे भी हुए हैं जो लोगों के दिलों के ताजदार होते हैं उन की हुकूमतें दिलों पर होती है और ऐसी पाएदार कि बरस हा बरस गुज़र जाते हैं वोह भुलाए नहीं जाते। लोग भलाई के साथ उन का चर्चा करते हैं, उन के लिये ख़ूब ईसाले षवाब करते हैं, उन की याद मनाते हैं, उन की बातों से नफ़्अ़ उठाते हैं। ऐसों का तज़किरा बाइषे नुज़ूले रह्मत होता है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उयैना رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का क़ौले मुबारक है : "عِنْدَ ذِکْرِ الصَّالِحِیْنَ تَنْزِلُ الرَّحْمَةُ या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह्मत नाज़िल होती है।"

(حلیة الاولیاء، ۷/۳۳۵،الرقم ۱۰۷۵۰)

www.dawateislami.net

बे शुमार इस्लामी भाइयों का हुस्ने ज़न है कि हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى नेक और मुत्तक़ी मुसलमान और दा'वते इस्लामी के मुख़्लिस मुबल्लिग़ थे, आइये ! अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ इन का ज़िक्रे ख़ैर करते हैं।

महबूबे अत्तार की विलादत व रिह्लत

मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी व रुक्ने मर्कज़ी मजलिसे शूरा हाजी अबू जुनैद **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى 10 सितम्बर सि. 1965 ई. (ब मुताबिक़ 14 जुमादल ऊला सि. 1385 हि.) में हैदराबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) में पैदा हुए। 6 रजबुल मुरज्जब सि. 1405 हि. (ब मुताबिक़ 28 मार्च सि 1985 ई.) में कमो बेश 20 साल की उम्र में दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हुए और शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हाथ पर बैअ़त कर के कुत़बे रब्बानी, ग़ौषे समदानी, क़िन्दीले नूरानी हुज़ूर सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِى के गुलामों में शामिल हो गए। कुछ अ़र्से के लिये मदनी माहोल से दूरी रही फिर एक इस्लामी भाई की इनफ़िरादी कोशिश के नतीजे में कमो बेश पांच साल बा'द तक़रीबन सि. 1409 हि. ब मुताबिक़ सि. 1989 में दा'वते इस्लामी से दोबारा वाबस्ता हुए और इस मदनी तह़रीक का मदनी काम करना शुरूअ़ किया। पहले इन का नाम "जावीद" था, मगर शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

www.dawateislami.net

ने इन का नाम "**मुहम्मद**" और पुकारने वाला नाम "**ज़म ज़म रज़ा**" रखा था जब कि इन की कुन्यत अबू जुनैद थी। हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡبَارِی तरक्क़ी करते करते 15 रमज़ानुल मुबारक सि. 1425 हि. ब मुताबिक़ 30 अकतूबर सि. 2004 ई. को दा'वते इस्लामी की **मर्कज़ी मजलिसे शूरा** के रुक्न बन गए और सालहा साल तक मदनी कामों की धूमें मचाईं, फिर मे'दे के मरज़ में मुब्तला हुए और तवील अलालत के बा'द हिजरी सिन के ए'तिबार से तक़रीबन 48 साल 6 माह 8 दिन इस दुन्याए फ़ानी में गुज़ारने के बा'द 21 जुल क़ा'दा सि. 1433 हि. ब मुताबिक़ 8 अकतूबर सि. 2012 ई. को पीर और मंगल की दरमियानी शब तक़रीबन 11 बज कर 45 मिनट पर बाबुल मदीना कराची में इन्तिक़ाल फ़रमा गए। اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

निकाह व अवलाद

मदनी इन्आमात के ताजदार, महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡبَارِی की अपने विसाल से कमो बेश 21 बरस पहले बाबुल इस्लाम पाकिस्तान के मशहूर शहर हैदराबाद में शादी हुई, दो बेटियां थीं जिन की इन्हों ने अपनी ज़िन्दगी में शादी कर दी थी, जब कि तक़रीबन 15 साल का बड़ा शहज़ादा ब वक़्ते वफ़ात जामिअतुल मदीना

(हैदराबाद) में दरजए षालिषा का त़ालिबुल इ़ल्म था, दूसरा बेटा आठ साल और तीसरा बेटा पांच साल का था। ह़ाजी ज़म ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के बच्चों की अम्मी ने अपने तीनों बेटों को वक़्फ़े मदीना (या'नी दा'वते इस्लामी के मदनी कामों के लिये उ़म्र भर के लिये वक़्फ़) कर दिया है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى علٰى محمَّد

कुछ लोगों का दीन के लिये वक़्फ़ होना ज़रूरी है

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان **"तफ़सीरे नई़मी"** में पारह 3 सूरए आले इ़मरान आयत नम्बर 35, 36 के तह़्त फ़रमाते हैं : कुछ लोगों का अपने आप को दीन के लिये वक़्फ़ कर देना ज़रूरी है अगर सभी लोग दुन्या में मश्ग़ूल हो जाएं तो दीन कैसे क़ाइम रहेगा ? काश ! मुसलमान इस से इ़ब्रत पकड़ें और अपनी बा'ज़ अवलाद को ख़िदमते दीन के लिये बचपन ही से इन की दीनी तर्बिय्यत कर के वक़्फ़ कर दें। याद रखिये ! हमारी इ़ज़्ज़त दीन से है। अगर हम अपनी बक़ा चाहते हैं तो ऐसे लोग ज़ियादा बनाएं। (तफ़्सीरे नई़मी 3/375 मुलख़्ख़सन)

मुफ़्ती साह़िब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक और मक़ाम पर लिखते हैं : "ज़िन्दगी हर शख़्स की गुज़रती है मगर बेहतरीन ज़िन्दगी वोह है जो रब्ब तबारक व तआ़ला के लिये **वक़्फ़** हो जाए। **अल्लाह** तआ़ला ने ऐसे ही लोगों के लिये सदक़ात का ख़ुसूसी हुक्म दिया जो अपनी ज़िन्दगी **अल्लाह** तआ़ला के लिये **वक़्फ़** कर चुके हैं।" (तफ़सीरे नई़मी 3/134 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى علٰى محمَّد

ख़िदमते दीन के लिये वक़्फ़ होने वाले की अज़मत

मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان मज़ीद फ़रमाते हैं : "अगर ज़मीन मस्जिद के लिये वक़्फ़ हो जाए तो उस की शानो अज़मत बढ़ जाती है, अस्हाबे कह्फ़ के कुत्ते ने अपनी ज़िन्दगी **अल्लाह** तआला के प्यारों के लिये वक़्फ़ कर दी तो उसे हयाते जाविदानी मिल गई, ज़मीन और कुत्ता ज़िन्दगी **वक़्फ़** करने की वजह से शान वाले हो गए तो अगर इन्सान अपनी ज़िन्दगी **अल्लाह** तआला की रिज़ा व ख़ुश्नूदी के हुसूल की ख़ातिर दीन के लिये वक़्फ़ कर दे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों से भी अफ़्ज़ल हो जाएगा।" (तफ़सीरे नईमी 3/134 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(1) तर्बिय्यते अवलाद

हाजी ज़म ज़म रज़ा अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی के बच्चों की अम्मी का बयान कुछ यूं है कि मर्हूम अपनी अवलाद से बहुत प्यार करते थे, बेटियां घर आतीं तो गूनागूं मसरूफ़िय्यात के बा वुजूद इन से मिलने घर आते थे। घर में जब किसी की ग़लती की इस्लाह करते हुए लहजा थोड़ा सख़्त करते तो साथ में वज़ाहत भी कर देते कि "मैं आख़िरत में नजात और आप लोगों के फ़ाइदे के लिये समझा रहा हूं।" खाना खाते वक़्त बच्चों के ज़रीए दुआएं पढ़वाते और सुन्नत के मुताबिक़ खाना खाने की तरकीब किया करते। हत्तल इम्कान बेटों को नमाज़ के लिये साथ ले जाया करते, **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र के

www.dawateislami.net

लिये जाते तो नमाज़ की ताकीद कर के जाते और सफ़र के दौरान भी S.M.S. के ज़रीए मा'लूमात करते कि नमाज़ अदा कर ली है या नहीं ? बीमारी की हालत में भी अपने बड़े शहज़ादे से फ़रमाया : "जैसे ही मेरी तबीअ़त बहाल हुई اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हम दोनों **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र करेंगे।" शहज़ादे को मोबाइल ले कर देने से मन्अ़ करते हुए ज़ेहन बनाया कि चूंकि बापा (या'नी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه) ने बच्चों को मोबाइल ले कर देने से मन्अ़ फ़रमाया है इस लिये मैं आप को मोबाइल ले कर नहीं दूंगा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

तर्बिय्यते अवलाद की अहम्मिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने देखा कि महबूबे अत्तार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار को अपनी अवलाद की मदनी तर्बिय्यत का कैसा जज़्बा था। यक़ीनन नेक अवलाद **अल्लाह** तबारक व तआ़ला का अ़ज़ीम इन्आ़म है क्यूंकि येह दुन्या में अपने वालिदैन के लिये राहते जान और आंखों की ठंडक का सामान बनती है। बचपन में इन के दिल का सुरूर, जवानी में आंखों का नूर और वालिदैन के बूढ़े हो जाने पर इन की ख़िदमत कर के इन का सहारा बनती है। फिर जब येह वालिदैन दुन्या से गुज़र जाते हैं तो येह सआ़दत मन्द अवलाद अपने वालिदैन के लिये बख़्शिश का सामान बनती है जैसा कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब आदमी

www.dawateislami.net

मर जाता है तो उस के आ'माल का सिलसिला मुन्क़तेअ़ हो जाता है सिवाए तीन कामों के कि इन का सिलसिला जारी रहता है : (1) सदक़ए जारिया (2) वोह इ़ल्म जिस से फ़ाइदा उठाया जाए (3) नेक अवलाद जो उस के ह़क़ में दुआ़ए ख़ैर करे।"

(صحیح مسلم،کتاب الوصیة ،باب مایلحق الانسان...الخ ،الحدیث ۱۶۳۱،ص۸۸۶)

अगर हम इस्लामी इक़दार के ह़ामिल माह़ोल के मुतमन्नी (या'नी ख़्वाहिश मन्द) हैं तो हमें अपनी इस्लाह़ के साथ साथ अपने बच्चों की मदनी तर्बिय्यत भी करनी होगी क्यूंकि अगर हम तर्बिय्यते अवलाद की अहम ज़िम्मेदारी को बोझ तसव्वुर कर के इस से ग़फ़्लत बरतते रहे और बच्चों को इन ख़त़रनाक ह़ालात में आज़ाद छोड़ दिया तो नफ़्सो शैत़ान इन्हें अपना आलए कार बना लेंगे जिस का नतीजा येह होगा कि नफ़्सानी ख़्वाहिशात की आंधियां इन्हें सह़राए इ़स्यां (या'नी गुनाहों के सह़रा) में सरगर्दां रखेंगी और वोह उ़म्रे अ़ज़ीज़ के चार दिन आख़िरत बनाने के बजाए दुन्या जम्अ़ करने में सर्फ़ कर देंगे और यूं गुनाहों का अम्बार लिये वादिये मौत के कनारे पहुंच जाएंगे। रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ शामिले ह़ाल हुई तो मरने से पहले तौबा की तौफ़ीक़ मिल जाएगी वगरना दुन्या से कफ़े अफ़्सोस मलते हुए निकलेंगे और क़ब्र के गढ़े में जा सोएंगे। सोचिये तो सही कि जब बच्चों की मदनी तर्बिय्यत नहीं होगी तो वोह मुआ़शरे का बिगाड़ दूर करने के लिये क्या किरदार अदा कर सकेंगे, जो ख़ुद डूब रहा हो वोह दूसरों को क्या बचाएगा, जो ख़ुद ख़्वाबे ग़फ़्लत में हो वोह दूसरों को क्या बेदार करेगा, जो ख़ुद

www.dawateislami.net

पस्तियों की त़रफ़ महवे सफ़र हो वोह किसी को बुलन्दी का रास्ता क्यूंकर दिखाएगा।(1)

सूना जंगल रात अंधेरी, छाई बदली काली है
सोने वालो ! जागते रहियो चोरों की रखवाली है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 185)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2) मिज़ाज में नर्मी

ह़ाजी **ज़म ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के बच्चों की अम्मी का बयान है कि मर्हूम की त़बीअ़त में बहुत **नर्मी** थी, गुस्सा बहुत ज़ब्त़ किया करते थे, एक मरतबा इन के छोटे बेटे ने मोबाइल पानी के टब में डाल दिया, इस के बा वुजूद इन्हों ने कोई गुस्सा नहीं किया।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(3) अपने बच्चों तक से मुआ़फ़ी मांग लेते

ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के बड़े बेटे मुह़म्मद जुनैद रज़ा अ़त्तारी का बयान है कि जब अब्बू किसी मुआ़मले में हमारी इस्लाह़ फ़रमाते तो बसा अवक़ात बा'द में मुआ़फ़ी मांगते और कहते : आप का दिल दुख गया होगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(4) किसी का दिल न दुखे

ह़ाजी ज़म ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की वालिदए मोह़तरमा का बयान है कि मेरे बेटे की बहुत कोशिश होती थी कि किसी

1 : तर्बिय्यते अवलाद की अहम्मिय्यत व त़रीक़ए कार जानने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब "तर्बिय्यते अवलाद" का मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

का दिल न दुखे। बाबुल मदीना कराची के इस्लामी भाई का बयान है कि हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی ख़िलाफ़े मिज़ाज काम हो जाने पर गुस्सा नहीं करते थे बल्कि बड़ी शफ़्क़त से समझाया करते थे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मोमिन की शान का बयान ब ज़बाने क़ुरआन

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारे **हाजी ज़म ज़म** कितने भले इन्सान थे और किस अहसन अन्दाज़ में **गुस्से का इलाज** फ़रमा लिया करते थे। दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकत से इन्हें मा'लूम था कि अपने नफ़्स के वासिते **गुस्सा** कर के मद्दे मुक़ाबिल पर चढ़ाई करने में भलाई नहीं है बल्कि गुस्सा पीने वाले फ़ाइदे में रहते हैं। पारह 4 सूरए आले इमरान की आयत 134 में इरशादे बारी तआला है :

وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَ اللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۚ﴿۱۳۴﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और गुस्सा पीने वाले और लोगों से दर गुज़र करने वाले और नेक लोग अल्लाह के महबूब हैं।*

गुस्सा रोकने की फ़ज़ीलत

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बिशारत निशान है : जो शख़्स अपने **गुस्से** को रोकेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के रोज़ उस से अपना अज़ाब रोक देगा। (شعب الایمان ٦/٣١٥ حدیث ٨٣١١)

www.dawateislami.net

गुस्सा पीने वाले के लिये जन्नती हूर

हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने **गुस्से** को ज़ब्त कर लिया हालांकि वोह इसे नाफ़िज़ करने पर क़ादिर था तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उस को तमाम मख़्लूक़ के सामने बुलाएगा और इख़्तियार देगा कि जिस हूर को चाहे ले ले। (سنن ابی داوٗد، ٤/٣٢٥ حديث ٤٧٧٧)

हुस्ने अख़्लाक़ और नर्मी दो
दूर हो ख़ूए इश्तिआल (1) आक़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 359)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(5) बच्चों की अम्मी का शुक्रिया अदा किया

हाजी ज़म ज़म रज़ा अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى बीमारी की वजह से बाबुल मदीना कराची और हैदराबाद के अस्पतालों में दाख़िल रहे जहां इन के बच्चों की अम्मी भी इन की देख भाल के लिये अकषर मौजूद रहीं, जब इन की तबीअत ज़रा संभली तो इन का शुक्रिया इन अल्फ़ाज़ में अदा किया :

"आप ने मेरी ख़िदमत में कमाल कर दिया है!!!"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 : ख़ूए इश्तिआल या'नी गुस्से की आदत

www.dawateislami.net

लोगों का शुक्र अदा करने की अहम्मिय्यत

दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : जो लोगों का शुक्र अदा नहीं करता वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र गुज़ार नहीं हो सकता।

(سنن ابی داؤد،کتاب الادب،باب فی شکر المعروف،ج٤، الحدیث:٤٨١١،ص٣٣٥)

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان इस हदीषे पाक के तहत फ़रमाते हैं : سُبْحٰنَ اللّٰه कितना आली मक़ाम है, बन्दों का ना शुक्रा रब का भी ना शुक्रा यक़ीनन होता है, बन्दे का शुक्रिया हर तरह का चाहिये, दिली, ज़बानी, अमली, यूं ही रब का शुक्रिया भी हर क़िस्म का करे, बन्दों में मां बाप का शुक्रिया और है ! उस्ताद का शुक्रिया कुछ और ! शैख़, बादशाह का शुक्रिया कुछ और !

(मिरआतुल मनाजीह 4/357)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(6) सब से पहले वालिदए मोहतरमा की ज़ियारत करते

मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी मुहम्मद अजमल अत्तारी (मर्कज़ुल औलिया लाहोर) का बयान है कि महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی ने एक बार मुझे बताया : मेरी आदत है कि घर पहुंचते ही सब से पहले वालिदए मोहतरमा की ख़िदमत में हाज़िरी देता हूं, उन्हें सलाम कर के क़दम बोसी करने के बा'द दीगर काम करता हूं यहां तक कि घर दाख़िल होते ही घर के अफ़राद से पहला सुवाल येह करता

हूं कि "अम्मी कहां हैं ?" वोह जहां बताएं फ़ौरन उन की ख़िदमत में हाज़िरी दे कर फिर दीगर अफ़राद से मिलता हूं।

(7) वालिदा की क़दम बोसी की मुन्फ़रिद हिकायत

हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के वालिद साहिब तो इन के बचपन में ही वफ़ात पा चुके थे अलबत्ता वालिदए मोहतरमा हयात थीं। मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी मुहम्मद अजमल अत्तारी (मर्कजुल औलिया लाहोर) का बयान है कि हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने तहदीषे ने'मत के तौर पर एक बार बताया कि जब मुझे सफ़रे हज पर जाना था और तक़रीबन डेढ़ महीना घर से बाहर रहना था तो मैं ने घर से रवाना होने से पहले एडवान्स में पचास साठ मरतबा वालिदा के क़दम इस तरह चूमे कि वोह सीढ़ियों में बैठी थीं और मैं उन के क़दम चूमता रहा। जब बाबुल मदीना बापाजान की ख़िदमत में हाज़िरी हुई और आप को येह बात पता चली तो बहुत ही ज़ियादा शफ़्क़त व ख़ुशी का इज़्हार फ़रमाया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

रोज़ाना जन्नत की चोखट चूमिये

जिन ख़ुश नसीबों के मां बाप ज़िन्दा हैं उन को चाहिये कि रोज़ाना कम अज़ कम एक बार इन के हाथ पाऊं ज़रूर चूमा करें। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द 3 ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 445 पर है :

www.dawateislami.net

वालिदा के क़दम को बोसा भी दे सकता है, ह़दीष में है : जिस ने अपनी वालिदा का पाऊं चूमा, तो ऐसा है जैसे जन्नत की चोखट (या'नी दरवाज़े) को बोसा दिया।" (دُرِّمُختار۹/۶۰۶)

यक़ीनन मां की ता'ज़ीम का बड़ा दरजा है।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : اَلْجَنَّةُ تَحْتَ اَقْدَامِ الْاُمَّهَاتِ या'नी जन्नत माओं के क़दमों के नीचे है। (الجامع الصغير،ص ۲۲۱،حديث:۳۶۴۲)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى इस ह़दीषे पाक के तह़्त "**फ़ैज़ुल क़दीर**" में तह़रीर फ़रमाते हैं : या'नी इन के लिये तवाज़ोअ़ करना और इन को राज़ी रखना जन्नत में दाख़िले का सबब है।" (فيضُ القدير ۳/۴۷۷تحتَ الحديث: ۳۶۴۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(8) वालिदा की इत़ाअ़त की

मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी अबू रजब मुह़म्मद आसिफ़ अ़त्तारी मदनी का बयान है की ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى के विसाल से तक़रीबन सात आठ बरस पहले की बात है कि इन्हों ने मदनी कामों के सिलसिले में बाबुल मदीना कराची में रिहाइश रखने की तरकीब बनाई जिस के लिये मकान भी देख लिया गया, लेकिन इन की वालिदा ने इन्हें ह़ैदराबाद से कराची मुन्तक़िल होने से मन्अ़ कर दिया तो इन्हों ने वालिदा की इत़ाअ़त की और बाबुल मदीना कराची में रिहाइश इख़्तियार नहीं की।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मां के ह़क़ की अहम्मिय्यत

एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे हुस्ने सुलूक का सब से ज़ियादा ह़क़दार कौन है ? इरशाद फ़रमाया : तुम्हारी मां। अ़र्ज़ की : फिर कौन ? फ़रमाया : तुम्हारी मां। अ़र्ज़ की : फिर कौन ? फ़रमाया : तुम्हारी मां। अ़र्ज़ की : फिर कौन : इरशाद फ़रमाया : तुम्हारे वालिद।

(صحیح البخاری،کتاب الأدب، باب من أحق الناس بحسن الصحبة، ٤/٩٣،الحديث:٥٩٧١)

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : या'नी एह़सान करने में मां का मर्तबा बाप से भी तीन दरजा बुलन्द है। (बहारे शरीअ़त, 3/551)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(9) मदनी माह़ोल से कैसे वाबस्ता हुए ?

मदनी चैनल के सिलसिले **"खुले आंख सल्ले अ़ला कहते कहते"** में ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی ने अपने दा'वते इस्लामी से वाबस्ता होने के बारे में कुछ यूं बयान किया था : बचपन से ही मेरी त़बीअ़त में शरारती पन बहुत था। शुऊ़र आने के बा'द से येह ह़ाल था कि गलियों में निकल जाते और ढून्डते रहते कि शरारत का कोई मौक़अ़ मिले। जैसी मेरी त़बीअ़त थी वैसे ही दोस्त थे। रात को जो लोग सड़क पर चारपाई बिछा कर सोते थे उन को उठा कर बीच रोड में रख देते। लोगों के घरों का दरवाज़ा बजा कर छुप जाना, डरावना मास्क पहन कर लोगों को डराना। शुरूअ़ से मेरी

www.dawateislami.net

तबीअत खुश तबई, मज़ाक़ मस्ख़री करने वाली रही है। मेरे दोस्त मेरा इन्तिज़ार करते थे कि अभी येह आएंगे तो सब को हंसाएंगे, हंसते हंसते कोई यहां गिरेगा तो कोई वहां ! एक दूसरे पर होटिंग करना, शरारतों की प्लानिंग करना, मिल कर होटलों पर खाने के लिये जाना और पैसे होने के बा वुजूद भागने की कोशिश करना। गोया एक अजीब क़िस्म की दुन्या में ज़िन्दगी गुज़र रही थी और कुछ पता ही न चलता था, आंखें बिल्कुल बन्द थीं। नमाज़ का कोई ख़ास एहतिमाम न था, कभी कभार पढ़ ली तो पढ़ ली वरना नहीं (अल्लाह तआला मुआफ़ फ़रमाए)। इन सब चीज़ों के बा वुजूद सुन्नी उ-लमा की तक़रीरें सुनने की सआदत मिलती थी और येह ज़ेहन बना हुवा था कि मुरीद बनना चाहिये, दिल इस जुस्तजू में था कि कोई पीरे कामिल मिले तो उस का मुरीद बनूं। इसी तरह मेरी ज़िन्दगी के बीस इक्कीस साल गुज़र गए। मैं ने शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का नाम सुन रखा था। एक बार आप हैदराबाद तशरीफ़ लाए तो मुझे किसी ने बताया कि हम मुलाक़ात के लिये जा रहे हैं आप भी चलें, मैं ने कहा : चलो चल कर देखते हैं। उस वक़्त मैं ने पेन्ट शर्ट पहन रखी थी और क्लीन शेव था। एक ज़ेहन था कि कोई ऐसी शख़्सिय्यत होगी जिस ने हज़ारों रूपे का इमामा पहन रखा होगा और ख़ूबसूरत लिबास होगा। जब मैं वहां पहुंचा तो हैरान रह गया कि बिल्कुल सादा लिबास में मल्बूस शख़्सिय्यत मौजूद है। मैं मुलाक़ात के लिये क़तार में लग गया, बारी आने पर हाथ मिलाते हुए जूं ही नज़र उठाई तो एक मुस्कुराता हुवा चेहरा मेरे

सामने था। न जाने ऐसा क्या हुवा कि मुझ पर रिक़्क़त त़ारी हो गई। मुख़्तसर मुलाक़ात के बा'द मैं अलग हो गया, ग़ालिबन येह 6 रजबुल मुरज्जब सि. 1405 हि. की बात है। फिर किसी ने मुरीद बनने की तरग़ीब दिलाई और बैअ़त का ए'लान हुवा तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे गुनाहों से तौबा कर के **अ़त्तारी** बनने की सआ़दत ह़ासिल हुई। उसी वक़्त मैं ने दाढ़ी की निय्यत कर ली और गाहे बगाहे इजतिमाआ़त में शिर्कत करने लगा। इस त़रह़ मदनी माह़ोल से वाबस्तगी नसीब हुई लेकिन अफ़्सोस ! येह ज़ियादा अ़र्से बर क़रार न रह सकी क्यूंकि मैं ने अपने पुराने दोस्तों की सोह़बत नहीं छोड़ी थी। बद क़िस्मती से इसी दौरान मुझे येह शौक़ चढ़ा कि अब मुझे अदाकारी करनी है, **गाने** गाने हैं, लत़ीफ़े सुनाने हैं। मैं मिज़ाहिय्या स्टेज ड्रामों की केसिटें सुनता और अपनी आवाज़ में इन की नक़्ल तय्यार करता। किसी टी वी आरटिस्ट का पता चलता तो उस से मिलने चला जाता और फ़रमाइश करता कि मेरे लिये कोशिश करो कि मुझे टी वी में आने का मौक़अ़ मिल जाए। इसी त़रह़ एक स्टेज प्रोडयूसर से मुलाक़ात हुई और उन्हों ने मेरा शौक़ देखा तो मुझे काम करने की ऑफ़र की। यूं मैं बद क़िस्मती से उस त़रफ़ चला गया और एक अ़र्से तक स्टेज ड्रामे और फ़ंकशन्ज़ वग़ैरा करता रहा। इसी त़रह़ कमो बेश चार पांच साल का अ़र्सा गुज़र गया। ग़ालिबन 1989 ई. में, मैं मर्कज़ुल औलिया लाहोर में होने वाले इजतिमाअ़ में शिर्कत के लिये ह़ाज़िर हुवा। वैसे तो पहली मुलाक़ात के बा'द ही मेरे दिल में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मह़ब्बत पैदा हो गई थी। इन पांच सालों के

दौरान मैं कभी कभी इजतिमाअ़ में जाता था लेकिन अमीरे अहले सुन्नत की बारगाह में बार बार जाता रहता और छुप छुप कर ज़ियारत करता रहता। जब मैं मदनी माहोल से दूर हुवा था तो एक अ़जीब कैफ़िय्यत थी और बे बसी सी महसूस होती थी। दिल बहुत चाहता था कि मैं इस त़रफ़ चला आउं मगर दुन्या की रंगीनी मुझे खींच कर रखती थी। एक दफ़अ़ हम दोस्तों ने रात भर फ़िल्में देखीं। जब मैं बाहर निकला तो लोग नमाज़े फ़ज्र के लिये जा रहे थे। मेरे पीर की तवज्जोह से मुझे एह़सास हुवा की येह मैं क्या कर रहा हूं ! बहर ह़ाल जब मर्कज़ुल औलिया लाहोर इजतिमाअ़ में ह़ाज़िर हुवा तो इनफ़िरादी कोशिश करने वाले एक मुबल्लिग़ ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मेरी मुलाक़ात और तआ़रूफ़ करवाया कि येह **जावीद भाई** हैं। शायद पहली मुलाक़ात के पांच या छे साल बा'द बा क़ाइदा त़ौर पर येह मुलाक़ात हुई थी लेकिन आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मुझे देखते ही फ़रमाया की येह तो बहुत पुराने हैं, एकटिव (active या'नी फ़अ़ूआ़ल) अब हुए हैं। उस वक़्त मैं हलकी हलकी शेव बढ़ा चुका था, आप ने तरग़ीब दिला कर मुझे दाढ़ी की निय्यत करवाई, اَلْحَمْدُ لِلّٰه इस त़रह़ एक वलिय्ये कामिल की नज़र से मुझे मदनी माहोल नसीब हुवा। (सिलसिला "खुले आंख सल्ले अ़ला कहते कहते" 5 मुह़र्रमुल ह़राम 1432 हि. ब मुत़ाबिक़ 12 दिसम्बर 2010 ई. बित्तसर्रुफ़)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी में ज़िम्मेदारियों की तफ़्सील

हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡبَارِى ने दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता होने के बा'द हैदराबाद में अपने अलाके "हीराबाद" की मस्जिद में मदनी काम शुरूअ किया, फिर तवील अर्सा अलाका "**चल मदीना**" के अलाकाई निगरान रहे, फिर ज़म ज़म नगर (हैदराबाद) में चार ज़िम्मेदार बराए कारकर्दगी मुक़र्रर किये गए थे जिन में से एक हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡبَارِى थे। **मर्कज़ी मजलिसे शूरा** बनने से पहले ही येह "**मदनी इन्आमात**" की तरग़ीब व तर्बिय्यत के लिये मुख़्तलिफ़ अलाक़ों और शहरों में जाया करते थे। सि. 2002 ई. में इन्हें बाबुल इस्लाम (सिन्ध) की मुशावरत का रुक्न बनाया गया था, फिर मर्कज़ी मजलिसे शूरा के तह्त पाकिस्तान इन्तिज़ामी काबीना बनी तो येह भी इस के रुक्न बने और 15 रमज़ानुल मुबारक सि. 1425 हि. ब मुताबिक़ 30 अकतूबर सि. 2004 ई. को मर्कज़ी मजलिसे शूरा के रुक्न बने और ता दमे आख़िर रुक्ने शूरा रहे।

صَلُّوا عَلَى الۡحَبِيۡب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

महबूबे अत्तार की तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारियां

हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡبَارِى के पास (1) मदनी इन्आमात (2) लंगरे रसाइल (3) ख़ुसूसी या'नी गूंगे बहरे इस्लामी भाइयों (4) मक्तूबातो ता'वीज़ाते अत्तारिया की शूरा की तरफ़ से आलमी सत्ह पर ज़िम्मेदारी थी, इस के

www.dawateislami.net

इलावा येह (1) इस्लामी बहनों के मदनी कामों (2) रुक्ने मजलिसे बैरूने मुल्क, (3) मजलिसे इजराए कुतुबो रसाइल (इल्मिय्या) और (4) मदनी बहारों वग़ैरा के भी ज़िम्मेदार रहे हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(10) महबूबे अत्तार की अपने पीरो मुर्शिद से अक़ीदत

हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی को अपने पीरो मुर्शिद पन्दरहवीं सदी की अज़ीम इल्मी व रूहानी शख़्सिय्यत **शैख़े तरीक़त,** अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ से बहुत बहुत बहुत अक़ीदत व महब्बत थी। बापा का पैग़ाम इन के लिये गोया हर्फ़े आख़िर होता था, इस पर बिला चूनो चरा के अमल किया करते थे। ज़म ज़म नगर (हैदराबाद, बाबुल इस्लाम सिन्ध पाकिस्तान) में तवील अर्से तक हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی के महल्ले में रहने वाले इस्लामी भाई मुहम्मद अनीस अत्तारी के बयान का लुब्बे लुबाब है कि तक़रीबन 20 बरस पहले भी महबूबे अत्तार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की अपने मुर्शिद अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ से महब्बत का येह आलम था कि जब येह इश्क़े मुर्शिद में आंसू बहाते तो हम डर जाते कि कहीं इन को कुछ हो न जाए, इसी तरह येह कोई मन्क़बते अत्तार लिखते

www.dawateislami.net

तो मेरे पास आते कि इसे तर्ज़ में पढ़ो, जब मैं पढ़ता तो येह आंसू बहाया करते थे, मदनी इन्आ़मात के बारे में हमें लगता कि इन पर अ़मल करना बहुत दुश्वार है लेकिन येह मर्दे क़लन्दर मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करने और इन की तरग़ीब देने में लगे रहते । बापा (या'नी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه) से इन की अ़क़ीदत गोया पथ्थर पर लकीर थी, इन की कैफ़िय्यत येह होती थी कि अगर मैं बापा के फ़रमान पर अ़मल न कर सका तो मर जाऊंगा । बहुत पहले की बात है कि बापा की जानिब से इस्लामी भाइयों को ग़ालिबन इस त़रह़ ताकीद की गई की रात बारह बजे से पहले घर पहुंच जाया करें तो मैं ने कई मरतबा देखा कि येह किसी जगह भी मौजूद होते लेकिन वहां से घड़ी का टाइम देख कर चल पड़ते और ठीक बारह बजे अपने घर में होते । इन का जज़्बा था कि मैं हर इस्लामी भाई को अपने पीरो मुर्शिद **शैख़े त़रीक़त,** अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुरीद करवा दूं, चुनान्चे जिस से एक दो मिनट के लिये रास्ते में भी मुलाक़ात होती तो उसे मुरीदे अ़त्तार बनने की तरग़ीब दे कर उस का नाम बैअ़त करवाने के लिये लिख लिया करते थे । इन से तअ़ल्लुक़ रखने वालों, रिश्तेदारों, दोस्त अह़बाब में शायद ही कोई ऐसा हो जो अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुरीद न हो । मेरा गुमान है कि इनफ़िरादी कोशिश से जिन्हों ने सब से ज़ियादा अ़त्तारी बनाए होंगे उन सब में ज़म ज़म भाई का पहला नम्बर होगा ।

www.dawateislami.net

(11) छुप छुप कर ज़ियारत किया करते

इसी इस्लामी भाई का मज़ीद बयान है कि बरसों पहले की बात है की महबूबे अ़त्तार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار हैदराबाद से क़ाफ़िले की सूरत में **शैखे़ त़रीक़त,** अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुलाक़ात के लिये आया करते थे लेकिन अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के सामने बैठने वाले इस्लामी भाइयों में तशरीफ़ फ़रमा नहीं होते थे बल्कि हम इन को ढूंडते तो येह किसी सुतून के पीछे बड़े बा अदब अन्दाज़ में खड़े होते और छुप छुप कर शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ियारत किया करते। इन के साथ रहने वाला भी बापा का आ़शिक़ बन जाता था, येह गोया उस को इ़श्के़ मुर्शिद घोल कर पिला दिया करते थे। मेरा हुस्ने ज़न है कि इन को येह बुलन्द मक़ाम मुर्शिद से महब्बत के सदक़े में मिला है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(12) ईदें और बड़ी रातें बापा की सोह़बत में गुज़ारते

ह़ाजी ज़म ज़म रज़ा अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی को शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बत में रहने की बड़ी तमन्ना होती थी चुनान्चे येह ईदुल फ़ित्र, ईदुल अज़्ह़ा बापा के साथ गुज़ारते, रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ में बापा के साथ जश्ने विलादत मनाते और **जुलूसे मीलाद** में शरीक होते, शबे बराअत, शबे मे'राज और 26 रमज़ान को बापा के यौमे विलादत पर येह उ़मूमन अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के कुर्ब की बरकतें लूटते थे। चुनान्चे मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी

www.dawateislami.net

व रुक्ने शूरा, हाजी अबू रज़ा, मुहम्मद अ़ली अ़त्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی का बयान है कि महबूबे अ़त्तार رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه की महब्बत में ऐसे फ़ना थे कि अकषर हम मिल कर एक साथ जदवल बनाते कि रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ आ रही है तो कौन कहां जुलूसे मीलाद में, इजतिमाए़ मीलाद में शिर्कत करेगा ? तो येह बड़ी आ़जिज़ी और सादगी के साथ मुझे फ़रमाते कि मेरा जितना चाहें जदवल बना दें, मुझ से जो चाहें काम ले लें लेकिन येह जो खुसूसी मवाक़ेअ़ हैं : ईदुल अज़्हा, ईदुल फ़ित्र, रबीउ़ल अव्वल शरीफ़, शबे बराअत, शबे क़द्र, शबे मे'राज वग़ैरा मुझे मेरे पीर के पास गुज़ारने दें, मैं बापा से दूर नहीं रह सकता। यहां तक कि बा'ज़ अवक़ात इन की त़बीअ़त ख़राब होती, बीमार होते, इन को बुख़ार होता तब भी येह बाबुल मदीना जा कर बापा के पास पड़े रहते, उठने की हिम्मत न होती लेकिन कहते : "बस बापा को देख देख कर मुझे सुकून मिलता रहेगा।" **अल्लाह** तआ़ला इन के सदक़े हमें भी इ़श्क़े मुर्शिद से हि़स्सा अ़ता फ़रमा दे और इन के दरजात बुलन्द फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(13) चेहरा खिल उठता

रुक्ने शूरा हाजी अबू रज़ा मुहम्मद अ़ली अ़त्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی मज़ीद कुछ यूं फ़रमाते हैं कि मरज़ुल मौत में जब **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی की इयादत के लिये तशरीफ़ लाते तो इन का चेहरा खिल उठता, कैसी ही गहरी नींद में होते जब साथ मौजूद इस्लामी भाई इन को आगाह करते तो येह फ़ौरन आंख

खोल देते थे । येह ऐसे आ़शिक़े अ़त्तार थे कि **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के आने के बा'द इन की त़बीअ़त में नुमायां तब्दीली मह़सूस होती, ब्लड प्रेशर कम होता तो पूरा हो जाता, जिस्म में नक़ाहत की जगह तुवानाई आ जाती । एक मरतबा बाबुल मदीना कराची के अस्पताल से इन को सुब्ह़ के वक़्त छुट्टी मिलनी थी । रात के वक़्त मैं मदनी मश्वरे में था तो निस्फ़ शब (या'नी आधी रात) से ले कर फ़ज्र तक इन के बार बार दीवानगी भरे फ़ोन और S.M.S. आए कि मेरी बापा से बात करा दो, सुब्ह़ अस्पताल से छुट्टी मिल जाएगी, मैं बापा से इजाज़त लिये बिग़ैर किस त़रह़ हैदराबाद जाऊंगा ! मदनी मश्वरे में मसरूफ़िय्यत की वजह से मैं ने इन से अ़र्ज़ भी की, कि मैं फ़ारिग़ होते ही आप से बात करवाने की कोशिश करता हूं, आप आराम कर लीजिये और सो जाइये, मगर इन की बे क़रारी कम नहीं हुई ।

***अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो ।*

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मदनी हुल्ये में रहा करते

ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی अपने पीरो मुर्शिद शैखे़ त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के पसन्दीदा मदनी हुल्ये में रहा करते थे । इस्लामी भाइयों के मदनी हुल्ये में येह चीजे़ं शामिल हैं : **दाढ़ी**, ज़ुल्फे़ं, सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ (सब्ज़ रंग गहरा या'नी Dark न हो) कली वाला सफे़द कुर्ता सुन्नत के मुत़ाबिक़ आधी पिन्डली तक

लम्बा, आस्तीनें एक बालिश्त चोड़ी, सीने पर दिल की जानिब वाली जैब में मिस्वाक, पाजामा या शलवार टख़्नों से ऊपर। (सर पर सफ़ेद चादर और पर्दे में पर्दा करने के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करते हुए कथ्थई चादर भी साथ रहे तो **मदीना मदीना** !)

(163 मदनी फूल स. 23)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

(14) इ़ल्मे दीन सीखने का जज़्बा

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के रुक्न अबू रजब मुह़म्मद आसिफ़ अ़त्तारी मदनी का बयान है कि ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللهِ الْبَارِی को इ़ल्मे दीन सीखने का बहुत बहुत बहुत जज़्बा था, किताबों का मुत़ालआ़ करते, बापा के मदनी मुज़ाकरों में शरीक होते, उ़-लमाए किराम व मुफ़्तियाने उ़ज़्ज़ाम से ज़रूरतन शरई रहनुमाई लेते रहते। जब जुमादल उख़रा सि. 1432 हि. ब मुत़ाबिक़ जून 2012 ई. में दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में 63 दिन का "**फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स**" करवाया गया तो महबूबे अ़त्तार ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللهِ الْبَارِی भी इस में शरीक हुए थे, अहम मवाद डायरी में नोट करते और दीगर इस्लामी भाइयों का भी कुछ यूं ज़ेहन बनाते कि देखिये यहां वोह उ़लूम सिखाए जा रहे हैं कि हर एक को अपने ह़ाल के मुत़ाबिक़ जिन का सीखना फ़र्ज़ है वरना बरोज़े क़ियामत सख़्त रुस्वाई का सामना हो सकता है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

www.dawateislami.net

(15) मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत का शौक़

इन्ही मदनी इस्लामी भाई का बयान है : बीमारी के दौरान मेरी कई मरतबा महबूबे अत्तार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار से फ़ोन पर बात हुई तो फ़रमाते कि दुआ कीजिये कि तबीअत इतनी तो ठीक हो जाए कि मैं अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के "**मदनी मुज़ाकरे**" में शिर्कत के लिये पहुंच सकूं, कई मरतबा तो तबीअत नासाज़ होने के बा वुजूद हैदराबाद से सफ़र कर के बाबुल मदीना मदनी मुज़ाकरे में पहुंच जाया करते थे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(16) मदनी चैनल पर मदनी मुज़ाकरा देखने का अन्दाज़

हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के एक रिश्तेदार का बयान कुछ यूं है कि कई मरतबा ऐसा हुवा कि मैं महबूबे अत्तार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار से मिलने इन के घर पहुंचा तो येह दो ज़ानू बैठे अदब से हाथ बांध कर मदनी चैनल पर मदनी मुज़ाकरा मुलाहज़ा कर रहे होते, अल ग़रज़ उस वक़्त भी इन का अन्दाज़ ऐसा होता था कि गोया येह **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में हाज़िर हैं।

मदनी मुज़ाकरे की क्या बात है !

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात और इल्मो हिक्मत से मा'मूर "**मदनी मुज़ाकरात**" के ज़रीए कुछ ही

www.dawateislami.net

अर्से में लाखों मुसलमानों के दिलों में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोहबत दर हक़ीक़त बहुत बड़ी ने'मत है, आप دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोहबत से फ़ाइदा उठाते हुए कषीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले "**मदनी मुज़ाकरात**" में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मषलन अक़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअ़तो त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व तिब्ब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, मआ़शी व मआ़शरती व तन्ज़ीमी मुआ़मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त के मुतअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें हिक्मत आमोज़ व इश्क़े रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते और ह़स्बे आ़दत वक़्तन फ़ वक़्तन "صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !" की दिल नवाज़ सदा लगा कर ह़ाज़िरीन को दुरूद शरीफ़ पढ़ने की सआ़दत भी इनायत फ़रमाते हैं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह मुज़ाकरे **मदनी चैनल** पर बराहे रास्त भी नश्र किये जाते हैं इन "मदनी मुज़ाकरात" में शिर्कत करने वाले ख़ुश नसीबों को अ़क़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही عَزَّ وَجَلَّ व इश्क़े रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ न सिर्फ़ शरई, तिब्बी, तारीख़ी और तन्ज़ीमी मा'लूमात का ला ज़वाल ख़ज़ाना हाथ आता है बल्कि मज़ीद ह़ुसूले इल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होता है। मदनी मुज़ाकरे की बे शुमार बहारें हैं, बत़ौरे तरग़ीब सिर्फ़ दो मदनी बहारें पेश करता हूं।

﴾1﴿ मैं ने गुनाहों से तौबा कर ली

वोहकेन्ट (पंजाब) के इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि बहुत से नौजवानों की तरह मैं भी मुतअ़द्दिद अख़्लाक़ी बुराइयों में मुब्तला था। फ़िल्में ड्रामे देखना, खेल कूद में वक़्त बरबाद करना मेरा महबूब मश्ग़ला था। घर में मदनी चैनल चलने की बरकत से मदनी मुज़ाकरा देखने की सआ़दत नसीब हुई, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ पिछले गुनाहों से ताइब हो कर फ़राइज़ व वाजिबात का आ़मिल बनने के लिये कोशां हूं, चेहरे पर एक मुठ्ठी दाढ़ी मुबारका सजा ली है और मदनी हुल्या भी अपना लिया है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मज़ीद करम येह हुवा है कि वालिदैन ने ब ख़ुशी मुझे "**वक़्फ़े मदीना**" कर दिया है।

﴾2﴿ 200 मदनी मुज़ाकरे

पेशावर से एक इस्लामी बहन का बयान कुछ यूं है : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर मुझे **मदनी मुज़ाकरे** के कमो बेश 200 सिलसिले देखने की सआ़दत मिली है, जिन में बयान किये जाने वाले बा'ज़ मदनी फूल मैं ने नोट भी किये हैं। मदनी मुज़ाकरों की बरकत से मेरे दिल में मदनी इनक़िलाब बरपा हो गया और घर में भी मदनी माह़ोल क़ाइम हो गया है, इजतिमाआ़त में पाबन्दी से शरीक होने और मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के पहले दस दिन के अन्दर अन्दर जम्अ़ कराने का जज़्बा बेदार हुवा, मज़ीद करम येह हुवा कि मेरे वालिदे मोह़तरम दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बन गए हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(17) शदीद बीमारी में भी नमाज़ की फ़िक्र

ज़म ज़म नगर हैदराबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के इस्लामी भाई साजिद अ़त्तारी का बयान है कि मदनी इन्आ़मात के ताजदार عَلَيۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَفَّار का शदीद बीमारी में भी नमाज़ की हिफ़ाज़त का बहुत ही ज़ेह्न था। एक मरतबा मैं रात को इन की देख भाल के लिये अस्पताल में मौजूद था कि मुझ से फ़रमाया : मुझे फ़ज्र की नमाज़ में उठा दीजियेगा। मैं ने जब फ़ज्र में अज़ान के बा'द आप को आवाज़ दी तो एक ही आवाज़ पर उठ गए और मुझ से फ़रमाने लगे : "جَزَاكَ اللّٰهُ خَيۡرًا शुक्रिया बेटा ! आप ने मुझे नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाया।" मैं ने येह भी देखा कि शदीद बीमार होने के बा वुजूद कि आप से बैठा भी नहीं जाता था तो आप लैटे लैटे मिट्टी की प्लेट अपने सीने पर उलटी रख कर इस से **तयम्मुम** करते और इशारों से नमाज़ अदा कर लिया करते। मैं ने नहीं देखा कि हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡبَارِی की बीमारी के अन्दर होश व हवास के आ़लम में कोई नमाज़ छूटी हो।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الۡاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الۡحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

शदीद ज़ख़्मी हालत में नमाज़

हाजी ज़म ज़म عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡاَكۡرَم का बीमारी के आलम में भी नमाज़ की पाबन्दी करना हमें हमारे अकाबिरीन رَحِمَهُمُ اللهُ الۡمُبِيۡن की याद दिलाता है, तन्दुरुस्ती हो या बीमारी, बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الۡمُبِيۡن नमाज़ की पाबन्दी किया करते थे चुनान्चे जब हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡهُ पर क़ातिलाना हम्ला हुवा तो अर्ज़ की गई : **ऐ अमीरल मोअमिनीन ! नमाज़** (का वक़्त है) फ़रमाया : "जी हां, सुनिये ! जो शख़्स नमाज़ को ज़ाएअ़ करता है उस का इस्लाम में कोई हिस्सा नहीं।" फिर हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡهُ ने **शदीद ज़ख़्मी** होने के बा वुजूद **नमाज़** अदा फ़रमाई। (किताबुल कबाइर, स. 22)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الۡاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الۡحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तयम्मुम का इन्तिज़ाम कर लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर कभी दाख़िले अस्पताल होने की नौबत आए तो नमाज़ हरगिज़ न छोड़ी जाए, महबूबे अत्तार की पैरवी में ज़रूरतन तयम्मुम के लिये ईंट या कोरी मिट्टी की प्लेट वग़ैरा साथ ले ली जाए, नीज़ "**नमाज़ के अहकाम**" (मत़बूआ मक्तबतुल मदीना) भी साथ हो ताकि तयम्मुम का त़रीक़ा और सख़्त बीमारी में इशारे से नमाज़ पढ़ने

के अह्काम वग़ैरा की मा'लूमात हासिल की जा सकें। याद रहे ! मिट्टी की प्लेट पर किसी क़िस्म की ग़ैर मिट्टी मषलन कांच वग़ैरा की तह नहीं होनी चाहिये वरना तयम्मुम नहीं होगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالٰى علٰى محمّد

(18) सफ़र में भी नमाज़ों का ख़याल रखते

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) के रुक्न अबू रजब **मुहम्मद आसिफ़ अत्तारी** मदनी का बयान है कि हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى जब कभी ब ज़रीअए बस हैदराबाद से बाबुल मदीना कराची आते या वापस जाते तो अकषर ऐसे वक़्त का इन्तिख़ाब करते जिस में कोई नमाज़ रास्ते में न आए, क्यूंकि उ़मूमन ड्राईवर या कन्डक्टर हज़रात नमाज़ के लिये बस रोकने में हीलो हुज्जत करते हैं जिस से बड़ी आज़माइश होती है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّى الله تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالٰى علٰى محمّد

नमाज़ फ़र्ज़ है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हाजी ज़म ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की नमाज़ के बारे में कुढ़न मरहबा ! हमें भी हर हाल में नमाज़ का ध्यान रखना चाहिये। हर आ़क़िल–बालिग़ मुसलमान पर रोज़ाना पांच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ है। **अल्लाह** तबारक व तआ़ला पारह 2 सूरए बक़रह की आयत 238 में इरशाद फ़रमाता है :

حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۚ وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ﴿۲۳۸﴾

(پ۲،البقرۃ:۲۳۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : निगहबानी करो सब नमाज़ों और बीच की नमाज़ की और खड़े हो अल्लाह के हुज़ूर अदब से।

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى इस आयत के तह्त लिखते हैं : या'नी पंजगाना फ़र्ज़ नमाज़ों को उन के अवक़ात पर अरकान व शराइत़ के साथ अदा करते रहो इस में पांचों नमाज़ों की फ़र्ज़िय्यत का बयान है। (तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 81)

नमाज़ की अहम्मिय्यत का बयान

यक़ीनन नमाज़ की बड़ी फ़ज़ीलत व अहम्मिय्यत है क्यूंकि **नमाज़** दीन का सुतून है, **नमाज़ अल्लाह** तआ़ला की ख़ुश्नूदी का सबब है, नमाज़ बीमारियों से बचाती है। **नमाज़** दुआ़ओं की क़बूलिय्यत का सबब है, **नमाज़** से रोज़ी में बरकत होती है, **नमाज़** अन्धेरी क़ब्र का चराग़ है, **नमाज़** अ़ज़ाबे क़ब्र से बचाती है, **नमाज़** जन्नत की कुंजी है, **नमाज़** पुल सिरात़ के लिये आसानी है, **नमाज़** जहन्नम के अ़ज़ाब से बचाती है, **नमाज़** मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आंखों की ठंडक है। नमाज़ी को ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त नसीब होगी और नमाज़ी के लिये सब से बड़ी ने'मत येह है कि उसे बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** तआ़ला का दीदार होगा।

www.dawateislami.net

बे नमाज़ी का हौलनाक अन्जाम

जब कि बे नमाज़ी से **अल्लाह** तआ़ला नाराज़ होता है। जो जान बूझ कर एक नमाज़ छोड़ देता है उस का नाम जहन्नम के दरवाज़े पर लिख दिया जाता है। (حلیۃ الاولیاء، ۷/۲۹۹، الحدیث ۱۰۰۹۰) नमाज़ में सुस्ती करने वाले को क़ब्र इस त़रह़ दबाएगी कि उस की पस्लियां टूट-फूट कर एक दूसरे में पैवस्त हो जाएंगी, उस की क़ब्र में आग भड़का दी जाएगी और उस पर एक गंजा सांप **मुसल्लत़** कर दिया जाएगा नीज़ क़ियामत के रोज़ उस का ह़िसाब सख़्ती से लिया जाएगा। (قرۃ العیون معہ الروض الفائق، ص۳۸۳)

सर कुचलने की सज़ा

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया : आज रात दो शख़्स (या'नी जिब्राईल व मीकाईल علیہما السلام) मेरे पास आए और मुझे अर्ज़े मुक़द्दसा में ले आए। मैं ने देखा कि **एक शख़्स लैटा है और उस के सिरहाने एक शख़्स पथ्थर उठाए खड़ा है और पे दर पे पथ्थर से उस का सर कुचल रहा है, हर बार कुचलने बा'द सर फिर ठीक हो जाता है।** मैं ने उन फ़िरिश्तो से कहा : سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह कौन है? उन्हों ने अ़र्ज़ की : आगे तशरीफ़ ले चलिये। (मज़ीद मनाज़िर दिखाने के बा'द) फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ की : पहला शख़्स जो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने देखा (या'नी जिस का सर कुचला जा रहा था) **येह वोह था जिस ने कुरआन**

www.dawateislami.net

याद कर के छोड़ दिया था और फ़र्ज़ नमाज़ों के वक़्त सो जाने का आदी था। इस के साथ येह बरताव क़ियामत तक होगा। (صحیح البخاری،ج۱،ص۴۰۱،ص۴۶۷،۴۵۰ حدیث۱۳۸۶،۷۰۴۷،باختصار)

सियाह ख़च्चर नुमा बिच्छू

मन्क़ूल है, जहन्नम में एक वादी है जिस का नाम "लम लम" है, उस में ऊंट की गर्दन की त़रह **मोटे मोटे सांप** हैं, हर सांप की लम्बाई एक माह की मसाफ़त के बराबर है। जब येह सांप बे नमाज़ी को डंसेगा तो उस का ज़ह्र उस के जिस्म में **सत्तर साल** तक जोश मारता रहेगा और **जहन्नम** में एक वादी है जिस का नाम **"जब्बुल हुज़्न"** है उस में **काले ख़च्चर की मानिन्द बिच्छू** हैं। उस के सत्तर डंक हैं और हर डंक में ज़ह्र की थैली है। वोह **बिच्छू** जब **बे नमाज़ी** को डंक मारता है तो उस का ज़ह्र उस के सारे जिस्म में सरायत कर जाता है और उस ज़ह्र की गर्मी **एक हज़ार साल** तक रहती है। इस के बा'द उस की हड्डियों से गोश्त झड़ता है और उस की शर्मगाह से पीप बहने लगती है और तमाम जहन्नमी उस पर ला'नत भेजते हैं। (قُرَّةُ العُيُون معه الرَّوضُ الفائِق ص۳۸۵)

(19) मुत़ालए़ का शौक़

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बत की बरकत से मह़बूबे अ़त्तार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار को दीनी मुत़ालए़ का बहुत शग़फ़ (शौक़) था यहां तक कि अस्पताल में आख़िरी दिनों के अन्दर ज़रा त़बीअ़त संभली तो मक्तबतुल

मदीना की मत़बूआ़ किताब "**ह़सद**" (जो उन्ही दिनों पहली बार छप कर आई थी) से कुछ सफ़ह़ात का मुत़ालआ़ किया, फिर अफ़्सुर्दा हो कर अपने बच्चों की अम्मी से फ़रमाने लगे : "मज़ीद पढ़ने की मुझ में हिम्मत नहीं है।"

ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के विसाल के बा'द जब इस बात का इ़ल्म अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के उस मदनी इस्लामी भाई को हुवा जिन्हों ने येह किताब लिखी थी तो उन्हों ने इस किताब की तालीफ़ का षवाब महबूबे अ़त्तार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار को ईसाल कर दिया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(20) शदीद बीमारी में भी रिसाले का ब ग़ौ़र मुत़ालआ़ किया

जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने मदीना ज़म ज़म नगर ह़ैदराबाद के दौरए ह़दीष के त़ालिबुल इ़ल्म मुह़म्मद रज़ा अ़त्तारी जो अ़लाक़ाई सत़ह़ पर मदनी इन्आ़मात के ज़िम्मेदार भी हैं, इन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि **ज़ुल क़ा'दह** सि. 1433 हि. में अपने विसाल से कुछ दिन पहले मदनी इन्आ़मात के ताजदार, महबूबे अ़त्तार ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى बाबुल मदीना कराची के अस्पताल से छुट्टी मिलने पर अपने घर ह़ैदराबाद तशरीफ़ लाए तो मैं अपने वालिदे मोह़तरम रुक्ने शूरा ह़ाजी मुह़म्मद अ़ली अ़त्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى के हमराह इ़यादत के लिये ह़ाज़िर हुवा। उस वक़्त ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى बिस्तर पर लैटे हुए थे और शदीद अ़लालत और

www.dawateislami.net

नक़ाहत के आलम में थे। मैं आप के सिरहाने की तरफ़ बैठ गया, वहां शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का रिसाला **"क़सम के बारे में मदनी फूल"** रखा था, साथ ही पेन और हाई लाइटर (Highlighter या'नी निशान ज़द करने वाला क़लम) भी मौजूद था। बा'दे इजाज़त जब मैं ने उस रिसाले की वर्क़ गरदानी की तो मेरी हैरत की इन्तिहा न रही कि शदीद कमज़ोरी की हालत में भी हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی ने इस रिसाले को बग़ौर पढ़ा था और जगह जगह इबारतें निशान ज़द की हुई थीं और बा'ज़ मक़ामात पर पेन से अत्राफ़ में हाशिया भी लिखा हुवा था। इस पर मैं इन से मज़ीद मुतअष्षिर हुवा, **अल्लाह** तआला हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی के इल्मो अमल और इताअ़ते मुर्शिद व इताअ़ते मदनी मर्कज़ के जज़्बे में से मुझे भी हिस्सा अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अल्लाह *عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।* اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(21) नई कुतुबो रसाइल शाएअ़ होने पर बहुत ख़ुश होते

मजलिसे मक्तबतुल मदीना के ज़िम्मेदार ह़ाजी फ़य्याज अत्तारी का बयान है कि जब कभी मक्तबतुल मदीना से शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की नई किताब या रिसाला शाएअ़ होने की इन को ख़बर मिलती तो बहुत ज़ियादा ख़ुश होते और पहली फ़ुर्सत में उसे ह़ासिल करने की तगो-दो

किया करते । जब येह अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी रमज़ानुल मुबारक सि. 1433 हि. फ़ैज़ाने मदीना मुस्तश्फ़ा में बिस्तरे अलालत पर थे तो मैं ने इन्हें **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का नया रिसाला "**करामते शैरे ख़ुदा**" पेश किया तो ख़ुशी से झूम उठे और मेरा शुक्रिया अदा किया, इसी तरह **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का "**हुब्बे जाह**" के उन्वान पर पेम्फ़्लेट शाएअ हुवा तो वोह भी बड़े शौक़ से मुझ से हासिल किया और उस का मुतालआ किया । इसी तरह "मजलिसे तराजिम" के निगरान, रुक्ने शूरा, हाजी अबू मीलाद, बरकत अली अत्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی का बयान है कि **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की कुतुबो रसाइल का तर्जमा शाएअ होने पर उमूमन हमारी हौसला अफ़्ज़ाई फ़रमाया करते थे ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो ।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالىٰ علىٰ محمَّد

(22) किताबें पढ़ने की तरग़ीब दिलाया करते

कोट अत्तारी (कोटरी, बाबुल इस्लाम सिन्ध) के इस्लामी भाई मुहम्मद जुनैद अत्तारी का बयान है कि एक मरतबा बाबुल इस्लाम (सिन्ध) के शहर "मीरपूर ख़ास" मदनी मश्वरे में शिर्कत के लिये रुक्ने शूरा हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی के हमराह सफ़र की सआदत हासिल हुई । रवानगी के वक़्त उन्हों ने मक्तबतुल मदीना से "**क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत**" 26 अदद किताबें ख़रीद फ़रमाईं और मीरपूर ख़ास के मदनी मश्वरे के दौरान इस की ऐसी तरग़ीब

www.dawateislami.net

दिलाई कि वोह तमाम किताबें ज़िम्मेदारान ने (अस्ल क़ीमत दे कर) ख़रीद लीं, फिर हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने इन से वोह किताब पढ़ने का हदफ़ भी ले लिया।

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالى على محمَّد

ख़ामोश रहना एक त़रह की इबादत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़बान **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की अ़ता कर्दा ऐसी अ़ज़ीम ने'मत है जिस की ह़क़ीक़ी क़द्र वोही शख़्स जान सकता है जो कुव्वते गोयाई से मह़रूम (या'नी गूंगा) हो। ज़बान के ज़रीए़ अपनी आख़िरत संवारने के लिये नेकियों का ख़ज़ाना भी इकठ्ठा किया जा सकता है और इस के ग़लत़ इस्ति'माल की वजह से दुन्या व आख़िरत बरबाद भी हो सकती है। ख़ामोश रहना भी एक त़रह की इबादत और कारे षवाब है। अह़ादीषे मुबारका में ज़बान पर क़ाबू पाने के लिये ख़ामोशी की बहुत सी फ़ज़ीलतें बयान हुई हैं, सरे दस्त "चार यार' की निस्बत से **चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिये

﴾1﴿ اَلصَّمْتُ اَرْفَعُ الْعِبَادَةِ ख़ामोशी आ'ला दर्जे की इबादत है। (اَلْفِردَوس بمأثور الْخطاب ٢/٣٦، الحديث٣٦٦٥)

﴾2﴿ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا اَوْ لِيَصْمُتْ "जो **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि भलाई की बात करे या ख़ामोश रहे।" (بُخارى، ٤/١٠٥، الحديث٦٠١٨)

﴾3﴿ اَلصَّمْتُ سَيِّدُ الْاَخْلَاقِ ख़ामोशी अख़्लाक़ की सरदार है। (اَلْفِردَوس بمأثور الْخطاب، ٢/٣٦، الحديث٣٦٦٦)

﴾4﴿ आदमी का ख़ामोशी पर क़ाइम रहना 60 साल की इबादत से बेहतर है। (شُعَبُ الْاِيمان، ٤/٢٤٥، الحديث ٤٩٥٣)

www.dawateislami.net

"ख़ामोशी आ'ला दर्जे की इबादत है" की वज़ाहत

हज़रते अल्लामा अब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي पहली हदीषे पाक (ख़ामोशी आ'ला दरजे की इबादत है) के तह्त फ़रमाते हैं : क्यूंकि अकषर ख़ताएं ज़बान से सरज़द होती हैं, जब इन्सान ज़बान पर क़ाबू पा कर इस को ना जाइज़ बातों से रोक ले तो यक़ीनन वोह इबादत की एक अज़ीम क़िस्म में मसरूफ़ हो गया और येह ऐसी बात है जिस पर तमाम शरीअ़तें मुत्तफ़िक़ हैं। (فیض القدیر،ج٤،ص٣١٦)

ख़ामोशी के 60 साल की इबादत से बेहतर होने की वज़ाह़त

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان चौथी ह़दीषे पाक (आदमी का ख़ामोशी पर क़ाइम रहना 60 साल की इबादत से बेहतर है) के तह्त फ़रमाते हैं : या'नी अगर कोई शख़्स **साठ साल इबादत** करे मगर ज़ियादा बातें भी करे, अच्छी बुरी बात में तमीज़ न करे इस से येह बेहतर है कि थोड़ी देर ख़ामोश रहे क्यूंकि ख़ामोशी में फ़िक्र भी हुई, इस्लाहे़ नफ़्स भी, मआ़रिफ़ व ह़क़ाइक़ में इस्तिग़्राक़ भी, ज़िक्रे ख़फ़ी के समुन्दर में ग़ौता़ लगाना भी, मुराक़बा भी। (मिरआतुल मनाजीह़ 6/479 मुख़्तसरन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(23) लिख कर बात करने की आदत

ख़ामोशी पर क़ाइम रहने का एक त़रीक़ा येह भी है कि कुछ न कुछ गुफ़्त्गू इशारों में और लिख कर की जाए और येह अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का अ़त़ा कर्दा "**मदनी इन्आ़म**" भी है, महबूबे अ़त्तार ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى का **ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना** भी मदीना मदीना था, लिख कर बात करने के लिये मक्तबतुल मदीना का मत़्बूआ़ "**क़ुफ़्ले मदीना पेड**" इन की जैब में होता था। लिख कर बात करने का इन को बहुत ज़ियादा जज़्बा था, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه रमज़ानुल मुबारक (सि. 1433 हि.) के अवाइल (या'नी शुरूआ़त के दिनों) से ही बिस्तरे अ़लालत पर आ गए थे। आप के "क़ुफ़्ले मदीना पेड" पर 23 रमज़ानुल मुबारक सि. 1433 हि. तक की तारीख़ मौजूद है । इस के बा'द भी गाहे बगाहे लिख कर गुफ़्त्गू फ़रमाते रहे, चुनान्चे हैदराबाद के इस्लामी भाई का बयान है कि हम सुब्ह़ के वक़्त इन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो कागज़ क़लम त़लब किया और इस पर लिखा कि जिस इस्लामी भाई ने मुझे ख़ून दिया उस का बहुत बहुत शुक्रिया। (ख़ून की उलटियों वग़ैरा की वजह से शरई इजाज़त के तह़्त आप को बार बार ख़ून चढ़ाया गया और इस्लामी भाइयों ने इस में काफ़ी तआ़वुन किया था) इसी त़रह़ अस्पताल के अ़मले का बयान है कि "हमें भी कोई बात कहनी होती तो लिख कर फ़रमाते ह़ालांकि शदीद नक़ाहत (या'नी कमज़ोरी) के बाइ़ष लिखना बे ह़द दुश्वार होता।" ज़िन्दगी के आख़िरी अय्याम में बिस्तरे अ़लालत पर लिखी गई ऐसी ही एक तह़रीर का अ़क्स मुलाह़ज़ा कीजिये :

(जिस के अल्फ़ाज़ मुकम्मल समझ नहीं आ सके)

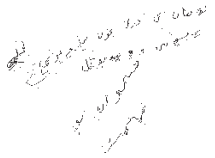

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।
اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(24) लिख कर बात करना कैसे शुरूअ़ किया

मदनी चैनल के सिलसिले "**खुले आंख सल्ले अ़ला कहते कहते**" में हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی ने कुछ इस त़रह़ बताया था कि मुझे याद है कि हमारे ह़ैदराबाद के मर्ह़ूम मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ह़ाजी या'क़ूब अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی बाबुल मदीना से वापस आए। मैं ने उन से कोई बात की तो उन्हों ने लिख कर इस का जवाब दिया, मैं फिर बोला तो उन्हों ने फिर लिख कर बात की, कई दफ़्आ़ इस त़रह़ हुवा तो मैं ने इन से पेड लिया और मैं ने भी लिख कर बात की, इस त़रह़ मैं ने पहली बार लिख कर बात की। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अब तो माहाना सेंकड़ों मरतबा लिख कर बात करने की सआ़दत ह़ासिल हो जाती है, गुज़श्ता महीने में तक़रीबन 747 मरतबा लिख कर बात की बल्कि कई दफ़्आ़ तो रोज़ाना भी 330 या 350 मरतबा तह़रीरी गुफ़्त्गू की सआ़दत मिली है। बताने का मक़्सद येह है कि लिख कर बात करना ना मुमकिन नहीं है। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने हमें जो मदनी इन्आ़म दिया है कि आज चार मरतबा लिख कर बात की या नहीं ? तो

आप का अपना आ़लम येह है कि कभी कभी कई दिन तक सख़्त ज़रूरत के इ़लावा बोलते ही नहीं हैं, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ख़ुद कहते हैं एक बार मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا से जुदाई के बा'द ज़बान पर ऐसा क़ुफ़्ले मदीना लगा कि तक़रीबन 15 दिन तक (सिवाए सलाम, जवाबे सलाम, छींक पर ह़म्द, छींकने वाले की ह़म्द पर जवाब वग़ैरा के) बोलने से बचा रहा। इतना ख़ामोश रहने और क़ुफ़्ले मदीना लगाने के बा'द हमें सिर्फ़ इतना इरशाद फ़रमाया है कि कम अज़ कम चार बार लिख कर बात कीजिये। मक्तबतुल मदीना ने एक "क़ुफ़्ले मदीना पेड" शाएअ़ किया है जिस में तह़रीरी गुफ़्तगू का त़रीक़ए कार भी लिखा हुवा है इसे ह़ासिल करें।

(सिलसिला "खुले आंख सल्ले अ़ला कहते कहते" बित्तग़य्युरे क़लील 5 मुह़र्रमुल ह़राम 1432 हि. ब मुत़ाबिक़ 12 दिसम्बर 2010 ई.)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

निगाहें नीची रखने की अहम्मिय्यत

मन्क़ूल है : जो शख़्स अपनी आंख को ह़राम से पुर करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उस की आंख में जहन्नम की आग भर देगा। (مُكاشَفَةُ الْقُلُوب ص ١٠)

अपनी आंखों को जहन्नम की आग से बचाने के लिये निगाहों की ह़िफ़ाज़त निहायत ज़रूरी है इस के लिये निगाहें नीची रखने की आ़दत बनाना बे ह़द मुफ़ीद है, चुनान्चे दा'वते

www.dawateislami.net

इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब "पर्दे के बारे में सुवाल जवाब" के सफ़ह़ा 312 पर इस सुवाल के जवाब में कि क्या गुफ़्तगू करते हुए नज़र नीची रखनी ज़रूरी है ? अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं कि इस की सूरतें हैं मषलन मर्द का मुख़ात़ब (या'नी जिस से बात कर रहे हैं वोह) अम्रद हो और उस को देखने से शहवत आती हो (या इजाज़ते शरइ से मर्द अजनबिय्या से या औ़रत अजनबी मर्द से बात कर रही हो) तो नज़र इस त़रह़ नीची रख कर गुफ़्तगू करे कि उस के चेहरे बल्कि बदन के किसी उ़ज़्व ह़त्ता कि लिबास पर भी नज़र न पड़े । अगर कोई मानेए़ शरई (या'नी शरई रुकावट) न हो तो मुख़ात़ब (या'नी जिस से बात कर रहा है उस) के चेहरे की त़रफ़ देख कर भी गुफ़्तगू करने में शरअ़न कोई ह़रज नहीं । अगर निगाहों की ह़िफ़ाज़त की आ़दत बनाने की निय्यत से हर एक से नीची नज़र किये बात करने का मा'मूल बनाए तो बहुत ही अच्छी बात है क्यूं कि मुशाहदा येही है कि फ़ी ज़माना जिस की नीची निगाहें रख कर गुफ़्तगू करने की आ़दत नहीं होती उसे जब अम्रद या अजनबिय्या से बात करने की नौबत आती है उस वक़्त नीची निगाहें रखना उस के लिये सख़्त दुश्वार होता है । (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 312)

(25) कुफ़्ले मदीना का ऐनक

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! निगाहें नीची रखने की आ़दत बनाने के लिये कुफ़्ले मदीना के ऐनक का इस्ति'माल बे ह़द मुफ़ीद है, मदनी इन्आ़मात के ताजदार, महबूबे अ़त्तार ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى गुनाहों से आंखों

www.dawateislami.net

की हिफ़ाज़त के लिये **कुफ़्ले मदीना ऐनक** का कषरत से इस्ति'माल करते थे ह़त्ता कि दौराने अ़लालत अस्पताल में भी कुफ़्ले मदीना ऐनक इस्ति'माल किया करते थे, इस के इलावा दूसरा ऐनक लगाने का मा'मूल ही नहीं था। येह ऐनक ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى ने पहली मरतबा कब और कैसे लगाई ? इस के बारे में इन्हों ने मदनी चैनल के सिलसिले **"खुले आंख सल्ले अ़ला कहते कहते"** में कुछ इस त़रह़ बताया था कि जब शुरूअ़ शुरूअ़ में मदनी इन्आ़मात आए थे तो इन में कुफ़्ले मदीना का ऐनक शामिल नहीं था। एक दफ़्अ़ जब रुक्ने शूरा ह़ाजी मुह़म्मद अ़ली अ़त्तारी बाबुल मदीना कराची से वापस आए तो मैं इन के पास ह़ाज़िर हुवा। येह उस वक़्त मेडीकल स्टोर पर बैठे हुए थे। उन्हों ने एक ऐनक पहना हुवा था जिस के ऊपरी ह़िस्से को पेन की सियाही से ब्लेक कर दिया था ताकि ऊपर से नज़र न आए। जब मैं ने देखा तो पूछा कि येह आप ने क्या पहना हुवा है ? कहने लगे कि इस से नज़रें झुकाने में मदद मिलती है। मैं ने कहा : लोग मज़ाक़ बनाएंगे, नज़रें तो वैसे भी झुका सकते हैं। उन्हों ने कहा कि एक इस्लामी भाई ऐसा ही ऐनक पहने हुए थे तो अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने बहुत पसन्द फ़रमाया था। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की पसन्द का सुन कर मेरा ज़ेहन बना कि येह काम करना चाहिये। वोह ऐनक इन्हों ने मुझे तोह़फ़े में दे दी। मैं ने उसे ऊपर से ग्रेइन्ड करवा लिया था, डेढ़ से दो साल वोह मेरे पास रहा और जब तक मेरी क़रीब की नज़र कम्ज़ोर नहीं हुई मैं ने उसे पाबन्दी से पहनने की कोशिश

की, सोते वक़्त और नमाज़ों के अवक़ात के इलावा तक़रीबन पूरा दिन में इसे पहनता था। बस एक ज़ेहन बन गया था कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इसे पसन्द फ़रमाते हैं तो **"पीर की पसन्द अपनी पसन्द।"**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(26) नर्सों की वजह से आंखें बन्द कर लेते

मुख़्तलिफ़ इस्लामी भाइयों का बयान है कि हम जब हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی को अस्पताल ले कर जाते तो वोह अकषर अपनी आंखें बन्द कर लिया करते थे और इस की वज़ाहत कुछ यूं फ़रमाते कि अस्पताल में नर्सें वग़ैरा होती हैं, मैं डरता हूं कहीं ऐसा न हो कि इन पर निगाह पड़े और इसी हालत में मेरी रूह परवाज़ कर जाए। रुक्ने शूरा हाजी अबू रज़ा मुहम्मद अली अत्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی का बयान है कि एक मरतबा मैं अस्पताल में इन की इयादत के लिये मौजूद था, इस दौरान मैं ने देखा कि येह बार बार आंखें बन्द कर रहे हैं। मैं समझा शायद इन को नींद आ रही है, चुनान्चे मैं ने इजाज़त चाही कि आप सो जाइये मैं चलता हूं, तो फ़रमाया : आप तशरीफ़ रखिये, मुझे नींद नहीं आ रही बल्कि नर्सों के सामने आने के अन्देशे पर आंखें बन्द कर लेता हूं ताकि इन पर निगाह न पड़े।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

(27) मतार पर निगाहों की हिफ़ाज़त

मजलिसे ता'वीज़ाते अत्तारिय्या के ज़िम्मेदार मुहम्मद अजमल अत्तारी (मर्कज़ुल औलिया लाहोर) का बयान कुछ यूं है कि मुझे नवम्बर सि. 1998 ई. में महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی की रफ़ाक़त में बाबुल मदीना से बम्बई सफ़र का मौक़अ़ मिला, सारा रास्ता इन्हों ने निगाहें झुका कर रखीं हालांकि जहाज़ में बे पर्दगी, फिर ऐरपोर्ट पर इमीग्रेशन के मुआमलात के वक़्त काउन्टर पर ख़वातीन से वासिता भी पड़ा लेकिन बम्बई ऐरपोर्ट से बाहर निकलने के बा'द इन्हों ने बतौरे तरग़ीब मुझ से फ़रमाया :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ बाबुल मदीना से यहां पहुंचने तक एक भी औरत पर मेरी नज़र नहीं पड़ी।

अल्लाह *عَزَّ وَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(28) आंखों पर सब्ज़ पट्टी बांध ली !

बाबुल मदीना कराची के इस्लामी भाई गुलाम शब्बीर अत्तारी का बयान है कि कुछ अर्से पहले दा'वते इस्लामी के आलमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में नाबीना इस्लामी भाइयों में मदनी काम करने का जज़्बा रखने वालों को मदनी कोर्स (जिस को मोबीलिटी कोर्स Mobility course कहते हैं) करवाया गया, जिस में **बीना** (या'नी अख़्यारे) इस्लामी भाइयों को **नाबीना** इस्लामी भाइयों का हाथ पकड़ कर किस तृरह चलना चाहिये, इन से बातचीत किस तृरह की जाए, इन पर

इनफ़िरादी कोशिश कैसे की जाए ? येह सारी बातें सिखाई जाती थीं। हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡبَارِی एक मरतबा हमारे दरजे के क़रीब से गुज़रे तो देखा कि **बीना** (या'नी देखने की सलाहिय्यत रखने वाले) इस्लामी भाइयों की आंखों पर भी पट्टियां बंधी हुई है। मैं उन को देख कर क़रीब आया तो दरयाफ़्त फ़रमाया कि आंखों पर पट्टी बांधने की क्या हिकमत है ? मैं ने अर्ज़ की : ताकि इन इस्लामी भाइयों को नाबीना इस्लामी भाइयों की मुश्किलात का इदराक हो सके। फ़रमाया : येह पट्टी तो **आंखों के कुफ़्ले मदीना** के लिये भी निहायत कार आमद है, मुझे ऐसी पट्टी चाहिये। मैं ने अपनी ज़ाती पट्टी पेश कर दी। फ़रमाने लगे : इस की क़ीमत आप को लेनी पड़ेगी। मैं ने बहुतेरा इन्कार किया मगर इन्हों ने फ़रमाया कि आप पैसे लेंगे तो ही मैं येह पट्टी लूंगा। मैं ने मजबूरन रक़म क़बूल कर ली। फिर हाजी ज़म ज़म ने हमारे दर्जे में अपनी आंखों पर पट्टी बांध कर बयान किया और नाबीना इस्लामी भाइयों की दिलजोई करते हुए फ़रमाया : मैं ने भी आंखों पर पट्टी बांध ली ताकि मुझे भी आप की मुश्किलात का एहसास हो सके।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदके़ हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(29) आंखों के कुफ़्ले मदीना की मश्क़ करवाया करते

ज़म ज़म नगर हैदराबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) से तअल्लुक़ रखने वाले मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी मुहम्मद नईम

अत्तारी का बयान कुछ यूं है कि तक़रीबन 18 साल पहले (ग़ालिबन सि. 1996 ई. में) मैं ने इन के साथ 30 दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र किया। पहले मर्कज़ुल औलिया लाहौर, फिर इस्लामाबाद और फिर गिलकित का सफ़र हुवा। दौराने सफ़र **मदनी इन्आमात** का इन में बड़ा जज़्बा देखा, आंखों के कुफ़्ले मदीना की हमें काफ़ी तरग़ीब देते थे और बा काइदा इस के लिये हमें मश्क़ करवाते थे। बाज़ार जाने से पहले फ़रमाते : "देखिये ! बाज़ार में उ़मूमन बद निगाही का सामान होता है, इस लिये पूरे रास्ते इस त़रह़ चलना है कि हमारी निगाहें सिर्फ़ एक गज़ के फ़ासिले पर हों।" यक़ीन मानिये ! जब हम बाज़ार का चक्कर लगा कर आते थे तो निगाहें झुकाने की वजह से हमारी गर्दनों में दर्द हो जाता था। ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى तसल्ली देते कि इस त़रह़ मश्क़ करने से जब आ़दत पड़ जाएगी तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दर्द नहीं होगा और बद निगाही से बचने में मदद मिलेगी।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

(30) जामिअ़तुल मदीना के त़ालिबुल इ़ल्म के तअ़ष्शुरात

जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने मदीना ज़म ज़म नगर ह़ैदराबाद के त़ालिबुल इ़ल्म मुह़म्मद इख़्तियार अत्तारी का बयान कुछ यूं है कि मेरी जब भी मदनी इन्आमात के ताजदार, महबूबे अत्तार

www.dawateislami.net

हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی से मुलाक़ात हुई तो इन की निगाहें नीची ही देखीं, गुफ़्तगू करते वक़्त भी इन की निगाहें नीची हुवा करती थीं, इन का येह अन्दाज़ देख कर मैं ने भी निय्यत की, कि मैं भी निगाहें नीची रखने की कोशिश करूंगा और **कुफ़्ले मदीना का ऐनक** लगाया करूंगा। फिर एक दिन आया कि मैं ने अपनी निय्यत पर अ़मल करते हुए कुफ़्ले मदीना ऐनक ख़रीदा और इस्ति'माल करना शुरूअ़ कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی के विसाल के बा'द मुझे ख़्वाब में दो मरतबा इन की ज़ियारत हुई है और वोह बहुत ख़ुश दिखाई दिये।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(31) नेकी की दा'वत के कार्ड सीने पर सजाया करते थे

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का मुसलमानों को नेकी की दा'वत पेश करने का जज़्बा मरह़बा! कि आप न सिर्फ़ अपने बयानात, मदनी मुज़ाकरों, इनफ़िरादी कोशिशों और तह़रीरों के ज़रीए़ नेकी की दा'वत आ़म करते हैं बल्कि वक़्तन फ़ वक़्तन नेकी की मुख़्तसर मगर जामेअ़ दा'वत पर मुश्तमिल सीने पर लगाने वाले मदनी कार्ड भी मुरत्तब फ़रमाते रहते हैं, येह कार्ड मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल किये जा सकते हैं, ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा अ़त्तारी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی का मा'मूल था कि वोह नेकी की दा'वत के येह

कार्ड (बदल बदल कर) अपने सीने पर सजाया करते थे, बल्कि अल मदीनतुल इल्मिय्या के इस्लामी भाई का बयान है कि जब भी कोई नया कार्ड मन्ज़रे आम पर आता तो हमें **महबूबे अत्तार** के सीन पर ज़रूर दिखाई देता। यूं येह चलते फिरते ख़ामोश रह कर भी कार्ड के ज़रीए **नेकी की दा'वत** दिया करते थे।

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

बारगाहे रिसालत में ग़ीबत कुश कार्ड की मक़्बूलिय्यत

बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई की तह़रीर का इक़्तिबास है : 18 शव्वालुल मुकर्रम सि. 1430 हि. ब मुताबिक़ 8 अक्तूबर, सि. 2009 ई. शबे जुमा'रात (या'नी बुध और जुमा'रात की दरमियानी रात) मैं ने ख़्वाब में **सरकारे मदीना** صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, कई सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان और सरकारे ग़ौषे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ की ज़ियारत की, एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी भी ह़ाज़िरे ख़िदमत थे, **ताजदारे रिसालत** صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इजाज़त से उस मुबल्लिग़ ने **ग़ीबत कुश कार्ड** ह़ाज़िरीन को पेश करना शुरूअ़ किये, अपने करमे ख़ास से गदायाने दर की दिलजोई की ख़ातिर एक कार्ड **सरकारे नामदार** صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी क़बूल फ़रमाया और अपने ग़ुलामों की हौसला अफ़्ज़ाई के लिये अपने मुबारक सीने पर सजा लिया।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की तरफ़ से **ग़ीबत के** ख़िलाफ़ ऐ'लाने जंग है और दा'वते इस्लामी का बच्चा बच्चा ना'रा लगाता है कि **ग़ीबत, करेंगे न सुनेंगे**। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना से आप भी "ग़ीबत कुश कार्ड" हासिल कीजिये और अपने सीने पर सजाइये। **ग़ीबत** करने सुनने से ख़ुद भी बचिये और दूसरों को भी बचाइये। **ग़ीबत** की दुन्यवी और उख़्वी ख़ौफ़नाक हलाकत ख़ैज़ियों से आगाही हासिल करने के लिये **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द 2 का बाब "**ग़ीबत की तबाह कारियां**" (सफ़हात 505) किताबी सूरत में मक्तबतुल मदीना से हासिल कर के पढ़िये और ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अश्क बहने दीजिये।

हमें ग़ीबतों से बचा या इलाही
बचा चुग़लियों से सदा या इलाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तहाइफ़ से नवाज़ते

घर पर जब कोई मिलने आता तो उस की दिलजोई की बहुत कोशिश फ़रमाते, लंगरे रसाइल और तहाइफ़ के बिग़ैर किसी को न जाने देते। घर में अकषर **बकरे की खाल** पर बैठने का मा'मूल था। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बकरे की खाल पर बैठने से आजिज़ी पैदा होती है और महबूबे अत्तार आजिज़ी के पैकर थे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(32) चटाई पर सोते थे

महबूबे अत्तार رَحْمَۃُاللہِ تعَالٰی عَلَیْہ **चटाई** पर सोने वाले मदनी इन्आम पर अमल करते हुए सफ़र और घर में हत्तल मक़दूर **चटाई** पर सोया करते थे, विसाल से कुछ अर्सा क़ब्ल येह इतने कमज़ोर हो गए थे कि हड्डियां नुमायां हो गईं थीं, इन की रीढ़ की हड्डी में भी तक्लीफ़ रहने लगी थी, इन के बच्चों की अम्मी इन से इसरार करतीं कि गदेले पर आराम कीजिये लेकिन इन की कोशिश होती थी कि ज़मीन पर चटाई बिछा कर आराम करें। "मदनी चैनल" के ज़िम्मेदार मुहम्मद असद अत्तारी मदनी से गुफ़्तगू करते हुए ख़ुद हाजी ज़म ज़म रज़ा अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی ने कुछ यूं फ़रमाया था : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरी शादी को तक़रीबन 17 साल हो गए हैं और हमारे घर में पलंग शुरूअ में था, पता चला कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ इसे अपने लिये पसन्द नहीं फ़रमाते (चुनान्चे इन्हों ने भी निकाल दिया), मदनी इन्आम है कि बिस्तर तह कर के रखें मगर पलंग का मोटा गद्दा तह कर के रखना दुशवार होता है।[1]

---

1 : हज़रते सय्यिदुना सफ़वान बिन सुलैम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं : "इन्सान के साज़ो सामान और मल्बूसात को जिन्नात इस्ति'माल करते हैं। लिहाज़ा तुम में से जब कोई शख़्स कपड़ा (पहनने के लिये) उठाए या (उतार कर) रखे तो "بِسْمِ اللّٰہِ" पढ़ लिया करे। इस के लिये अल्लाह तआला का नाम मुहर है।" (या'नी بِسْمِ اللّٰہِ पढ़ने से जिन्नात उन कपड़ों को इस्ति'माल नहीं करेंगे।) (لقط المرجان فی احکام الجان للسیوطی ص ١٦١)

www.dawateislami.net

मेरा चूंकि ऑपरेशन हुवा था इस लिये मजबूरी में फ़िल-हाल बेड की तरकीब बनानी पड़ी है येह थोड़े ही दिनों के लिये है, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इसे भी निकाल देंगे। इस के बा वुजूद मेरी सोने की जगह नीचे है, मैं यहीं सोता हूं क़िब्ला सिम्त करवट ले कर, येह सुन्नत बॉक्स भी होता है, साथ सिरहाने रखता हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

सोते वक़्त चेहरा क़िब्ले की त़रफ़ रखना सुन्नत है

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : सुन्नत यूं है कि **कुतुब** की त़रफ़ सर करे और सीधी करवट पर सोए कि सोने में भी मुंह का'बा को ही रहे।

(फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जि. 23 स. 385)

(33) क़िब्ला सम्त बैठने की कोशिश फ़रमाते

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उ़मूमन **क़िब्ला रू** बैठते थे। (اِحیاء العلوم ج ۲ ص ۴۴۹)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का अपने **मीठे मीठे आक़ा** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी में क़िब्ला रू बैठने का मा'मूल है और इन की सोह़बत की बरकत से महबूबे अ़त्तार ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَارِی भी अकषर क़िब्ला रू बैठा करते थे चुनान्चे मुबल्लिग़े दा'वते

www.dawateislami.net

इस्लामी अबू रजब मुहम्मद आसिफ़ अत्तारी मदनी का बयान है कि हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى तहरीरी काम के सिलसिले में अल मदीनतुल इल्मिय्या तशरीफ़ लाते तो क़िब्ला रुख़ बैठने की कोशिश फ़रमाते। जब कभी इन के साथ खाना खाने का मौक़अ़ मिला तब भी अकषर क़िब्ला रुख़ बैठा करते थे। इसी तरह दा'वते इस्लामी की मजलिस लंगरे रसाइल के ज़िम्मेदार इस्लामी भाई मुहम्मद इरफ़ान अत्तारी का बयान है कि एक मरतबा हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى का येह अन्दाज़ देखा कि खाने के लिये दस्तरख़्वान क़िब्ला रू नहीं था आप ने तरग़ीबन फ़रमाया कि इस को घुमा कर क़िब्ले की सम्त कर लीजिये और हमें येह ज़ेह्न दिया कि क़िब्ला रू बैठना चाहिये और मदनी इन्आमात पर अमल के हवाले से तरग़ीब दिलाई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन के दरजात बुलन्द फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(34) महबूबे अत्तार की अश्क बारियां

मअ़ निगराने शूरा के तअष्षुरात

मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी, निगराने मर्कज़ी मजलिसे शूरा, हज़रते मौलाना हाजी अबू हामिद, मुहम्मद इमरान अत्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى का बयान है कि महबूबे अत्तार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار रक़ीक़ुल क़ल्ब थे, मैं ने इन को कई मरतबा रोते देखा है, जब क़ुरआने पाक की तिलावत और इस का तर्जमा व तफ़्सीर बयान होता तो बसा अवक़ात इन के आंसू निकल आते थे, जब कभी ख़ौफ़े ख़ुदा और क़ब्रो आख़िरत की होलनाकियों का तज़्किरा होता

तो मैं ने एक नहीं कई मरतबा देखा है कि येह ऐसे रोते थे कि इन के आंसू टप टप गिरते थे। इसी त़रह़ ना'त ख़्वानी में भी इन को रोते देखा है। निगराने शूरा मज़ीद फ़रमाते हैं : मुझ से बारहा वोह इस त़रह़ के मदनी फूलों का मुत़ालबा करते जिस से रिक़्क़त, सोज़ और अ़मल का जज़्बा बढ़े नीज़ बा अ़मल रहते हुए मदनी काम करने वाली बातों पर बेह़द ह़ौसला अफ़ज़ाई फ़रमाते। मुझे ह़ाजी ज़म ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का तआ़रूफ़ उस वक़्त हुवा था जब मैं एक ज़ैली निगरान था। दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार इजतिमाअ़ में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने एक इस्लामी भाई का नाम ले कर तआ़रूफ़ करवाया और कुछ इस त़रह़ फ़रमाया कि येह आप के अ़लाक़े में आ कर मदनी इन्आ़मात की तरग़ीब दिलाएंगे। **ह़ाजी ज़म ज़म** बाबुल मदीना बाबरी चौक जहांगीर रोड पर वाक़ेअ़ कन्ज़ुल ईमान मस्जिद में बयान के लिये तशरीफ़ लाए और हम भी अपने ज़ैली ह़ल्क़े (अव्वलीन मदनी मर्कज़ दा'वते इस्लामी गुलज़ारे ह़बीब मस्जिद) से क़ाफ़िला ले कर पहुंचे। इस बयान में वोह अ़मल का जज़्बा उभारने और **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल करने की तरग़ीब दिला रहे थे। येह इन का पहला तआ़रूफ़ था। फिर कभी कभी इन का ज़िक्रे ख़ैर सुनते रहते और इस त़रह़ कुछ क़ुर्बत भी होती चली गई और आख़िरे कार मर्कज़ी मजलिसे शूरा में इन की रुकनिय्यत हमारे लिये एक बहुत बड़ी ने'मत षाबित हुई। येह अपने अ़मल के ज़रीए़ हम सब को **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल की तरग़ीब दिलाते थे। हर माह के इब्तिदाई दिनों में (जब कि शूरा का मश्वरा होता) अपनी जैब

www.dawateislami.net

से तमाम अराकीने शूरा में **कुफ़्ले मदीना पेड** और **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला तक़्सीम फ़रमाते थे। **नमाज़े बा जमाअ़त का** एहतिमाम मअ़ सुन्नते क़ब्लिय्या का जज़्बा दीदनी था, मेरा हुस्ने ज़न है कि येह अकषर अवक़ात **बा वुज़ू** रहते थे। इन के मिज़ाज में चिड़चिड़ा पन, तन्ज़, तन्क़ीद, झाड़ना कभी न देखा। मुस्कुराहट और हौसला अफ़्ज़ाई में बड़ी फ़राख़ी फ़रमाते थे, गोया हर दिल अ़ज़ीज़ शख़्सिय्यत थे। बड़ी नर्मी के साथ अपना मौक़िफ़ बयान फ़रमाते, त़वील दौरानिय्या ख़ामोश रहते, इन के साथ रहने वाला उकताहट का शिकार न होता था, इस के इलावा भी बहुत सारी ख़ुसूसिय्यात के ह़ामिल थे। इन का जाना दा'वते इस्लामी समेत मुझ गुनाहगार के लिये भी बहुत बड़ा नुक़्सान है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन्हें बे ह़िसाब बख़्शे और हमें इन का ने'मल बदल अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ख़ौफ़े ख़ुदा से रोने की फ़ज़ीलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! मर्ह़ूम ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی की गिर्या व ज़ारी बारगाहे रब्बे बारी عَزَّوَجَلَّ में क़बूल हो गई तो इन का बेड़ा पार होगा क्यूंकि **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : जिस मोमिन की आंखों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से आंसू निकलते हैं अगर्चे मख्खी के सर के बराबर हों, फिर वोह आंसू उस के चेहरे के ज़ाहिरी ह़िस्से को पहुंचें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम पर ह़राम कर देता है। (شُعَبُ الْاِیمان، ۱/۴۹۱، الحدیث ۸۰۲)

www.dawateislami.net

एक मरतबा सरवरे कौनैन, रह़मते दारैन, नानाए ह़सनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने **ख़ुत्बा** दिया तो ह़ाज़िरीन में से **एक शख़्स रो पड़ा** । येह देख कर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर आज तुम्हारे दरमियान वोह तमाम मोमिन मौजूद होते जिन के गुनाह पहाड़ों के बराबर हैं तो उन्हें इस एक शख़्स के रोने की वजह से बख़्श दिया जाता क्यूंकि फ़िरिश्ते भी इस के साथ रो रहे थे और दुआ कर रहे थे : اَللّٰھُمَّ شَفِّعِ الْبَکَّائِیْنَ فِیْمَنْ لَّمْ یَبْکِ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! न रोने वालों के ह़क़ में रोने वालों की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा । (شُعَبُ الْاِیمان، ۱/ ۴۹۴، الحدیث ۸۱۰)

मेरे अश्क बहते रहें काश हर दम — तेरे ख़ौफ़ से या ख़ुदा या इलाही
तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा — मैं थर थर रहूं कांपता या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(35) इस्लामी भाई की नींद में ख़लल न पड़े

महबूबे अत्तार ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی हुक़ूक़ुल इबाद के ह़वाले से बेह़द हुस्सास थे, चुनान्चे बाबुल मदीना (कराची) में मुक़ीम मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ह़ाजी फ़य्याज़ अत्तारी का बयान है कि हम एक मरतबा ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی की इ़यादत के लिये नमाज़े फ़ज्र के बा'द फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची के मुस्तश्फ़ा में पहुंचे तो हमें इशारों से ताकीद की, कि आवाज़ बुलन्द न कीजियेगा ता कि सामने सोए हुए इस्लामी भाई की नींद में ख़लल न पड़े ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(36) पाऊं पकड़ कर मुआफ़ी मांगी

मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी व रुक्ने शूरा, अबुल क़ाफ़िला सय्यिद मुहम्मद लुक़मान अत्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی का कुछ यूं बयान है : एक इस्लामी भाई ने मुझे बताया कि एक मरतबा महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی का पाऊं मेरे पाऊं पर आ गया, मैं ने ज़रा भी बुरा महसूस नहीं किया था मगर येह हुक़ूकुल इबाद के बारे में इतने हुस्सास थे कि फ़ौरन आगे बढ़े और मेरे पाऊं पकड़ कर मुझ से मुआफ़ी मांगने लगे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیه واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللهُ تعالیٰ علیٰ محمَّد

(37) शकर रन्जी के बा'द मा'ज़िरत की

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई का बयान है कि 10 जून 2012 को मेरी हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی से किसी काम के सिलसिले में फ़ोन पर बात हुई, दौराने गुफ़्तगू थोड़ी सी शकर रन्जी हो गई तो कुछ ही देर बा'द इन का फ़ोन दोबारा तशरीफ़ लाया और बड़ी आ़जिज़ी के साथ मा'ज़िरत त़लब करने लगे कि मेरी किसी बात से आप का दिल दुख गया हो तो मुझे मुआफ़ कर दीजिये।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیه واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللهُ تعالیٰ علیٰ محمَّد

www.dawateislami.net

(38) मुआफ़ी के लिये सिफ़ारिश करवाई

मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी व रुक्ने शूरा, अबू बिलाल मुहम्मद रफ़ीअ़ अ़त्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی का बयान है : हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی के विसाल से कुछ अ़र्सा पहले सरदाराबाद (फ़ैसलाबाद) में ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों का तर्बिय्यती इजतिमाअ़ हुवा, जिस के अख़राजात के ह़वाले से कुछ तन्ज़ीमी मसाइल थे। इस सिलसिले में हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی ने मुझे फ़ोन किया, मैंने कुछ इश्कालात बयान किये और इन का हुक्म तस्लीम कर लिया। येह समझे शायद मैं ने इन की बात नहीं मानी और इन्हों ने दोबारा फ़ोन किया मगर मैं ने मसरूफ़िय्यत की वजह से फ़ोन काट दिया। कुछ देर बा'द **शहज़ादए अ़त्तार** ह़ज़रते मौलाना अल्हाज अबू उसैद, उ़बैद रज़ा अ़त्तारी अल मदनी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی का फ़ोन तशरीफ़ लाया तो उन्हों ने कुछ यूं फ़रमाया कि "ज़म ज़म भाई सख़्त परेशान हैं कि आप उन से नाराज़ हैं, उन्हों ने मुझ से सिफ़ारिश करने के लिये कहा है कि आप उन्हें मुआफ़ कर दें," फिर ह़ज़रते मौलाना उ़बैद रज़ा मदनी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی ने हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی को फ़ोन दे दिया तो उन्हों ने ख़ुद भी मुआफ़ी मांगी, मैं ने उसी वक़्त वज़ाह़त कर दी कि "हुज़ूर ! मैं आप से हरगिज़ नाराज़ नहीं हुवा मह़ज़ मसरूफ़िय्यत की वजह से आप का फ़ोन रिसीव नहीं कर सका था।" इस वाक़िए से इन की आ़जिज़ी और ईज़ाए मुस्लिम से बचने के बारे में इन के ज़ेहन का पता चलता है।

www.dawateislami.net

(39) मस्जिद का अदब

मदीनतुल औलिया अहमदाबाद (अल हिन्द) के **मदनी इन्आमात** के ज़िम्मेदार इस्लामी भाई मुहम्मद इम्तियाज़ अत्तारी के बयान का लुब्बे लुबाब है कि जब हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى अहमदाबाद मदनी इन्आमात के हवाले से हमारी तर्बिय्यत के लिये तशरीफ़ लाए थे तो हम ने इन से एक बात येह भी सीखी कि जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मस्जिद में नमाज़ अदा करते तो ताज़ा वुज़ू करने की सूरत में अपनी कथ्थई चादर उस जगह रखते जहां सज्दे में दाढ़ी आती है और फ़रमाते कि वुज़ू के बा'द हाथ मुंह साफ़ करने के बा'द भी बा'ज़ अवक़ात दाढ़ी से पानी के क़तरे टपकते हैं जब कि फ़र्शे मस्जिद पर वुज़ू के क़तरे टपकाना मक्रूहे तहरीमी है, अब अगर वुज़ू के क़तरे दौराने नमाज़ चादर पर गिरेंगे तो मस्जिद का अदब तो बर क़रार रहेगा ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के दरजात को बुलन्द फ़रमाए और इन के सदक़े हमारी भी मग़फ़िरत फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِىِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

(40) नीले रंग का लोटा इस्ति'माल नहीं करते थे

एक मदनी इस्लामी भाई अबू वासिफ़ अत्तारी का बयान है कि मैं ने अपने मक्तब के इस्तिन्जा ख़ाने के लिये बाज़ार से बड़े साइज़ का लोटा मंगवाया तो समझाने के बा वुजूद लाने वाला नीले (bue) रंग का लोटा ले आया और बताया कि इस साइज़ में सिर्फ़ येही रंग मौजूद था, बहर हाल मजबूरन हम ने वोह लोटा इस्ति'माल करना शुरूअ़ कर दिया, सुर्ख़ (Red)

रंग का एक छोटा लोटा भी इस्तिन्जा ख़ाने में मौजूद था, जब हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللہِ الْبَارِی हमारे मक्तब में तशरीफ़ लाते और ज़रूरतन इस्तिन्जा ख़ाने में जाते तो मुझे क़राइन से अन्दाज़ा हो जाता था कि आप सुर्ख़ रंग का लोटा इस्ति'माल किया करते और **ग़ालिबन ग़ौषे पाक** رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **के मज़ार शरीफ़ के गुम्बद के नीले रंग की निस्बत की वजह से नीला लोटा इस्ति'माल नहीं करते थे,** लेकिन चूंकि इस्ति'माल करना ना जाइज़ नहीं इस लिये कभी मुझ से इस का इज़्हार नहीं किया और न ही नीले रंग का लोटा इस्ति'माल करने से मन्अ़ किया।

ع हम इ़श्क़ के बन्दे हैं क्यूं बात बढ़ाई है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(41) मदनी इन्आ़मात के ताजदार की आ़जिज़ी

मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के इस्लामी भाई ने बताया कि तक़रीबन चार या पांच साल पहले एक मरतबा हम अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के दरे दौलत के बाहर गली में खड़े थे कि **हाजी ज़म ज़म रज़ा अत्तारी** عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللہِ الْبَارِی तशरीफ़ लाए तो मैं ने अ़क़ीदत से आगे बढ़ कर इन के हाथ चूम लिये। इन्हों ने आ़जिज़ी करते हुए बड़ी प्यारी बात इरशाद फ़रमाई कि **प्यारे भाई! आप की अ़क़ीदत का मर्कज़ आप का पीर होना चाहिये।** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मर्हूम की तुर्बत पर करोड़ों रह़मतें नाज़िल फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(42) हाफ़िज़े क़ुरआन की ता'ज़ीम

ज़म ज़म नगर हैदराबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के इस्लामी भाई हाफ़िज़ मुहम्मद अर्सलान अत्तारी का बयान है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे **मदनी इन्आमात** के ताजदार, महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى के साथ तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में टन्डो जाम (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के सफ़र की सआदत मिली। नमाज़े इशा के बा'द जब वक़्फ़ए आराम हुवा तो मैं आराम के लिये जिस जगह लैटा उस तरफ़ हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى के क़दम थे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुझे बड़ी महब्बत से फ़रमाया : आप हाफ़िज़े कुरआन हैं और मुझे येह गवारा नहीं कि हाफ़िज़े कुरआन की तरफ़ पाऊं कर के आराम करूं। मैं ने अर्ज़ की : हुज़ूर ! कोई बात नहीं, आप जैसी शख़्सिय्यत के क़दमों की सीध में लैटना मेरे लिये सआदत है, मगर इन के शफ़्क़त भरे इसरार पर मैं वहां से थोड़ी दूर जा कर लैट गया, इस पर हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى मुस्कुराए और मुझे कहा : ''جَزَاكَ اللّٰهُ خَيْرًا (या'नी **अल्लाह** तआला आप को जज़ाए ख़ैर दे)''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

www.dawateislami.net

(43) सब्रो रिज़ा के पैकर

हाजी अबू जुनैद ज़म ज़म रज़ा अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के बच्चों की अम्मी का बयान कुछ इस त़रह़ है कि मर्हूम चन्द सालों से पित्ता, पथरी और अलसर वग़ैरा के अमराज़ में मुब्तला रहे, इस दौरान इन का ऑपरेशन भी हुवा लेकिन इस मरतबा मरज़ (या'नी मरज़ुल मौत) में बहुत तक्लीफ़ थी, ख़ून की उलटियां इस क़दर होती थीं कि देखी न जाती थीं, तक्लीफ़ से इन के जिस्म से इस क़दर पसीना निकलता कि लगता जिस्म पर पानी डाला गया है मगर **सब्र** का येह आ़लम था कि फ़रमाते : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से इम्तिहान है اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ सब बेहतर हो जाएगा।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

(44) मैं ने इन्हें साबिर पाया

ज़म ज़म नगर हैदराबाद के इस्लामी भाई मुह़म्मद साजिद अ़त्तारी का बयान है कि दौराने अ़लालत मुझे भी कुछ अ़र्सा ह़ाजी ज़म ज़म के साथ देख-भाल और ख़िदमत के लिये रहने की सआ़दत मिली, उ़मूमन जब किसी मरीज़ को ज़ियादा चुभन वाला इन्जेक्शन लगाया जाता है तो वोह कराहता है लेकिन ह़ाजी ज़म ज़म रज़ा अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की करोड़ों रह़मतें हों कि आप के दोनों हाथों पर कष्रत से इन्जेक्शन लगते थे लेकिन आप ने कभी तक्लीफ़ का इज़्हार नहीं किया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इन को बहुत साबिर पाया गया।

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदके़ हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالى على محمَّد

(45) मायूसी के अल्फ़ाज़ नहीं बोलते थे

रुक्ने शूरा हा़जी अबू रज़ा मुह़म्मद अ़ली अ़त्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی का बयान कुछ यूं है कि इन की त़बीअ़त शदीद अ़लील रही, पे दर पे ऑपरेशन हुए, कई बार इन्तिहाई निगहदाश्त के वॉर्ड (I.C.U) में मुन्तकि़ल किया गया, गोया कई मरतबा मौत के मुंह से वापस आए, लेकिन कभी भी इन के मुंह से मायूसी के इस त़रह़ के अल्फ़ाज़ नहीं सुने कि मैं **अब ज़िन्दा नहीं रह सकूंगा** बल्कि ढारस बंधाते कि अल्लाह बेहतर करेगा। कभी अपनी तक्लीफ़ का बिला ज़रूरत इज़्हार कर के लोगों की हमदर्दियां समेटने की कोशिश नहीं करते थे।

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदके़ हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالى على محمَّد

सब्र करना चाहिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी कोई तक्लीफ़ आए सब्रो हिम्मत का मुज़ाहिरा करना चाहिये, बिला ज़रूरत किसी पर इस का इज़्हार भी न किया जाए कि कहीं शिकवे की आफ़त में न जा पड़े और आता षवाब हाथ से न निकल

www.dawateislami.net

जाए । बा'ज़ अवक़ात थोड़ी सी परेशानी या बीमारी भी बहुत बड़ा षवाब दिला देती है । चुनान्चे हज़रते बुरैदा अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : "मुसलमान को जो मुसीबत पहुंचती है हत्ता कि कांटा भी चुभे तो इस की वजह से या तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का कोई ऐसा गुनाह मिटा देता है जिस का मिटाना इसी मुसीबत पर मौक़ूफ़ था या उसे कोई बुज़ुर्गी इनायत फ़रमाता है कि बन्दा इस मुसीबत के इलावा किसी और ज़रीए से इस तक न पहुंच पाता ।"

(موسوعة للامام ابن ابی الدنیا،کتاب المرض والکفارات ٤ / ٢٩٣،الحدیث٢٤٢)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

मुसीबत की हिक्मत

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बन्दे के लिये इल्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ में जब कोई मर्तबए कमाल मुक़द्दर होता है और अपने अमल से इस मर्तबे को नहीं पहुंचता तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के जिस्म या माल या अवलाद पर मुसीबत डालता है फिर इस पर सब्र अता फ़रमाता है यहां तक कि उसे उस मर्तबे तक पहुंचा देता है जो उस के लिये इल्मे इलाही में मुक़द्दर हो चुका है । (سنن ابی داوٗد،کتاب الجنائز،باب الامراض..الخ،٣/٢٤٦، الحدیث ٣٠٩٠)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

www.dawateislami.net

(45) परेशान न होने दिया

मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के इस्लामी भाई मुहम्मद एहतिशाम का बयान है कि हमारी रमज़ानुल मुबारक में हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی की इयादत के लिये हाज़िरी हुई थी। आप शदीद तक्लीफ़ में थे, ठीक से बैठ या लैट भी नहीं पा रहे थे। इतने में आप के घर से फ़ोन आ गया। आप ने संभल कर अपने घर वालों से बहुत इत्मीनान से बात की और उन्हें तसल्ली दी। बा'द में हम से फ़रमाने लगे कि मैं अगर अपने घर वालों से इस त़रह़ बात न करूं तो वोह मज़ीद परेशान हो जाएंगे। फिर हमें कुफ़्ले मदीना लगाने और लिख कर गुफ़्तगू करने के ह़वाले से मदनी फूल इरशाद फ़रमाए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(46) बीमारी में भी ख़ुश अख़्लाक़ रहे

हाजी ज़म ज़म रज़ा अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی के बच्चों की अम्मी का बयान है कि बीमारी में बसा अवक़ात इन्सान में चिड़चिड़ा पन आ जाता है मगर शदीद तक्लीफ़ में भी इन के मिज़ाज में ज़रा भी चिड़चिड़ा पन दिखाई नहीं देता था। अस्पताल के अ़मले वालों से भी मुस्कुरा मुस्कुरा कर बात करते थे और बार हा उन से कहते : आप मेरा बहुत ख़याल रखते हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मुस्कुरा कर बात करना सुन्नत है

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 74 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**हुस्ने अख़्लाक़**" सफ़ह़ा 15 पर है : ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाती हैं कि वोह हर बात **मुस्कुरा** कर किया करते, जब मैं ने उन से इस बारे में पूछा तो उन्हों ने जवाब दिया : "मैं ने हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मिलन सारों के रहबर, ग़मज़दों के यावर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दौराने गुफ़्तगू **मुस्कुराते** रहते थे।"

(مکارِمُ الاخلاق للطَّبَرانی ص۳۱۹ رقم ۲۱)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(47) नौमुस्लिम पर इनफ़िरादी कोशिश

मुस्त़फ़ा आबाद (राएवन्ड, पाकिस्तान) के इस्लामी भाई अ़ब्दुर्रऊफ़ अ़त्तारी का बयान है कि तक़रीबन दो साल क़ब्ल (ग़ालिबन सि. 1431 हि. में) मैं ने इस्लाम क़बूल किया और आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में ख़ुद को 12 माह के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये पेश कर दिया। क़बूले इस्लाम के बा'द मुझे बहुत सी आज़माइशें पेश आईं जिन से मेरे क़दम डगमगा जाते लेकिन ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡبَارِی मेरे बहुत बड़े मोह़सिन हैं। इन्हों ने मुझे ख़ूब शफ़्क़तो से नवाज़ा और किसी क़िस्म की कमी महसूस नहीं होने दी। जब भी मैं डगमगाने लगता तो मुझे इन की नसीह़तें याद आ जातीं। जब कभी मैं ह़ालात से

www.dawateislami.net

तंग आ कर मदनी इन्आमात के ताजदार عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡغَفَّار को अपनी परेशानी से आगाह करता कि मुझे इस तरह के ख़यालात आते हैं कि वापस पुराने मज़्हब पर लौट जाउं तो वोह मुझे समझाते : **येह शैतान के वस्वसे हैं जो आप का ईमान छीनने की कोशिश कर रहा है।** اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ इन की इनफ़िरादी कोशिशों से अब तक दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हूं। मुझे सब से बड़ी सआदत येह मिली कि जिन दिनों हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡبَارِی आलमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना के मुस्तश्फ़ा (शिफ़ा ख़ाने) में दाख़िल थे तो मुझे इन के क़रीब रहने और इन की ख़िदमत करने का मौक़अ़ मिला। मैं ने देखा कि हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡبَارِی को इस क़दर तक्लीफ़ होती कि मैं कांप उठता मगर इन्हों ने कभी उफ़ तक नहीं की। जब कभी इन की तबीअ़त संभलती तो मुझे अपने पास बिठा लेते और दीने इस्लाम के बारे में अच्छी अच्छी बातें बताते कि "देखो ! चौदह सो साला तारीख़ में बुज़ुर्गाने दीन ने राहे ख़ुदा में कैसी कैसी तकालीफ़ बर्दाश्त कीं, बा'ज़ों ने तो अपना घर-बार, मालो दौलत सब कुछ छोड़ा है। اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ आप ने इस्लाम क़बूल किया है और इस की वजह से आप के घर वालों ने आप को छोड़ दिया है तो आप के पीर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتۡ بَرَكَاتُهُمُ الۡعَالِيَه ने आप को संभाल लिया है और येह सब से बड़ी सआदत है और येह भी ख़ुश नसीबी है कि आप दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता है, **अल्लाह** तआला से हर वक़्त अपने ईमान की हिफ़ाज़त के लिये दुआ करते रहा करें और अपने प्यारे मुर्शिद से अपने आप को वाबस्ता रखें।" मैं इन से बड़ा मुतअष्षिर होता कि

येह इतनी शदीद तक्लीफ़ में भी मुझ पर इनफ़िरादी कोशिश कर रहे हैं और दीने इस्लाम पर क़ाइम रहने की ताकीद फ़रमा रहे हैं। मेरी महरूमी कि मैं इन का आख़िरी दीदार नहीं कर सका, इन के विसाल से तीन चार दिन पहले पंजाब चला गया था। वहां जब मुझे येह पता चला कि हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى इन्तिक़ाल कर गए हैं तो सदमे से चूर चूर हो गया कि येही तो थे जो मुझे इस मदनी माहोल पर क़ाइम रखने के लिये फ़ोन पर राबिता रखते और इन की हमेशा येह कोशिश होती कि येह इस्लामी भाई कहीं भटक न जाए। मैं ने जो आज़्माइशें सहीं इन को दूर करने में हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى का हाथ है। मैं अपने मुसलमान होने का सारा षवाब हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى को पेश करता हूं और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने येह निय्यत भी की है कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी सारी ज़िन्दगी दा'वते इस्लामी के नाम कर दूंगा, मेरा जीना मरना इसी मदनी माहोल में होगा। **अल्लाह** तआला मुझे ईमान पर इस्तिक़ामत अता फ़रमाए और मरते वक़्त कलिमा नसीब फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(48) महबूबे अत्तार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار का ता'ज़िय्यत का अन्दाज़

जब मुसलमान किसी भी तरह की परेशानी से दो चार हो जाए तो उस की दिलजोई करना, उसे तसल्ली देना बहुत बड़े षवाब का काम है चुनान्चे हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, रसूले अन्वर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे रूह परवर है : जो किसी ग़मज़दा शख़्स से ता'ज़िय्यत

करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे तक़्वा का लिबास पहनाएगा और रूहों के दरमियान उस की रूह पर रहमत फ़रमाएगा और जो किसी मुसीबत ज़दा से ता'ज़िय्यत करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत के जोड़ों में से दो ऐसे जोड़े पहनाएगा जिन की क़ीमत (सारी) दुन्या भी नहीं हो सकती। (المعجم الاوسط، ٦/٤٢٩، الحديث:٩٢٩٢)

मदनी इन्आमात के ताजदार, महबूबे अत्तार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار दुखी और ग़मज़दा इस्लामी भाइयों की अकषर दिलजोई किया करते और उन्हें मदनी काम करने की तरग़ीब भी देते थे, चुनान्चे एक इस्लामी भाई के वालिद साहिब के इन्तिक़ाल पर ब ज़रीअए फ़ोन ता'ज़िय्यत करते हुए कुछ यूं फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप के वालिद की मग़फ़िरत फ़रमाए, इन की क़ब्र को जन्नतुल बक़ीअ में मुन्तक़िल फ़रमाए, आप सब को, इन के लवाहिक़ीन को सदक़ए जारिया बनने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, नेक अवलाद सदक़ए जारिया है, अब येह (या'नी फ़ौत होने वाले) मुन्तज़िर होते हैं कि अवलाद की तरफ़ से क्या क्या इन को षवाब पहुंचता है ! अब आप को चाहिये कि हर गुनाह से बचते हुए ख़ूब ख़ूब नेकियां कीजिये फिर अपने मर्हूम अब्बू को इन का षवाब ईसाल कर दीजिये। अभी इसी जुमुआ तीन दिन का मदनी क़ाफ़िला भी सफ़र कर रहा है जिस में मैं भी शामिल हूं اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अब्बू के ईसाले षवाब के लिये तीन दिन आप भी मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कीजिये, मर्हूम ने आप को पाला पोसा, आप के लिये दुन्यावी तौर पर क्या क्या ज़राएअ कर के गए, इन के ईसाले षवाब के लिये अगर आप इसी जुमुए को हमारे साथ सफ़र कर लें तो मदीना मदीना, हिम्मत कीजिये और जुमुआ, हफ़्ता और इतवार

तीन दिन के लिये अपना नाम लिखवा दीजिये ! (इस्लामी भाई के नाम लिखवाने पर फ़रमाया :) مَاشَاءَاللّٰه **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह एक बहुत प्यारा अन्दाज़ है कि ग़म ख़्वारी, ता'ज़ियत और साथ ही दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तर्बिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की रग़बत दिलाना, **अल्लाह** करे कि हमें भी येह अन्दाज़ नसीब हो जाए । اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(49) हाजी ज़म ज़म हमारे घर तशरीफ़ ले आए

ज़म ज़म नगर हैदराबाद के अ़लाक़े लतीफ़ाबाद के इस्लामी भाई सय्यिद राशिद हुसैन अ़त्तारी का बयान अपने अल्फ़ाज़ व अन्दाज़ में अ़र्ज़ करता हूं कि हमारी वालिदा जो कि दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता थीं, इन का 17 मई सि. 2011 ई. की रात इन्तिक़ाल हुवा । हुवा यूं कि अ़लाक़े का कोई ज़िम्मेदार मेरी अम्मी के जनाज़े में न आ सका, इस पर छोटे भाई जो कि मदनी इन्आ़मात के ज़िम्मेदार भी है, का दिल बहुत दुखा । न जाने कैसे हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی को इस बात का पता चल गया और वोह दीगर बड़े बड़े ज़िम्मेदाराने दा'वते इस्लामी के हमराह **ता'ज़ियत** के लिये हमारे घर तशरीफ़ ले आए । इन की आमद पर न सिर्फ़ मेरे भाई को तसल्ली मिली बल्कि बक़िय्या घर वालों को भी क़ल्बी इत्मीनान नसीब हुवा ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

(50) हाथ की सूजन जाती रही

जामशूरो (बाबुल इस्लाम सिन्ध) में दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार इस्लामी भाई मुहम्मद उवैस अत्तारी का बयान अपने अन्दाज़ व अल्फ़ाज़ में अ़र्ज़ करता हूं कि उस वक़्त मुझे मदनी माहोल से वाबस्ता हुए शायद दो हफ़्ते हुए होंगे जब मैं ने 26 घन्टे के लिये होने वाले मदनी इन्आ़मात के तर्बिय्यती इजतिमाअ़ में शरीक होने की सआ़दत पाई। इस इजतिमाअ़ में मदनी इन्आ़मात के ताजदार, महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى और दीगर मुबल्लिग़ीने दा'वते इस्लामी हमारी तर्बिय्यत फ़रमा रहे थे। नमाज़े अ़स्र के बा'द जब हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى फ़िनाए मस्जिद में आए तो एक इस्लामी भाई ने आगे बढ़ कर इन्हें अपना हाथ दिखाया और अ़र्ज़ की, कि भारी सामान गिरने की वजह से मेरे हाथ पर चोट आई है और इस की सूजन नहीं जा रही जिस की वजह से मैं अपनी मुलाज़मत पर नहीं जा सकता और मेरी तनख़्वाह भी कट रही है ! आप इस पर दम कर दीजिये। हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى ने उस के हाथ पर दम कर दिया। जब मग़रिब का वक़्त हुवा तो वुज़ू ख़ाने में वोही इस्लामी भाई मेरे बराबर आ बैठे और उसी हाथ से टूंटी खोली, मैं ने हैरत से पूछा कि कुछ देर पहले तो आप कह रहे थे कि **मैं इस से कोई काम नहीं कर पाता !** तो उन्हों ने फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **हाजी ज़म ज़म रज़ा अत्तारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى **के दम करने की बरकत से मेरे हाथ की सूजन बहुत कम हो गई है और इस ने अब काम करना भी शुरूअ़ कर दिया है।**

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।
اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(51) बिग़ैर ऑपरेशन शिफ़ा मिल गई

वकीलों और जजों में दा'वते इस्लामी का मदनी काम करने के लिये बनाई गई "**मजलिसे वुकला**" फ़ारूक़ नगर (लाड़काना बाबुल इस्लाम पाकिस्तान) के रुक्न अ़ब्दुल वाहिद अ़त्तारी का बयान कुछ यूं है कि मेरा डेढ़ साला बेटा 13 मई 2012 को गर्मी की शिद्दत की वजह से शदीद बीमार हो गया, उस के फेफड़ों में पानी भर गया था जिस की वजह से अस्पताल में दाख़िल करवाना पड़ा जहां वोह 14 दिन ज़ेरे इलाज रहा मगर हालत मज़ीद ख़राब हो गई। चुनान्चे 27 मई 2012 को हम उसे बाबुल मदीना कराची के एक अच्छे अस्पताल में ले गए जहां वोह मज़ीद 15 दिन ज़ेरे इलाज रहा। बिल आख़िर डॉक्टरों ने कहा कि बच्चे के फैफड़ों का बड़ा ऑपरेशन होगा। येह सुन कर हम बहुत परेशान हुए, उन्हीं दिनों महबूबे अ़त्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَارِی मेरे बेटे की इयादत करने के लिये अस्पताल तशरीफ़ लाए। दुआ़ करने के बा'द मेरे बेटे को दम किया और मुझे तसल्ली दी कि **हिम्मत रखिये** اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **दवाओं से ही फ़ाइदा हो जाएगा, ऑपरेशन नहीं करना पड़ेगा।** दूसरे दिन ऑपरेशन से पहले डॉक्टर ने जो टेस्ट करवाए उन की रिपोर्ट देख कर हैरान रह गए और कहने लगे कि अब ऑपरेशन की ज़रूरत नहीं बच्चा

दवाओं से ही सिह्हत याब हो जाएगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मेरा बेटा दवाओं और हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की दुआओं की बरकत से सिह्हतयाब हो गया।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दुआए मा'रूफ़ कर्ख़ी की बरकत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** के नेक बन्दों की दुआएं मिल जाएं तो इन्सान का बेड़ा पार हो जाता है, चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना सुलैमान रूमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से मन्क़ूल है, फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना ख़लील सय्याद عليه رحمة الله الجواد को येह कहते हुए सुना : एक मरतबा मेरा बेटा शहर से बाहर खेतों की तरफ़ गया और गुम हो गया, ख़ूब ढूंडा लेकिन कहीं न मिला, बेटे की जुदाई पर उस की मां ग़म से निढ़ाल हो गई। मैं हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की बारगाह में हाज़िर हुवा और अर्ज़ की : ऐ अबू महफ़ूज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मेरा बेटा ला पता हो गया है। उस की वालिदा बेटे की जुदाई में ग़म से हलकान हुई जा रही है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : अब तुम क्या चाहते हो ? मैं ने कहा : हुज़ूर ! दुआ फ़रमाएं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे बेटे को हम से मिलवा दे। येह सुन कर वलिय्ये कामिल, मक़्बूले बारगाहे ख़ुदा वन्दी, हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने दुआ के लिये हाथ उठाए और इस तरह इल्तिजा की : "ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! बेशक तमाम आस्मान तेरे हैं, ज़मीन तेरी है और जो कुछ भी इन के दरमियान है सब का

www.dawateislami.net

मालिक व ख़ालिक़ तू ही है। मेरे मालिक ! इन का बच्चा इन्हें लौटा दे।" हज़रते सय्यिदुना ख़लील सय्याद عليهِ رَحْمَةُ اللهِ الجَوَاد कहते हैं : फिर मैं आप رَحْمَةُاللهِ تعالٰى عَلَيه की इजाज़त से शहर के दरवाज़े पर आया तो अपने बेटे को वहां मौजूद पाया उस का सांस फूल रहा था। मैं ने जब अपने बेटे को देखा तो फ़र्ते महब्बत से पुकारा : ऐ मुहम्मद ! ऐ मेरे बेटे ! मेरी आवाज़ सुन कर वोह मेरी त़रफ़ लपका। मैं ने उसे सीने से लगा कर पूछा : मेरे लख़्ते जिगर तुम कहा थे ? कहा : अब्बा जान ! मैं गन्दुम के खेतों में मारा मारा फिर रहा था कि अचानक यहां पहुंच गया। मैं अपने बच्चे को ले कर ख़ुशी ख़ुशी घर की त़रफ़ चल दिया। येह हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى की दुआ की बरकत थी कि मुझे मेरा बेटा मिल गया।

(عیون الحکایات،الحکایۃ الحادیۃ عشرۃ بعد الثلاثمائۃ ،ص۲۷۸ماخوذاً)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि नेक लोगों की दुआओं से मुसीबतें कैसे टलती और ग़म दूर होते हैं। अल्लाह करीम अपने बन्दों पर हर आन करम की बारिश बरसा रहा है जो चाहे इस बाराने रह़मत में नहा ले। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपने औलियाए किराम के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और इन की बरकत से हमारे मसाइब व आलाम दूर फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

दुआए वली में येह ताषीर देखी　बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

माल से बे रग़बती

रुक्ने शूरा हाजी अबू रज़ा मुहम्मद अली अत्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی का बयान कुछ यूं है : हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی के हुस्ने अख़्लाक़ की बदौलत क्या ग़रीब क्या अमीर ! सभी इन के गिरवीदा थे, बड़े बड़े सेठ इन से राबिते में रहते थे, येह उन पर दा'वते इस्लामी के मदनी कामों के लिये **अतिय्यात** के तअल्लुक़ से इनफ़िरादी कोशिश तो किया करते मगर अपनी ज़ात के लिये "तरकीबें" न फ़रमाते ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ज़ाती सुवारी नहीं थी

इन्ही रुक्ने शूरा का बयान कुछ यूं है : इन को मोटर साईकल मुकम्मल तौर पर चलाना नहीं आती थी और न ही कार ड्राइविंग आती थी मगर येह रिक्षे, तांगे और किसी इस्लामी भाई के साथ मोटर साईकल पर मुख़्तलिफ़ अलाक़ों में मदनी कामों के लिये जाया करते थे । मुझे याद नहीं पड़ता कि कभी किसी से बयान वग़ैरा के लिये सुवारी का मुतालबा किया हो कि सुवारी भेजोगे तो आप के अलाक़े में आऊंगा ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो ।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

किसी का एहसान क्यूं उठाएं, किसी को हालात क्यूं बताएं,
तुम्हीं से मांगेगे तुम ही दोगे, तुम्हारे दर से ही लौ लगी है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदनी कामों में मसरूफ़िय्यत

रुक्ने शूरा हाजी मुहम्मद अली अत्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی का बयान कुछ यूं है कि हाजी **जम जम रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى दा'वते इस्लामी के मुख़्तलिफ़ मदनी कामों में अज़ ख़ुद मसरूफ़ रहा करते थे, किसी के कहने या हौसला अफ़्ज़ाई का इन्तिज़ार नहीं किया करते थे। कभी **मदनी मश्वरे** के लिये जा रहे हैं तो कभी **अलाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत** के लिये, कभी किसी मरीज़ की **इयादत** करने या कभी मय्यित की **ता'ज़िय्यत** के लिये उस के घर जा रहे हैं, तो कभी किसी के **जनाज़े** में शिर्कत के लिये जा रहे हैं, कभी **जामिअ़तुल मदीना** फ़ैज़ाने मदीना हैदराबाद में तलबा में बयान कर रहे हैं तो कभी उन की तर्बिय्यत फ़रमा रहे हैं, उन्हें **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र, **मदनी इन्आमात** पर अमल और दा'वते इस्लामी के दीगर **मदनी कामों** का जज़्बा दिला रहे हैं, कभी **मदनी बहारें** मुरत्तब कर रहे हैं तो कभी किसी मौज़ूअ़ पर कोई रिसाला लिख रहे हैं, फिर अपने घर को भी वक़्त दे रहे हैं, अपने बच्चों की तर्बिय्यत भी कर रहे हैं, जब बाबुल मदीना कराची जाते तो वहां भी **शैख़े तरीक़त,** अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में हाज़िर होने के साथ साथ कभी किसी **मदनी मश्वरे** में

www.dawateislami.net

शिर्कत कर रहे हैं, कभी किसी पर **इनफ़िरादी कोशिश** कर रहे हैं, कभी फ़ोन पर किसी परेशान हाल की **ग़म ख़्वारी** कर रहे हैं, कभी किसी जगह बयान के लिये जा रहे हैं, कभी **सहरी इजतिमाअ़** में शरीक हो रहे हैं, फिर **शहज़ादए अ़त्तार** ह़ज़रते मौलाना अलहाज अबू उसैद उ़बैद रज़ा अ़त्तारी मदनी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی की सोह़बते बा बरकत भी पा रहे हैं, **अल मदीनतुल इल्मिय्या** में तह़रीरी काम के तअ़ल्लुक़ से वक़्त दे रहे हैं, अल ग़रज़ येह अपने वक़्त को ज़ाएअ़ नहीं करते थे। इन के विसाल के बा'द मुख़्तलिफ़ इस्लामी भाई मुझे फ़ोन कर रहे हैं, s.m.s कर रहे हैं कि ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی हमें फुलां फुलां काम के लिये वक़्त देते थे, वोह तो दुन्या से रुख़्सत हो चुके अब आप वक़्त दे दें, मैं ह़ैरान व परेशान हूं कि इतने सारे काम येह अकेले किस त़रह़ कर लेते थे ! मुझ से तो अपने ह़िस्से के काम भी मुकम्मल नहीं हो पा रहे, अब मज़ीद इन के ह़िस्से के काम मैं क्यूंकर कर पाउंगा ! **अल्लाह** तआ़ला मुझे इन के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ दे। बहर ह़ाल **अल्लाह** तआ़ला ने इन के वक़्त में ऐसी **बरकत** अ़ता फ़रमाई थी कि येह कम वक़्त में ज़ियादा काम कर लिया करते थे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

(52) स्कूल के अवक़ात में राबिता न फ़रमाएं

हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى एक प्राइमरी स्कूल में टीचर थे। मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी व रुक्ने शूरा हाजी अबू माजिद मुहम्मद शाहिद अत्तारी अल मदनी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى का बयान है कि इन्हों ने मुझे और दीगर कई इस्लामी भाइयों को कुछ इस तरह s.m.s किया : "आप मुझ से स्कूल के अवक़ात के इलावा राबिता फ़रमाएं, क्यूंकि मेरा इन से इजारा है। कहीं ऐसा न हो कि फ़ोन पर मेरी गुफ़्तगू उर्फ़ व आदत से ज़ाइद हो जाए और आख़िरत में मेरी गिरिफ़्त हो जाए।"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मर्हूम हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى का येह ख़ौफ़ बिल्कुल बजा था और हर मुलाज़िम को इन की पैरवी करनी चाहिये। इस ज़िम्न में मदनी इल्तिजा है कि दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ 22 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले "**हलाल त़रीक़े से कमाने के 50 मदनी फूल**" का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(53) मदनी क़ाफ़िले में सफ़र का शौक़

हाजी ज़म ज़म रज़ा अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى के बच्चों की अम्मी का बयान है कि आप **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र का बहुत शौक़ रखते थे, आप स्कूल टीचर थे, सालहा साल येह

www.dawateislami.net

मा'मूल रहा कि जैसे ही स्कूल में छुट्टियां होतीं तो दो माह मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र किया करते थे हत्ता कि जिस साल एप्रील में शादी हुई उस साल भी (शादी के एक डेढ़ माह बा'द) जून जूलाई की छुट्टियां होते ही मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बन गए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

(54) ज़म ज़म भाई गिलगित वाले

मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी व रुक्ने शूरा, ह़ाजी अबू रज़ा मुह़म्मद अ़ली अ़त्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي का बयान कुछ यूं है कि गर्मियों की जून जूलाई की छुट्टियों में येह छे या सात बरस तक 63 दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में हैदराबाद से गिलगित (बलतिस्तान) और इस के अत़राफ़ के दुश्वार गुज़ार पहाड़ी अ़लाक़े में सफ़र करते रहे हैं जब कि इन दिनों वहां शदीद सर्दी होती थी, इस दौरान जीपों पर ख़त़रनाक रास्तों से गुज़रते, बा'ज़ अवक़ात एक अ़लाक़े से दूसरे अ़लाक़े में पैदल भी तशरीफ़ ले जाते, इस दौरान पहाड़ों पर चढ़ना पड़ता तो दराज़ गोशों (गधों) पर ज़ादे क़ाफ़िला लाद कर ख़ुद पैदल चला करते थे। गिलगित के मदनी क़ाफ़िलों में बारबार के सफ़र की वजह से येह **"ज़म ज़म भाई गिलगित वाले"** मशहूर हो गए थे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

(55) मदनी क़ाफ़िले में हाजी ज़म ज़म की मदनी बहार

मदनी इन्आमात के ताजदार, महबूबे अत्तार, मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी व रुक्ने शूरा हाजी अबू जुनैद **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی के बयान का लुब्बे लुबाब है : ग़ालिबन सि. 1998 ई. का वाक़िआ है, मेरी अहलिया उम्मीद से थीं, दिन भी "पूरे" हो गए थे। डॉक्टर का कहना था कि शायद **ऑपरेशन** करना पड़ेगा। तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी का बैनल अक़वामी तीन रोज़ा सुन्नतों भरा इजतिमाअ़ (सहराए मदीना मुलतान) क़रीब था। इजतिमाअ़ के बा'द सुन्नतों की तर्बिय्यत के 30 दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में आशिक़ाने रसूल के हमराह सफ़र की निय्यत थी। इजतिमाअ़ के लिये रवानगी के वक़्त, ज़ादे क़ाफ़िला साथ ले कर अस्पताल पहुंचा, चूंकि ख़ानदान के दीगर अफ़राद तआवुन के लिये मौजूद थे, अहलियए मोहतरमा ने अश्कबार आंखों से मुझे सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ (मदीनतुल औलिया मुलतान) के लिये अल वदाअ़ किया।

मेरा ज़ेहन येह बना हुवा था कि अब तो मुझे बैनल अक़वामी सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ और फिर वहां से 30 दिन के मदनी क़ाफ़िले में ज़रूर सफ़र करना है। काश ! इस की बरकत से आफ़िय्यत के साथ विलादत हो जाए। मुझ ग़रीब के पास तो ऑपरेशन के अख़राजात भी नहीं थे ! बहर हाल मैं मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ हाज़िर हो गया। सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में ख़ूब गिड़ गिड़ा कर दुआएं मांगीं। इजतिमाअ़ की इख़्तितामी रिक़्क़त अंगेज़ दुआ के बा'द मैं ने घर पर फ़ोन किया तो मेरी

www.dawateislami.net

अम्मी जान ने फ़रमाया : **मुबारक हो ! गुज़श्ता रात रब्बे काईनात** عَزَّوَجَلَّ **ने बिग़ैर ऑपरेशन के तुम्हें चांद सी मदनी मुन्नी अ़ता फ़रमाई है।** मैं ने खुशी से झूमते हुए अ़र्ज़ की : अम्मी जान ! मेरे लिये क्या हुक्म है ? आ जाऊं या 30 दिन के लिये मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बनू ? अम्मी जान ने फ़रमाया : **"बेटा ! बे फ़िक्र हो कर मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करो।"** अपनी मदनी मुन्नी की ज़ियारत की ह़सरत दिल में दबाए اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं 30 दिन के मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ रवाना हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत की बरकत से मेरी मुश्किल आसान हो गई थी, मदनी क़ाफ़िलों की बहारों की बरकत के सबब घर वालों का बहुत ज़बरदस्त मदनी ज़ेहन बन गया, ह़त्ता कि **मेरे बच्चों की अम्मी का कहना है, जब आप मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर होते हैं तो मैं बच्चों समेत अपने आप को "मह़फ़ूज़" तसव्वुर करती हूं।**

ज़चगी आसान हो, ख़ूब फ़ैज़ान हो — ग़म के साए ढले, क़ाफ़िले में चलो
बीवी बच्चे सभी, ख़ूब पाएं खुशी — ख़ैरिय्यत से रहें, क़ाफ़िले में चलो

(इस्लामी बहनों की नमाज़, स. 292 बित्तग़य्युरे क़लील)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।*
اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

(56) क़ब्र का तसव्वुर

ज़म ज़म नगर हैदराबाद के इस्लामी भाई मुह़म्मद अनीस अ़त्तारी का बयान कुछ यूं है : बहुत अ़र्से पहले की बात है कि

एक मरतबा हम चन्द इस्लामी भाई हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के हमराह कहीं से वापस आ रहे थे, एक जगह पहुंचे तो देखा कि बड़ी पाइप लाइन बिछाने के लिये लम्बाई में खुदाई की गई थी, हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने फ़रमाया कि चलो इस जगह लैट कर खुद को **क़ब्र** में गुमान करते हैं और फ़िक्रे आख़िरत करते हैं, चुनान्चे सारे इस्लामी भाइयों ने गढ़े में लैट कर **क़ब्र** के बारे में "**फ़िक्रे आख़िरत**" करने की सआदत पाई।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! ऐसा करना हमारे अस्लाफ़ से भी षाबित है। चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन ख़ैषम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने अपने घर में क़ब्र खोदी और जब भी अपने दिल में सख़्ती महसूस करते तो क़ब्र में उतर जाते और सुब्ह तक क़ब्र के अहवाल और क़ियामत की मुश्किलात में ग़ौरो फ़िक्र करते। एक मरतबा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस में उतरे और बारबार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान पढ़ते रहे :

قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿۹۹﴾ لَعَلِّيْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا

(پ۱۸، المؤمنون: ۹۹، ۱۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो कहता है ऐ मेरे रब्ब मुझे वापस फैर दीजिये शायद अब मैं कुछ भलाई कमाऊं।*

फिर फ़रमाया : ऐ रबीअ ! हम ने तुझे लौटाया और अब तू दुन्या में है नमाज़ के लिये उठ, येह फ़रमा कर नमाज़ के लिये खड़े हो गए। (تنبیه المغترین ص ۲۸۸)

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(57) गुनाहों से बचने का ज़ेह्न दिया करते

ज़म ज़म नगर (हैदराबाद) के इस्लामी भाई मुहम्मद नईम अत्तारी का बयान है कि हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی की एक ख़ास बात जो मुझे इन की सोहबत से मिली वोह येह थी कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ अकषर व बेशतर फ़रमाया करते थे : "कोशिश कीजिये कि कभी भी गुनाह सरज़द न हो, इस की बरकत से नेकी करने का मौक़अ़ मिलता रहेगा।" हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی इतने नेक होने के बा वुजूद फ़रमाते थे "भाई ! मेरा हाल बहुत बुरा है, बड़ी बद हाली है, नेकियां पास नहीं और गुनाहों का सिलसिला है, मैं इस हालत में मरना नहीं चाहता, मैं चाहता हूं कि जब नेक बन जाउं तब मुझे मौत आए।" येह आप की आजिज़ी थी, नीज़ इस्लामी भाइयों से बार बार इन अल्फ़ाज़ में मुआफ़ी मांगना कि "**मुझे मुआफ़ कर देना**" येह आप की आदत बन चुका था। **अल्लाह** तआला हमें इन के सदक़े नेक बना दे और बिला हिसाब मग़फ़िरत फ़रमाए।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

पच्चीसवीं और छब्बीसवीं की बहारें

﴾महब्बते मुर्शिद बढ़ाने का नुस्ख़ा﴿

मदनी इन्आमात के ताजदार, महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की **शैखे़ तरीक़त** अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से महब्बत मिषाली थी और इन की सोहबत की बरकत से आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से भी बे इन्तिहा अक़ीदत रखते थे, इन दोनों हस्तियों की याद हर माह मनाने के लिये हाजी ज़म ज़म (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم) ने एक पर्चा भी मुरत्तब किया था जिस में इबादत, फ़िक्रे आख़िरत और दा'वते इस्लामी के बहुत से मदनी कामों की तरग़ीब मौजूद है, येह मज़मून जै़ल में पढ़िये और झूमिये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ 25 और 26 तारीख़ को आलमे इस्लाम की दो अज़ीम हस्तियों आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हज़रते अल्लामा मौलाना शाह इमाम **अहमद रज़ा ख़ान** क़ादिरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى और पन्दरहवीं सदी की अज़ीम इल्मी व रूहानी शख़्सिय्यत शैखे़ तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना **मुहम्मद इल्यास अत्तार** क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की निस्बत हासिल है।

۞ **25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र को इमामे अहले सुन्नत** رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰى عَلَيْه **का "यौमे उ़र्स" है।**

۞ **26 रमज़ानुल मुबारक सि. 1369 हि. अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **का "यौमे विलादत" है।** लिहाज़ा हर मदनी माह की

25 तारीख़ को "**उर्से इमामे अहले सुन्नत** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه" और 26 तारीख़ को "**यौमे विलादते अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه" दिये गए त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ मनाने का एहतिमाम कीजिये।

हर माह यौमे रज़ा की धूम

हर मदनी माह की 25 तारीख़ को उ़म्र भर पंज वक़्ता बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने की निय्यत के साथ नमाज़े अ़स्र मअ़ सुन्नते क़ब्लिय्या **पहली सफ़** में अदा फ़रमाएं और निय्यत कर लीजिये कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ुज़ूल बातों से बचने और ख़ामोशी की आ़दत बनाने के लिये अ़स्र ता मग़रिब सिर्फ़ **लिख कर या इशारे** से काम चलाने की कोशिश करूंगा। ज़रूरतन बोलना पड़ा तो कम से कम लफ़्ज़ों में गुफ़्तगू निमटाऊंगा। इस दौरान परेशान नज़री और बद निगाही से बचने की निय्यत से निगाहें झुका कर रखने की आ़दत बनाने के लिये **क़ुफ़्ले मदीना का ऐनक** भी इस्ति'माल करूंगा। अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** में शिर्कत करूंगा या मरीज़ या दुखी की घर या अस्पताल जा कर सुन्नत के मुत़ाबिक़ ग़म ख़्वारी करूंगा और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन तमाम उमूर का षवाब **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه **को ईसाल** करूंगा।

हर माह विलादते अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की धूम

धड़कते दिल के साथ ग़ुरूबे आफ़्ताब के मुन्तज़िर रहें कि "26 वीं शब" की आमद है। नमाज़े मग़रिब पहली सफ़ में मअ़ नफ़्ल अव्वाबीन व सलातुत्तौबा पढ़ कर साबिक़ा तमाम गुनाहों से तौबा कर के आयन्दा ज़िन्दगी "**रिज़ाए रब्बुल अनाम के मदनी काम**" के मुत़ाबिक़ गुज़ारने या'नी अ़त्तार का दोस्त, प्यारा, मह़बूब और मन्ज़ूरे नज़र बनने की निय्यत के साथ "**26 वीं शरीफ़**" का इस्तिक़्बाल

कीजिये। **विलादते अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه की खुशी में **सूरए मुल्क** शरीफ़ व **सूरए यासीन** शरीफ़ की तिलावत के बा'द **फ़िक्रे मदीना** (या'नी मदनी इन्आमात के रिसाले में दिये गए ख़ाने पुर) करते हुए इस त़रह़ **तसव्वुरे मुर्शिद** कीजिये कि **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه मुझ से ब ज़रीअ़ए **मदनी इन्आमात** सुवालात फ़रमा रहे हैं और मैं इन की बारगाह में जवाबात अ़र्ज़ कर रहा हूं। 26 अ़दद मदनी इन्आमात के रिसाले ह़ासिल कर के तक़्सीम और मदनी माह के इख़्तिताम पर वुसूल करने की निय्यत के साथ कुफ़्ले मदीना पेड़ पर आयन्दा माह अपनी **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की तारीख़ भी नोट कीजिये इस मदनी तरकीब के निफ़ाज़ से आप के अ़लाक़े में दा'वते इस्लामी के 2 काम **मदनी क़ाफ़िला** और **मदनी इन्आम** के तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ पर लग जाएंगे और येह बे साख़्ता मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ उड़ना शुरूअ़ कर देंगे। फिर **शजरए आ़लिया** पढ़ कर सिलसिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्त़ारिय्या के मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰه تَعَالٰى के लिये फ़ातिह़ा और **ईसाले षवाब** की तरकीब बनाएं। लंगरे रसाइल (या'नी मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल की तक़्सीम) भी ईसाले षवाब का बेहतरीन ज़रीआ़ है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस तरकीब से तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें हर मदनी माह की **25** और **26** तारीख़ को **यौमे रज़ा** मनाने के साथ साथ **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه के **यौमे विलादत** की बरकतों से भी मुस्तफ़ीज़ हो सकते हैं।

(इस्लामी बहनें ह़स्बे ज़रूरत तरमीम कर लें)

(नोट : पच्चीसवीं छब्बीसवीं का येह पर्चा मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल किया जा सकता है)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अमीरे अहले सुन्नत के मदनी फूल और मदनी इन्आमात

मक्तबतुल मदीना की मजलिस के ज़िम्मेदार इस्लामी भाई हाजी फ़य्याज़ अत्तारी का बयान है कि हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की येह कोशिश होती थी कि शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़ता कर्दा मदनी फूल **मदनी इन्आमात** का हिस्सा बन जाएं और इस्लामी भाइयों को अमल करने का ज़ियादा मौक़अ़ मिले, चुनान्चे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने कई **मदनी इन्आमात** इन की दरख़्वास्त पर तरतीब दिये मषलन अच्छी अच्छी निय्यतें करने वाला मदनी इन्आम, क़िब्ला रुख़ बैठने वाला मदनी इन्आम, मदनी चैनल देखने वाला मदनी इन्आम वग़ैरा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

किस के लिये कितने मदनी इन्आमात ?

पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इल्मी व रूहानी शख़्सिय्यत, शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अत्तार** क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस पुर फ़ितन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के तरीक़ों पर मुश्तमिल शरीअ़त व तरीक़त का जामेअ़ मज्मूआ ब नाम **"मदनी इन्आमात"** इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के

लिये 63, जामिअतुल मदीना के तलबा के लिये 92, तालिबात के लिये 83, मदनी मुन्नों और मदनी मुन्नियों के लिये 40, खुसूसी (या'नी गूंगे और बहरे) इस्लामी भाइयों के लिये 27 **मदनी इन्आमात** ब सूरते सुवालात अता फ़रमाए हैं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(58) महबूबे अत्तार सरापा तरग़ीब थे

मदीनतुल औलिया अहमदाबाद (अल हिन्द) के **मदनी इन्आमात** के ज़िम्मेदार मुहम्मद इम्तियाज़ अत्तारी का बयान है कि हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى "मदनी इन्आमात" के हवाले से मदीनतुल औलिया अहमदाबाद हमारी तर्बिय्यत के लिये आए थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ हमें इन की सोहबते बा बरकत नसीब हुई, हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى वाक़ेई **मदनी इन्आमात के ताजदार** थे, इन में एक ख़ास बात येह देखी कि हमेशा खुद **मदनी इन्आमात** पर अमल करते और अपने रुफ़क़ा को भी ख़ूब ख़ूब अमल की रग़बत दिलाते और साथ ही साथ फ़रमाया करते कि हमे येह ज़ेहन बनाना चाहिये कि **"यक़ीनन मेरा हर अमल तेरी नज़रों से क़ाइम है"** फिर फ़रमाते : हम जो अमल करते हैं वोह सब हमारे पीरो मुर्शिद अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की नज़रे इनायत है, यूं येह मुर्शिदे करीम की तरफ़ सब की तवज्जोह बढ़ाने की कोशिश करते थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ **मदनी इन्आमात के** ताजदार सुन्नतों पर काफ़ी मज़बूती के साथ अमल करते थे, बार बार रग़बत दिलाते कि जब भी तुम्हें कोई सुन्नत नज़र आए या सुन्नत पर अमल

करने का कोई आला नज़र आए या जिस चीज़ के ज़रीए तुम्हें मदनी इन्आमात पर अमल नसीब हो जाए तो उस को देख कर खुशी का इज़्हार करो और ! مَاشَآءَاللّٰه ! سُبْحٰنَ اللّٰه मरहबा ! की सदाएं बुलन्द करो कि سُبْحٰنَ اللّٰه इस के ज़रीए मदनी इन्आमात पर अमल करेंगे इस के ज़रीए सुन्नत पर अमल करेंगे और हमें اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस का षवाब मिलेगा। यूं वोह अपने रुफ़क़ा का **मदनी इन्आमात** पर अमल का जज़्बा बढ़ाया करते थे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

(59) मदनी इन्आमात के लिये इनफ़िरादी कोशिश

जामिअतुल मदीना अत्तारी काबीनात (बाबुल मदीना कराची) के ज़िम्मेदार मदनी इस्लामी भाई सय्यिद मुहम्मद साजिद अत्तारी का बयान है : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं दौरे तालिबे इल्मी से ही "**मदनी इन्आमात की मजलिस**" में बतौरे रुक्न शामिल था और हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى की शफ़्क़तें नसीब होती रहतीं थीं। जब मैं फ़ारिगुत्तहसील हुवा तो मुझे **जामिअतलु मदीना** में मुख़्तलिफ़ तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारियां दी गईं, जिन की बजा आवरी में मसरूफ़ हो गया और **मदनी इन्आमात की** मजलिस में ख़िदमत का सिलसिला मौक़ूफ़ हो गया। जब हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى का पहला ऑपरेशन हुवा और कुछ दिन अस्पताल रहने के बा'द आलमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** बाबुल मदीना कराची में हमारे मक्तब में ही तशरीफ़ फ़रमा हुए, तक़्रीबन पन्दरह दिन के बा'द जैसे ही इन की तबीअत बहाल हुई तो उन्हों ने मुझ पर इनफ़िरादी कोशिश" फ़रमाई कि मैं फिर से **मदनी इन्आमात** की

www.dawateislami.net

मजलिस में फ़ुज़ूल हो जाऊं, अगर्चे दीगर तन्ज़ीमी मसरूफ़िय्यात की वजह से मैं इन के हुक्म पर अमल न कर सका मगर इन की **मदनी इन्आमात** से महब्बत ने दिल में गहरा असर छोड़ा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(60) मदनी इन्आमात के रसाइल तक़्सीम कर रहे थे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! महबूबे अत्तार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار अपनी ज़िन्दगी में तो मदनी इन्आमात की तरक़्क़ी के लिये कोशा रहते ही थे, बा'दे वफ़ात भी ख़्वाब में मदनी इन्आमात के रसाइल बांटते देखे गए, चुनान्चे बाबुल मदीना (कराची) के एक इस्लामी भाई का बयान है: एक रात मैं अपने मा'मूलात से फ़ारिग़ हो कर सोया तो ख़्वाब में क्या देखता हूं कि मर्हूम हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی मेरे सामने तशरीफ़ फ़रमा हैं। इन्हों ने कुछ इस तरह फ़रमाया कि **सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के मुरीदीन के लिये **मदनी इन्आमात** के रसाइल अता फ़रमाए हैं और मुझे हुक्म इरशाद फ़रमाया है कि इन्हें तक़्सीम कर दो, (फिर एक रिसाला मुझे भी अता करते हुए फ़रमाया:) येह आप भी ले लीजिये।

फ़ैज़ाने मदनी इनआमात..... जारी रहेगा। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

(61) सरसब्ज़ व शादाब बाग़

"पाक मजलिस मदनी इन्आमात" के रुक्न का बयान अपने अल्फ़ाज़ व अन्दाज़ में पेशे ख़िदमत है कि "मैं मर्हूम निगराने शूरा हाजी अबू उबैद, मुहम्मद मुश्ताक़ अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के विसाल के बा'द मदनी माहोल में आया। इस्लामी भाइयों से हाजी मुश्ताक़ अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के तक़्वा और परहेज़गारी और इताअ़ते मुर्शिद के बारे में सुनता तो दिल में से एक आह ! निकलती कि ऐ काश ! मैं अपनी ज़िन्दगी में हाजी मुश्ताक़ अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى जैसे मुरीदे कामिल की ज़ियारत से मुशर्रफ़ होता। बहर हाल मैं तन्ज़ीमी तौर पर मुख़्तलिफ़ ज़िम्मेदारियों पर काम करता रहा, ता दमे बयान मैं रुक्ने मजलिसे मदनी इन्आमात पाक सिद्दीक़ी काबीनात की हैषिय्यत से दा'वते इस्लामी के मदनी काम में मसरूफ़े अमल हूं। इस ज़िम्मेदारी पर मुझे काम करते हुए चन्द माह हो गए हैं। महबूबे अत्तार, रुक्ने शूरा हाजी ज़म ज़म रज़ा अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की बहुत ही कम सोहबत पाई। चन्द मदनी मश्वरों में इन की सोहबत से फ़ैज़याब हो पाया। इन की वफ़ात के बा'द येह दिली ख़्वाहिश थी कि मुझे किसी तरह इन के अहवाल मा'लूम हो जाएं। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ 16 रबीउन्नूर सि. 1434 हि. ब मुताबिक़ 16 जनवरी 2013 ई. को रात ख़्वाब में हाजी ज़म ज़म अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى तशरीफ़ ले आए। क्या

देखता हूं कि मर्हूम रुक्ने शूरा ह़ाजी ज़म ज़म रज़ा अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی एक खुशनूमा बाग़ में फूलों से सजी हुई सेज पर तशरीफ़ फ़रमा हैं और कुछ तह़रीर फ़रमा रहे हैं। मैं ने इन से पूछा कि हाजी साहि़ब ! क्या तह़रीर फ़रमा रहे हैं ? तो इरशाद फ़रमाया : "बेटा ! (वोह मुझे ज़िन्दगी में बेटा कह कर ही बुलाते थे) फ़िक्रे मदीना कर रहा हूं।" मैं ने पूछा : "ह़ाजी साहि़ब ! आप को दुन्या से रुख़्सत होने के बा'द येह मक़ाम और मर्तबा कैसे मिला और येह खुशनुमा बाग़ किस का है ? तो इरशाद फ़रमाया : येह मक़ाम और मर्तबा मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करने की वजह से है और येह बाग़ मुझे मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करने की बदौलत **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से **इन्आ़म** में मिला है।" फिर एक **सर्द आह** भरने के बा'द इरशाद फ़रमाया कि काश ! मेरे पीर (या'नी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه) का हर मुरीद 72 **मदनी इन्आ़मात** का आ़मिल बन जाए। इस के बा'द मुझे **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल की तरग़ीब देने लगे। इस के बा'द मेरी आंख खुल गई और वोह सुहाना मन्ज़र याद कर के मैं खुशी से झूमने लगा।

हम को अ़त्तार और महबूबे अ़त्तार से प्यार है
اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दो जहां में अपना बेड़ा पार है

फ़ैज़ाने मदनी इनआ़मात......... जारी रहेगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(62) मुझे मदनी माहोल की बरकतें नसीब हुईं

मदनी चैनल के सिलसिले **"खुले आंख सल्ले अ़ला कहते कहते"** में हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی का अपना बयान कुछ यूं है कि आज कल बा'ज़ लोगों में येह तअष्षुर पाया जाता है कि हम दा'वते इस्लामी के **मदनी माहोल** में जाएंगे तो दुन्या से कट कर रह जाएंगे, हालांकि हरगिज़ ऐसा नहीं, मेरा ज़ाती तजरिबा तो येह है कि मैं ने इन्तिहाई गुर्बत के माहोल में आंख खोली थी, हालत येह थी कि हम एक ऐसे मकान में रहते थे जो दर अस्ल एक गोदाम का हिस्सा था, उस की एक तरफ़ हमारे ताया की फ़ैमीली और दूसरी तरफ़ हमारा घराना रहता था। गुर्बत का येह आ़लम था कि आज के इस तरक़्क़ी याफ़्ता दौर में भी हमारे घर में बिजली न थी, लालटेन से काम चलाते थे। वालिद साहिब घर के वाहिद कफ़ील थे, कई दफ़्आ़ घर में खाना दस्तयाब न होता और फ़ाक़ा करना पड़ता। हमारे वालिद साहिब खुद भी रमज़ान के रोज़े रखते और हम से भी रखवाते थे। मुझे याद है एक दफ़्आ़ सख़्त गर्मियों में माहे रमज़ान तशरीफ़ लाया, उन दिनों आठ आने (या'नी पचास पैसे) या चार आने (या'नी पच्चीस पैसे) की बर्फ़ आती थी लेकिन हमारे पास इतनी गुंजाइश भी नहीं थी कि बर्फ़ ला कर ठंडे पानी से इफ़्तार कर सकें। ईद का मौक़अ़ आया तो नहाने के लिये साबुन तक न था और बरतन मांजने के काले साबुन से नहाने की तरकीब हुई। इस त़रह़ मैं ने शुरूअ़ से गुर्बत का माहोल पाया लेकिन जैसे ही दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल नसीब हुवा, आप यक़ीन करें ऐसे ग़ैबी अस्बाब

हुए कि मैं खुद आज तक हैरान हूं। हम लोग जो पहले ढाई सो रूपे किराए वाले मकान में नहीं रह सकते थे, कुछ ही अर्से बा'द अल्लाह तआला ने ऐसे अस्बाब बनाए कि बी सी (कमेटी) वग़ैरा के ज़रीए हम ने तक़रीबन तीन शादियां निमटाईं। फिर अल्लाह तआला ने ज़ाती मकान भी अ़ता फ़रमा दिया। पेशे के ए'तिबार से मैं एक स्कूल टीचर हूं। मदनी माहोल से पहले मैं ने तक़रीबन नौ साल तक कोशिश की, कि मुझे मुलाज़मत मिल जाए लेकिन काम्याबी न हुई। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ माहोल में आने के बा'द मुझे घर बैठे सरकारी मुलाज़मत मिल गई, इस के लिये ख़ास कोशिश भी नहीं करनी पड़ी। छोटे भाई को भी नोकरी मिली, इस तरह अस्बाब बनते चले गए और सब से बड़ी बात येह कि मुझ जैसा शख़्स जो दो ढाई सो रूपे किराए का मकान न ले सके उसे हज की सआदत और वोह भी **शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के साथ "**चल मदीना**" की सूरत में मिल गई, इस पर तो मेरी नस्लों को भी फ़ख़्र रहेगा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(63) पान वाले पर इनफ़िरादी कोशिश

ज़म ज़म नगर हैदराबाद के इस्लामी भाई मुहम्मद अनीस अत्तारी का बयान है कि तक़रीबन 20 बरस पहले की बात है, हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَارِی के मकान के क़रीब मेरी **पान की दुकान** थी, येह आते जाते मुझे दिखाई देते और

अच्छे लगते थे। एक दिन इन्हों ने मुझ से मुलाक़ात की और **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की दा'वत पेश की, मैं समझता था कि मेरी मसरूफ़िय्यत ऐसी है कि मैं मदनी क़ाफ़िले में हरगिज़ सफ़र नहीं कर सकता, चुनान्चे मैं ने इन से मा'ज़िरत की, लेकिन इन्हों ने मेरा ऐसा ज़ेहन बनाया कि मैं ने अपनी ज़िन्दगी के पहले मदनी क़ाफ़िले में सफ़र इख़्तियार कर लिया, फिर तो राहें खुल गईं और कई साल तक मैं हर माह तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करता रहा और **दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत**, अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत, सदाए मदीना, सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत के ज़रीए़ मदनी माहोल की बरकतें लूटता रहा।

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تعالىٰ على محمَّد

(64) डॉक्टर की मदनी माह़ोल से वाबस्तगी

ज़म ज़म नगर हैदराबाद के अ़लाक़े लत़ीफ़ाबाद में मुक़ीम, पाकिस्तान सत़्ह़ की मजलिसे डॉक्टर्ज़ के निगरान इस्लामी भाई **डॉक्टर निज़ाम अह़मद अ़त्तारी** का बयान अपने अल्फ़ाज़ व अन्दाज़ में पेशे ख़िदमत है। दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले मैं भी मह़ज़ दुन्यावी मालो दौलत की मह़ब्बत में गुम था। डॉक्टर बनने में मेरा मक़्सद दुन्यावी ऐशो आराम ह़ासिल करना था, मैं ने अपनी आंखों में बहुत से ख़्वाब सजा रखे थे कि मैं स्पेश्यालिस्ट (Specialist) बनूंगा और मश्हूर होने के बा'द अपना बड़ा

www.dawateislami.net

अस्पताल बनाऊंगा और ख़ूब माल कमाऊंगा जब कि उख़्रवी तय्यारी का येह ह़ाल था कि नमाज़ों की पाबन्दी थी न गुनाहों से बचने का ज़ेह्न था। रात देर तक दोस्तों के साथ गप-शप और सिगरेटें फूंकना मेरा मा'मूल था। ज़ियादा तर पेन्ट शर्ट में मल्बूस रहता, चेहरे पर दाढ़ी भी न थी। गुस्से का इतना तेज़ था कि छोटी छोटी बातों पर आपे से बाहर हो जाता और घरवालों से भी झगड़ता रहता। जब **मदनी चैनल** ने अपने सिलसिलों का आग़ाज़ किया तो मैं भी कभी कभार मदनी चैनल देख लिया करता था। मैं हैदराबाद के एक अस्पताल में मरीज़ देखने के लिये जाया करता था जो मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना (ऑफ़न्दी टाउन) के नज़्दीक था। मैं अ़स्र की नमाज़ पढ़ने फ़ैज़ाने मदीना (मस्जिद) चला जाता। एक दिन मैं नमाज़ पढ़ कर निकल रहा था कि सह़्न में दा'वते इस्लामी के एक मुबल्लिग़ मिल गए। उन्हों ने बड़ी शफ़्क़त और मह़ब्बत से मुझे सलाम किया, उन का नूरानी चेहरा देख कर मैं फ़ौरन रुक गया। उन्हों ने बड़ी मह़ब्बत से मेरा नाम पूछा और सफ़रे आख़िरत की तय्यारी के ह़वाले से इनफ़िरादी कोशिश की और मुझे **ग़ौषे पाक** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का मुरीद बनने का मश्वरा भी दिया और इस के फ़वाइद भी बताए। उन के प्यार भरे अन्दाज़े गुफ़्त्गू से मैं बहुत मुतअष्षिर हुवा और अपना नाम **शैख़े त़रीक़त**, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ का मुरीद बनने के लिये पेश कर दिया। उन्हों ने मज़ीद मश्वरा दिया कि अपने बच्चों को भी बैअ़त करवा देना चाहिये, मैं ने

ख़ुशी ख़ुशी अपने छोटे बच्चों के नाम भी पेश कर दिये। आख़िर में उन्हों ने मुझे मदनी चैनल देखने और दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे **इजतिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत भी दी जो मैं ने ब ख़ुशी क़बूल कर ली। अपने दीगर डॉक्टर दोस्तों की त़रह़ पहले मैं गाने सुनने और फ़िल्मे देखने का बहुत शौक़ीन था और मेरे घर में भी इन्हीं चीज़ों का रवाज था मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ जैसे ही मैं अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का मुरीद बना मुझे गुनाहों से बेज़ारी सी हो गई और मैं ने फ़िल्मे ड्रामे देखना छोड़ कर सिर्फ़ **मदनी चैनल** देखना शुरूअ़ कर दिया और **सुन्नतों भरे इजतिमाअ़** में भी शरीक होने लगा जिस की बरकत से नमाज़ों की पाबन्दी भी नसीब हो गई। अपने इस मोह़सिन इस्लामी भाई से फ़ैज़ाने मदीना में अकषर मुलाक़ात हो जाती, इन की मुझ पर ख़ुसूसी शफ़्क़त रहती।

वोह मुबल्लिग़ कोई और नहीं बल्कि ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی थे, इन के आ़जिज़ाना अन्दाज़ की वजह से शुरूअ़ शुरूअ़ में मुझे इस बात का इ़ल्म नहीं था कि मेरे येह मोह़सिन वकीले अ़त्तार और दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के रुक्न भी हैं। ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی से जब मुलाक़ात होती तो वोह मुझे मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की भी तरग़ीब देते और **मदनी क़ाफ़िलों** की बरकतें और बहारें सुनाया करते। इन की मुसल्सल इनफ़िरादी कोशिश के नतीजे में बिल आख़िर मैं तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। अपने पहले मदनी क़ाफ़िले में जब मैं रात को सोया तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे ख़्वाब में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

www.dawateislami.net

का दीदार नसीब हो गया। इस मदनी क़ाफ़िले में मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला और ऐसा रूहानी सुरूर महसूस हुवा कि मैं ने बा'द में भी कई मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र किया। यूं रोज़ ब रोज़ मुझ पर मदनी माहोल का रंग चढ़ता गया। हाजी **जम जम रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की ही इनफ़िरादी कोशिश की ब दौलत मदीनतुल औलिया मुलतान में होने वाले सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शिर्कत की सआदत भी मिली। इसी इजतिमाअ में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का बयान **"काले बिच्छू"** सुन कर मैं ने दाढ़ी मुंडाने और दीगर गुनाहों से तौबा की और अपने चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ सजा ली। फिर सहराए मदीना बाबुल मदीना कराची के इजतिमाअ में शरीक हुवा तो वहां पर एक इस्लामी भाई की इनफ़िरादी कोशिश की बरकत से सर पर **सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़** सजा लिया। हर माह तीन दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र अब मेरा मा'मूल बन चुका था। दा'वते इस्लामी से वाबस्ता होने की एक बरकत येह भी नसीब हुई कि पहले मेरे बच्चे अकषर बीमार रहते थे, आए दिन इन को उल्टी और मोशन (दस्त) लग जाते, इन का सीना ख़राब हो जाता और सांस लेने में दुश्वारी होती। इन पर कोई शरबत अषर न करता जिस की वजह से इन्हें ड्रिप और इन्जेक्शन लगाने पड़ते। मेरे मदनी माहोल से वाबस्ता होने के बा'द अब अगर बच्चे बीमार होते भी हैं तो सिर्फ़ दवाई वाला शरबत पीने से ठीक हो जाते हैं। मुझे शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुलाक़ात का बहुत शौक़ था, मेरी खुश नसीबी कि महबूबे अत्तार हाजी **जम जम रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى

www.dawateislami.net

के वसीले से मुझे पन्दरहवीं सदी हिजरी की अज़ीम इल्मी व रूहानी शख़्सिय्यत शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुलाक़ात की सआ़दत नसीब हो गई जिस से मुझे ख़ूब मदनी काम करने का जज़्बा मिला और मैं ने सारी ज़िन्दगी दा'वते इस्लामी से वाबस्ता रहने का अ़ज़्मे मुसम्मम कर लिया। एक ख़ास बात येह भी है कि हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की सोहबत की बरकत से मैं ने आंखों का क़ुफ़्ले मदीना लगाया और लिख कर बात करने की कोशिश शुरूअ़ कर दी। इन की शफ़्क़तों के नतीजे में मैं ने दा'वते इस्लामी की मजलिसे डॉक्टर्ज़ में काबीना सत्ह पर मदनी काम करने की सआ़दत पाई और तरक़्क़ी पाते पाते आज मैं पाकिस्तान सत्ह की मजलिसे डॉक्टर्ज़ (दा'वते इस्लामी) के ख़ादिम (निगरान) के तौर पर डॉक्टर इस्लामी भाइयों में मदनी कामों की धूमें मचाने के लिये कोशां हूं। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़्वाहिश के एह़तिराम में यक मुश्त 12 माह मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की भी निय्यत कर चुका हूं। मेरी तमाम इस्लामी भाइयों बिल ख़ुसूस **डॉक्टर इस्लामी भाइयों** से मदनी इल्तिजा है कि आप भी **दा'वते इस्लामी** के मुश्कबार मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप की ज़िन्दगी में **मदनी इन्क़िलाब** बरपा हो जाएगा, आप के दिल को वोह सुकून मिलेगा जो शायद पहले कभी न मिला होगा, गुनाहों से बचने का ज़ेहन बनेगा और घर का माह़ोल भी **मदीना मदीना** हो जाएगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इनफ़िरादी कोशिश की अहम्मिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन नेकी की दा'वत के काम में **इनफ़िरादी कोशिश** का बड़ा अ़मल दख़्ल है, दा'वते इस्लामी का तक़्रीबन 99% (निनानवे फ़ीसद) मदनी काम **इनफ़िरादी कोशिश** के ज़रीए़ ही मुमकिन है, अकषर **इनफ़िरादी कोशिश**(1) **इजतिमाई कोशिश**(2) से कहीं बढ़ कर मुअष्षिर (مُ۔اَ۔ثْ۔ژ) षाबित होती है क्यूंकि बारहा देखा जाता है कि वोह इस्लामी भाई जो साल हा साल से सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल कर रहा होता है, और दौराने बयान मुख़्तलिफ़ तरग़ीबात मषलन पंजवक़्ता बा जमाअ़त नमाज़, रमज़ानुल मुबारक के रोज़े, इमामा शरीफ़, दाढ़ी मुबारक, ज़ुल्फ़ें, सफ़ैद मदनी लिबास, रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर करने, मदनी तर्बिय्यती कोर्स (63दिन), मदनी क़ाफ़िला कोर्स (41दिन), यकमुश्त 12 माह, 30, 12 या 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र वग़ैरा का सुन कर अ़मली जामा पहनाने की निय्यतें भी कर लेता है मगर अ़मली क़दम उठाने में नाकाम रहता है लेकिन जब कोई मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी उस से मह़ब्बत के साथ मुलाक़ात कर के **इनफ़िरादी कोशिश** करता और नर्मी व शफ़्क़त, तदबीरो ह़िक्मत से इन उमूर की तरग़ीब दिलाता है तो बसा अवक़ात वोह अ़मल करने वाला बनता चला जाता है। गोया **इजतिमाई कोशिश** के ज़रीए़

مـــــــــــدینـــــه

(1) एक को अलग से नेकी की दा'वत देने (या'नी उसे समझाने) को "**इनफ़िरादी कोशिश**" कहते हैं। (2) सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में बयान के ज़रीए़, मस्जिद दर्स, चोक दर्स वग़ैरा के ज़रीए़ मुसलमानों तक नेकी की दा'वत पहुंचाने (या'नी उन्हें समझाने) को "**इजतिमाई कोशिश**" कहते हैं।

www.dawateislami.net

लोहा गर्म किया जाता और **इनफ़िरादी कोशिश** के ज़रीए इस पर मदनी चोट लगा कर इसे मदनी सांचे में ढाला जाता है। **याद रखिये** ! इजतिमाई कोशिश के मुक़ाबले में **इनफ़िरादी कोशिश** बेहद आसान है क्यूंकि कषीर इस्लामी भाइयों के सामने "बयान" करने की सलाहिय्यत हर एक में नहीं होती जब कि **इनफ़िरादी कोशिश** हर एक कर सकता है ख़्वाह उसे बयान करना न भी आता हो। **इनफ़िरादी कोशिश** के ज़रीए ख़ूब ख़ूब नेकी की दा'वत दीजिये और षवाब का ख़ज़ाना लूटिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى علٰى محمَّد

(65) सफ़रे मदीना

हाजी **जम जम रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى को 1997 में **शैख़े तरीक़त**, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के साथ "**चल मदीना**" के क़ाफ़िले में सफ़रे हज नसीब हुवा, इस क़ाफ़िले में मर्हूम निगराने शूरा बुल बुले रौज़ए रसूल अलहाज क़ारी अबू उबैद मुश्ताक़ अहमद अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى भी शामिल थे। इस क़ाफ़िलए चल मदीना में शामिल हैदराबाद के एक इस्लामी भाई मुहम्मद फ़ारूक़ जीलानी अत्तारी का बयान है कि जब हम मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** على صاحِبِهَا الصَّلوٰةُ وَالسَّلام के क़रीब पहुंचे और अब उस मक़ाम पर जाना था जहां पर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बड़े प्यारे अन्दाज़ में इस्लामी भाइयों के झुके हुए सर अपने हाथ से थोड़ा ऊपर करते और **सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद** की ज़ियारत करवाते, जब इस्लामी भाई उस जगह जाने लगे तो हाजी **जम जम रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى वहीं रुक गए और मेरे दरयाफ़्त करने पर फ़रमाया : प्यारे भाई ! यहां तक आ जाना ही मेरे लिये बड़ी सआदत की

बात है, मेरी आंखें इस क़ाबिल नहीं हैं कि सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद देख सकें, मैं ने बारहा इन से कहा लेकिन येह नहीं गए और यूं ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى चल मदीना होने के बा वुजूद सब्ज़ गुम्बद देखे बिग़ैर वत़न वापस आ गए !

नज़र भर कर तो देख लूं मैं गुम्बदे ख़ज़रा
पए शैख़ैन इस क़ाबिल बनाना या रसूलल्लाह

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मशहूर आ़शिक़े रसूल अ़ल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी का अन्दाज़े अदब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की इस अदा में **आ़शिक़े रसूल अ़ल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى का रंग झलकता है, चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 328 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात**" के सफ़ह़ा 149 पर है : ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, फ़क़ीहे आ'ज़म, ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू यूसुफ़ मुह़म्मद शरीफ़ मुह़द्दिषे कोटलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : एक मरतबा जब मैं ह़ज करने गया तो मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की ह़ाज़िरी में सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के दीदार से मुशर्रफ़ होते वक़्त मैं ने "बाबुस्सलाम" के क़रीब और **गुम्बदे ख़ज़रा** के सामने एक सफ़ेद रीश और इन्तिहाई नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग को देखा जो क़ब्रे अन्वर की जानिब मुंह कर के दो ज़ानू बैठे कुछ पढ़ रहे थे। मा'लूम करने पर पता चला कि येह मशहूरो मा'रूफ़ आ़लिमे दीन और ज़बरदस्त आ़शिक़े रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِى

www.dawateislami.net

हैं। मैं उन की वजाहत और चेहरे की नूरानिय्यत देख कर बहुत मुतअष्षिर हुवा और उन के क़रीब जा कर बैठ गया और उन से गुफ़्त्गू की कोशिश की, वोह मेरी जानिब मुतवज्जेह न हुए तो मैं ने उन से कहा : मैं हिन्दुस्तान से आया हूं और आप की किताबें हुज्जतुल्लाहि अ़लल आ़लमीन और जवाहिरुल बिह़ार वग़ैरा मैं ने पढ़ी हैं जिन से मेरे दिल में आप की बड़ी अ़क़ीदत है। उन्हों ने येह बात सुन कर मेरी त़रफ़ मह़ब्बत से हाथ बढ़ाया और मुसाफ़ह़ा फ़रमाया। मैं ने उन से अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप क़ब्रे अन्वर से इतनी दूर क्यूं बैठे हैं ? तो **रो पड़े** और फ़रमाने लगे : **"मैं इस लाइक़ नहीं हूं कि क़रीब जा सकूं"** इस के बा'द मैं अकषर उन की जाए क़ियाम पर ह़ाज़िर होता रहा और उन से "सनदे ह़दीष" भी ह़ासिल की। सय्यिदी **क़ुत़्बे मदीना** ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ ज़ियाउद्दीन अह़मद मदनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अ़ल्लामा यूसुफ़ नब्हानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی की अहलियाए मोह़तरमा رحمۃاللہ تعالی علیھا को **84 मरतबा नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान, शहनशाहे कौनो मकान** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **की ज़ियारत का शरफ़ ह़ासिल हुवा है।** (अन्वारे क़ुत़्बे मदीना, स. 195 मुलख़्ख़सन)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالیٰ عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالیٰ علیٰ محمَّد

उन के दियार में तू कैसे चले फिरेगा ?

अत्तार तेरी जुरअत ! तू जाएगा मदीना !!

(वसाइले बख़्शिश, स. 320)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالیٰ علیٰ محمَّد

www.dawateislami.net

(66) रूमाल पर अशआर लिख कर मदीने शरीफ़ भेजे

ज़म ज़म नगर हैदराबाद के इस्लामी भाई मुहम्मद अनीस अत्तारी का बयान है कि तक़रीबन 18 साल पहले का वाक़िआ है एक सय्यिद साहिब मदीना शरीफ़ जा रहे थे तो हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने उन से मुलाक़ात की और एक रूमाल दिया जिस में कुछ अश्आर सरकारे मदीना सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश करने के लिये लिखे गए थे। हाजी ज़म ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने उन सय्यिद साहिब से अर्ज़ की, कि आप येह रूमाल सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश कीजियेगा और जो अश्आर मैं ने लिखे हैं मेरी त़रफ़ से पढ़ कर सुना दीजियेगा। वोह सय्यिद साहिब जब मदीना शरीफ़ से वापस हुए तो मेरी उन से मुलाक़ात हुई, उन्हों ने कहा : मैं हैरान हूं कि जब सुन्हरी जालियों के रू बरू हाज़िर हुवा और वोह रूमाल जैसे ही पढ़ना शुरूअ़ किया कि वहां का दरबान मेरे पास आ गया और मेरा हाथ पकड़ कर सुन्हरी जालियों के बिल्कुल नज़दीक ले गया और कहा कि अब पढ़ो ! मैं हैरान था कि येह क्या मुआ़मला है हालांकि वोह तो वहां ज़ियादा देर खड़ा ही नहीं होने देते, **फिर मेरे दिल में येह बात आई कि लगता है बारगाहे रिसालत** علٰى صاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلام **में ज़म ज़म भाई का बड़ा मक़ाम है कि वोह ब ज़ाहिर दूर हैं लेकिन सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **के बड़े नज़दीक हैं।**

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदके हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

गमे मुस्तफ़ा जिस के सीने में है
गो कहीं भी रहे वोह मदीने में है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(67) उसे ग़ौसे पाक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق की ज़ियारत हुई थी

ज़म ज़म नगर हैदराबाद के इस्लामी भाई मुहम्मद अनीस अत्तारी का बयान है कि हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی बहुत मिलनसार, नर्म ख़ू, बुर्दबार, अच्छी आदतों वाले, इन्तिहाई सन्जीदा तबीअत, मुआमला फ़हम और काफ़ी ज़हीन थे। हर किसी के लिये अच्छे जज़्बात और मदनी सोच के हामिल थे। अमीरे अहले सुन्नत की सोहबते बा बरकत का इन को ऐसा फ़ैज़ान मिला था कि एक इस्लामी भाई से हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی की मुलाक़ात हुई तो आप की नज़र उन के चेहरे पर पड़ी, फ़रमाया : "आप के चेहरे से ऐसा लगता है कि रात आप को बहुत अच्छी ज़ियारत हुई है।" वोह इस्लामी भाई हैरान हो गए और जवाब दिया : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मुझे रात हुज़ूर ग़ौसे पाक (عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق) की ज़ियारत हुई है।**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदके हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

(68) मरज़ुल मौत में भी दूसरे मरीज़ की दिलजोई

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अता कर्दा नेक बनने के नुस्खे **"मदनी इन्आमात"** में से एक मदनी इन्आम मरीज़ की इयादत का भी है और बीमार की इयादत करना भी बड़े अज्रो षवाब का काम है, हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर और हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है : जिस ने मरीज़ की इयादत की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर पछत्तर हज़ार मलाइका के ज़रीए साया फ़रमाएगा और घर वापस आने तक उस के हर क़दम उठाने पर उस के लिये एक नेकी लिखी जाएगी और उस के हर क़दम रखने पर उस का एक गुनाह मिटा दिया जाएगा और एक दरजा बुलन्द किया जाएगा, जब वोह मरीज़ के साथ बैठेगा तो रहमत उसे ढांप लेगी और अपने घर वापस आने तक रहमत उसे ढांपे रहेगी।

(الترغيب والترهيب حديث ١٣، ج ٤، ص ١٦٥)

मदनी इन्आमात के ताजदार, महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى षवाब के हरीस थे, जब भी किसी मरीज़ की इयादत का मौक़अ मिलता ज़रूर करते, चुनान्चे जामिअतुल मदीना (फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची) के दरजए षालिषा के तालिबे इल्म मुहम्मद शान अत्तारी का बयान अपने अन्दाज़ व अल्फ़ाज़ में पेशे ख़िदमत है : रमज़ान 1433 हि. में हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى सख़्त बीमारी की वजह से फ़ैज़ाने मदीना के मुस्तश्फ़ा (अस्पताल) में दाख़िल थे। इसी दौरान मैं भी शदीद अलालत की बिना पर मुस्तश्फ़ा में दाख़िल हुवा। मैं येह देख कर हैरान रह गया कि जूंही इन

की तबीअत ज़रा संभली येह मेरे पास मेरी इयादत के लिये पहुंच गए और मेरी ग़मख़्वारी की, मुझे अवरादो वज़ाइफ़ बताए। जब अल मदीनतुल इल्मिय्या के एक मदनी इस्लामी भाई मर्हूम रुक्ने शूरा हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى की इयादत व देख-भाल के लिये मुस्तश्फ़ा में तशरीफ़ लाए तो उन को मेरे बारे में बताया कि येह जामिआ के तालिबे इल्म बेचारे बीमार पड़े हैं बराए करम ! किसी की तरकीब फ़रमाएं जो इन को खाना वग़ैरा तो खिला सके। बहर हाल उन मदनी इस्लामी भाई ने हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى के फ़रमाने पर हाथों हाथ एक तालिबे इल्म की तरकीब बनाई। मरीज़ तालिबे इल्म का बयान है कि खुद बीमार होने के बा वुजूद महबूबे अत्तार की ग़म ख़्वारी और ख़ैर ख़्वाही के मुआमलात देख कर मैं बहुत ही मुतअस्सिर हुवा और **दा'वते इस्लामी की महब्बत** मेरे दिल में पहले से कहीं ज़ियादा हो गई।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى علٰى محمَّد

(69) फ़ोन कर के ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करते

मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी व रुक्ने शूरा हाजी अबू मीलाद बरकत अली अत्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى का बयान है कि हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى के विसाल से तक़रीबन 6 माह पहले मेरी मदनी मुन्नी बीमार हुई तो इन्हों ने बारहा फ़ोन कर के उस की ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त की और मेरी दिलजोई

www.dawateislami.net

फ़रमाई। इसी त़रह़ जब मेरे पास ग़मज़दा इस्लामी भाइयों के फ़ोन आते तो मैं इन की ग़म ख़्वारी करने के बा'द इन्हें **"रूह़ानी इलाज"** के लिये ज़रूरतन ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى की त़रफ़ भेज दिया करता था। येह न सिर्फ़ उन की परेशानी सुनते बल्कि इस के ह़ल के लिये ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या की तरकीब भी बनाते। बा'द में उस इस्लामी भाई से मेरी बात होती तो वोह ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى के लिये बड़े अच्छे जज़्बात का इज़्हार करते कि مَاشَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन्हों ने हमारे साथ बहुत तआ़वुन किया है।

अल्लाह *عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالیٰ علیه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعالیٰ علیٰ محمَّد

(70) केन्सर के मरीज़ की इ़यादत

रुक्ने शूरा ह़ाजी अबू रज़ा मुह़म्मद अ़ली अ़त्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى का बयान है कि सरदाराबाद (फ़ैसलाबाद पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई आसिफ़ अ़त्तारी के दस साला बेटे को केन्सर का मरज़ था। ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى के विसाल के बा'द वोह इस्लामी भाई निहायत अफ़्सुर्दा और ग़मगीन थे उन के येह तअष्षुरात थे कि ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى मेरी बहुत ढारस बंधाते थे, जब कभी सरदाराबाद में मदनी मश्वरे के लिये तशरीफ़ लाते तो मसरूफ़िय्यात के बा वुजूद मेरे बेटे की इ़यादत के लिये तशरीफ़ लाते, उसे दम फ़रमाते, उस की सिह़्ह़त याबी की दुआ़ करते

और मेरी हिम्मत बढ़ाते थे। उस का टेस्ट होने से पहले और बा'द में मुझ से मा'लूमात किया करते। बापा से दुआ़ की दरख़्वास्त करते, शहज़ादए अ़त्तार ह़ज़रते मौलाना अलह़ाज अबू उसैद उ़बैद रज़ा मदनी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی से दुआ़ करवाते, उन से फ़ोन पर मेरी बात करवा देते। आख़िरी मरतबा मेरे बेटे की इ़यादत के लिये तशरीफ़ लाए तो मेरे बेटे को पेन्सिल तोह़फ़े में पेश की थी। अल ग़रज़ ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى सगे भाइयों की त़रह़ मेरी दिलजोई किया करते थे। इन के जाने के बा'द मैं गोया तन्हा रह गया हूं। **अल्लाह** तआ़ला इन पर अपनी रह़मत व रिज़्वान की बारिशें बरसाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(71) मेरी इ़यादत के लिये सब से ज़ियादा फ़ोन इन्हों ने किये

मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी व रुक्ने शूरा, अबू बिलाल मुह़म्मद रफ़ीअ़ अ़त्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی का बयान है कि मैं कमो बेश एक साल पहले (1432 हि.) में हिपेटाइटिस c के मरज़ में मुब्तला हुवा तो मेरी इ़यादत व दिलजोई के लिये मुख़्तलिफ़ इस्लामी भाइयों ने फ़ोन किये मगर **सब से ज़ियादा फ़ोन ह़ाजी ज़म ज़म रज़ा अ़त्तारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى **ने किये**।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

(72) फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स के त़ालिबे इल्म की इयादत

अ़त्तार नगर (ननकाना पाकिस्तान) के इस्लामी भाई ज़ाहिद अ़त्तारी का बयान कुछ यूं है कि मैं 1433 हि. में आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में होने वाले "**फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स**" में शरीक था कि मेरी त़बीअ़त ख़राब हो गई और मुझे फ़ैज़ाने मदीना के मुस्तश्फ़ा (अस्पताल) में दाख़िल कर लिया गया तो हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى मेरी इयादत के लिये तशरीफ़ ले आए। मैं अपनी ख़ुश नसीबी पर झूम उठा। अगले दिन फिर तशरीफ़ लाए और मेरी इयादत व दिलजोई की। मुझे इन का मरीज़ की इयादत वाले मदनी इन्आ़म पर अ़मल करना बहुत अच्छा लगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى को जन्नतुल फ़िरदौस अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

(73) पुराने रफ़ीक़ की इयादत

ज़म ज़म नगर हैदराबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के इस्लामी भाई मुह़म्मद अनीस अ़त्तारी का बयान है कि मुझे त़वील अ़र्सा महबूबे अ़त्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की सोह़बत में रहने का शरफ़ ह़ासिल है, बा'ज़ अवक़ात मैं अपने घरेलू मुआ़मलात की वजह से शदीद परेशान हो जाता तो येह मेरी ढारस बंधाया करते थे, मैं ने इन को बहुत बा अ़मल पाया। फिर मैं ने रिहाइश कहीं और मुन्तक़िल कर ली, यूं तक़रीबन 10 साल इन का क़ुर्ब न पा सका। अक्तूबर 2011 में मेरा

www.dawateislami.net

हैदराबाद में ऑपरेशन हुवा तो हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى मेरी इयादत के लिये अस्पताल पहुंचे लेकिन मैं घर में शिफ़्ट हो चुका था, मैं ने फ़ोन पर इन से दरख़्वास्त की, कि आप बहुत मसरूफ़ होते हैं आने की ज़हमत न फ़रमाएं, आप का फ़ोन कर देना ही काफ़ी है लेकिन येह मेरी इयादत के लिये काफ़ी दूर घर पर आ गए, बा'द में भी कई मरतबा तशरीफ़ लाए जिस से मेरा दिल बहुत खुश हुवा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِىِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

(74) सहरी पेश की

कुवैत में मुक़ीम एक इस्लामी भाई सि. 1433 हि. के रमज़ानुल मुबारक में होने वाले इजतिमाई ए'तिकाफ़ में शरीक होने के लिये दा'वते इस्लामी के आलमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** बाबुल मदीना (कराची) आए। बीमारी की वजह से उन्हें मुस्तश्फ़ा में दाखि़ल होना पड़ा, जहां महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى भी दाखि़ल थे। उस इस्लामी भाई का कुछ यूं बयान है कि जब रात को मेरी तबीअत ज़रा संभली और मेरी आंख खुली तो देखा सहरी का वक़्त बहुत कम रह गया था। हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى बेदार हुए और मुझे परेशान देख कर क़रीब आए, मेरा हाल अहवाल दरयाफ़्त करने पर जब इन्हें पता चला

कि मैं सहरी के हवाले से तशवीश में हूं तो अपने पास मौजूद बिस्किट, जूस और स्लाइस वग़ैरा मेरे पास ले आए और सहरी के लिये पेश कर दिये, मैं ने बहुतेरा मन्अ़ किया मगर इन के महब्बत भरे इसरार पर मुझे वोह चीज़े लेनी पड़ीं, यू हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने बीमारी की हालत में भी मेरी **ख़ैर ख़्वाही** फ़रमाई।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(75) अपना लिहाफ़ मुझे पेश कर दिया

मजलिसे ख़ुसूसी इस्लामी भाई के एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई मुहम्मद यासिर अत्तारी के बयान का लुब्बे लुबाब है कि एक मरतबा बाबुल इस्लाम (सिन्ध, पाकिस्तान) से मर्कज़ुल औलिया मुलतान शरीफ़ (पंजाब, पाकिस्तान) में मदनी मश्वरे में हाज़िरी हुई, मदनी मश्वरे के इख़्तिताम पर महबूबे अत्तार रुक्ने शूरा हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने मुझ से दरयाफ़्त फ़रमाया : आप अपना बिछौना साथ लाए हैं ? मैं ने नफ़ी में जवाब दिया। इसरार कर के फ़रमाने लगे : "**आप मेरा लिहाफ़ ले लीजिये।**" इस के इलावा भी इन की दीगर शफ़्क़तों ने मुझे बहुत मुतअस्सिर किया, वोह दिन और आज का दिन है मैं ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों में मदनी कामों की धूमें मचाने में मसरूफ़ हूं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(76) जामिअतुल मदीना के तालिबुल इल्म की खैर ख़्वाही

जामिअतुल मदीना फ़ैज़ाने मदीना ऑफ़न्दी टाऊन हैदराबाद के एक तालिबुल इल्म का बयान कुछ यूं है कि मैं जामिअतुल मदीना के इम्तिहान दे रहा था कि अचानक मेरा बल्ड प्रेशर Low हो गया। जिस पर मैं उस्ताद साहिब से इजाज़त ले कर जूस वग़ैरा लेने के लिये फ़ैज़ाने मदीना की सीढ़ियों से उतर रहा था कि महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى तशरीफ़ लाते हुए नज़र आए। इन्हों ने मेरी ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त की तो मैं ने इन्हें बताया कि मेरा ब्लड प्रेशर Low हो रहा है। इन्हों ने फ़रमाया : आप बाहर न जाएं बल्कि जामिआ में जा कर आराम कर लें मैं कुछ करता हूं। मैं हस्बे इरशाद जामिआ में आराम करने के लिये चला गया। थोड़ी ही देर बा'द हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने जूस और ग्लूकोज़ मंगवा कर मुझे भेजा जो मैं ने पी लिया। फिर आप खुद मेरी इयादत के लिये तशरीफ़ ले आए और फ़रमाया : "इफ़ाक़ा होते ही मुझे बता दीजियेगा।" इस तालिबे इल्म का कहना है कि मैं इन के इस अन्दाज़ से बहुत मुतअष्षिर हुवा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(77) बीमारी के आलम में भी महरूम नहीं लौटाया

दा'वते इस्लामी की "मजलिसे इस्लाह बराए क़ैदियान" के पाकिस्तान सत्ह के निगरान इस्लामी भाई हाजी सलीम मून अत्तारी का बयान है कि रमज़ानुल मुबारक 1433 हि.

www.dawateislami.net

में "कैदियों के लिये 52 मदनी इन्आमात" के सिलसिले में हाजी **जम जम रजा** अत्तारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی की खिदमत में हाजिर हुवा, उस वक्त येह फैजाने मदीना बाबुल मदीना कराची के मुस्तश्फा (अस्पताल) में दाखिल थे, जब मैं ने देखा कि येह तो सख्त बीमार हैं और ड्रिप लगी हुई है तो मैं दुआ सलाम के बा'द अपना मस्अला बयान किये बिगैर वापस जाने के लिये मुड़ गया, इन्हों ने मुझे रोका और फरमाया कि आप शायद किसी काम से आए थे, तशरीफ रखिये। फिर इन्हों ने न सिर्फ मेरी अर्ज तवज्जोह से सुनी बल्कि इस बारे में मुफीद मश्वरे भी दिये।

***अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदके हमारी बे हिसाब मगफिरत हो।*

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मुसलमान की हाजत रवाई करना कारे षवाब है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसलमान की हाजत रवाई करना कारे षवाब है मषलन उस को रास्ता बता देना, सामान उठाने में उस की मदद कर देना या उस की कोई जरूरत पूरी कर देना, अल गरज किसी भी तरह से उस के काम आने की बड़ी फजीलत है, शहनशाहे मदीना, करारे कल्बो सीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फरमाया : मुसलमान मुसलमान का भाई है, न उस पर जुल्म करता है और न ही उसे रुसवा करता है और जो कोई अपने भाई की हाजत पूरी करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस

की ह़ाजत पूरी फ़रमाता है और जो किसी मुसलमान की एक परेशानी दूर करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत की परेशानियों में से उस की एक परेशानी दूर फ़रमाएगा।

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلة، باب تحریم الظلم، ص١٣٩٤، الحدیث: ٢٥٨٠)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर इस गए गुज़रे दौर में हम सब एक दूसरे की ग़मख़्वारी में लग जाएं तो आनन फ़ानन दुन्या का नक़्शा ही बदल कर रह जाए। लेकिन आह ! अब तो भाई भाई के साथ टकरा रहा है, आज मुसलमान की इ़ज़्ज़त व आबरू और उस के जानो माल मुसलमान ही के हाथों पामाल होते नज़र आ रहे हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें नफ़रतें मिटाने और मह़ब्बतें बढ़ाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ह़ाजत रवाई का जज़्बा

ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی के बच्चों की अम्मी का कहना है कि मर्ह़ूम को दुख्यारों की ह़ाजत रवाई और माली इम्दाद का बहुत जज़्बा था, ख़ुद तो ग़रीब थे मगर मुख़य्यर इस्लामी भाइयों के ज़रीए ज़रूरत मन्दों की माली मुश्किलात ह़ल फ़रमा देते और रिया से बचने के लिये इसे छुपाने की भी तरकीब फ़रमाते, मुझ से भी छुपाते अलबत्ता कभी कभी बाहर से मा'लूम हो जाता।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

(78) वलीमे में ज़ियादा रक़म दिलवाई

दा'वते इस्लामी के एक तन्ज़ीमी ज़िम्मेदार का बयान है कि एक मरतबा मैं और हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى किसी इस्लामी भाई के वलीमे में जा रहे थे। मेरी चूंकि इन से थोड़ी बे तकल्लुफ़ी थी, इस लिये मुझ से दरयाफ़्त किया कि आप ने "सलामी" में कितनी रक़म दुल्हा को पेश करने की निय्यत की है? जब मैं ने रक़म बताई तो तरग़ीबन इरशाद फ़रमाया कि बे चारे माली तौर पर कमज़ोर हैं और जिन हालात में इन्हों ने शादी की है मुझे मा'लूम है, अगर हो सके तो आप कुछ ज़ियादा रक़म पेश कर दीजिये। चुनान्चे मैं ने इन्ही से मश्वरा कर के सलामी की रक़म दुगनी कर दी और लिफ़ाफ़े में डाल कर दुल्हा को पेश कर दी।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(79) शायद मैं जामिआ छोड़ देता

जामिअतुल मदीना फ़ैज़ाने मदीना ज़म ज़म नगर हैदराबाद के दौरए हदीष के तालिबुल इल्म हैदर रज़ा अत्तारी के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मैं जिस वक़्त दर्से निज़ामी के दरजए षालिषा में था तो मुझे कुछ ऐसी ज़ाती परेशानियां पेश आईं कि मुझे लगता था कि शायद पढ़ने का सिलसिला मौक़ूफ़ करना पड़ेगा। उस वक़्त मैं ने मदनी इन्आमात के ताजदार, महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى से अपनी परेशानी का ज़िक्र किया तो इन्हों ने न सिर्फ़ मेरी ढारस बंधाई

www.dawateislami.net

बल्कि मेरा मस्अला हल करने की भी तरकीब फ़रमाई। इस के बा'द भी हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی मुझ से गाहे बगाहे मा'लूमात लेते रहते और मदनी कामों बिल खुसूस मदनी इन्आमात का जज़्बा दिलाते रहते। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह बयान देते वक्त (मुहर्रमुल हराम सि. 1434 हि.) में जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने मदीना (हैदराबाद) में दौरए हदीष का तालिबुल इल्म हूं और **जामिअ़तुल मदीना** हैदराबाद में मदनी इन्आमात की धूमें मचाने के लिये कोशां हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदके हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

(80) दुख्यारों की हाजत रवाई की झलकियां

दा'वते इस्लामी की मजलिस, अल मदीनतुल इल्मिय्या के मदनी इस्लामी भाई का बयान है कि मैं ने खुद कई मरतबा हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی को दुख्यारों की हाजत रवाई करते हुए देखा है। चन्द मिषालें अ़र्ज़ करता हूं : ❁ एक मरतबा एक नौ मुस्लिम को सात या आठ हज़ार रूपे पेश किये ❁ एक मदनी इस्लामी भाई का (दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना के फ़ारीगुत्तहसील तलबा "मदनी" कहलाते हैं) तक्रीबन 8000 का क़र्ज़ बिग़ैर मुतालबे के चुकाया। ❁ एक और मदनी इस्लामी भाई को बिला मुतालबा तक्रीबन 32000 क़र्ज़ की अदाएगी के लिये पेश किये। ❁ चन्द साल पहले मेरा कुछ ज़मीन ख़रीदने का ज़ेहन बना लेकिन रक़म कम होने की वजह से मैं ने मन्अ़ कर दिया हालांकि

ज़मीन बहुत सस्ती मिल रही थी जब इन को मा'लूम हुवा तो मेरे तलब किये बिग़ैर पुर ज़ोर इसरार कर के ग़ालिबन बीस हज़ार की रक़म मेरे घर आ कर बतौरे क़र्ज़ पेश कर दी, मैं ने बहुत इन्कार किया मगर इन की शफ़क़त मरहबा ! मुझे वोह रक़म क़बूल करनी ही पड़ी । ۞ अपने एक ग़रीब रिश्तेदार की माहाना तक़रीबन 3000 रूपिये माली मदद किया करते थे । ۞ इस के इलावा भी मेरे सामने कई दुख्यारों के इन को फ़ोन आते जिन की येह न सिर्फ़ दिलजोई फ़रमाते बल्कि मक्तबतुल मदीना के मतबूआ रिसाले "**रूहानी इलाज**" से कोई वज़ीफ़ा भी बता दिया करते और ता'वीज़ाते अत्तारिय्या के बस्ते से रुजूअ करने का मश्वरा देते ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(81) सर का दर्द ख़त्म हो गया

फ़ारूक़ नगर (लाड़काना, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई मुहम्मद फ़ारूक़ अत्तारी का बयान है कि जिन दिनों में नसीराबाद डिवीज़न का ज़िम्मेदार था, हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی हमारी तर्बिय्यत फ़रमाने के लिये "नसीराबाद" तशरीफ़ लाए । मुझे बचपन ही से **दर्दे सर का आरिज़ा** लाहिक़ था, काफ़ी इलाज करवाया मगर मुस्तक़िल आराम न आया, चुनान्चे मैं ने हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی की बारगाह में अर्ज़ की : मुझे दर्दे सर रहता है । मर्हूम ने शफ़क़त फ़रमाते हुए उसी वक़्त **दम** फ़रमाया,

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हाजी ज़म ज़म के दम की बरकत से मेरा पुराना मरज़ जाता रहा और ता दमे तहरीर (या'नी सि. 1433 हि. में) 6 साल हो चुके हैं लेकिन मुझे दोबारा दर्दे सर नहीं हुवा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बीमार ! क्यूं मायूस है तू हुस्ने यक़ीं से
दम जा के करा ले किसी बीमारे नबी से

(वसाइले बख़्शिश, स. 201)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(82) ग़मज़दों की दिलजोई

मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी व रुक्ने शूरा हाजी मुहम्मद अ़ली अ़त्तारी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی का बयान कुछ यूं है कि हाजी ज़म ज़म रज़ा अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی फ़ैज़ाने मदीना हैदराबाद में मौजूदगी की सूरत में हत्तल मक़्दूर अ़स्र ता इ़शा ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या के बस्ते पर आने वाले ग़मज़दों और परेशान हालों से मुलाक़ात कर के, उन की दिल जोई व ग़म ख़्वारी करते, उन से ता'ज़िय्यत करते और **इनफ़िरादी कोशिश** फ़रमाते। एक और इस्लामी भाई का बयान है कि मैं ने बार हा देखा कि **हाजी ज़म ज़म रज़ा अ़त्तारी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या के बस्ते पर तशरीफ़ लाते तो वहां किसी न किसी मरीज़ के साथ बैठ कर उस की दिल जोई फ़रमाते रहते थे। कई मरतबा इस कुढ़न का इज़्हार फ़रमाते कि अगर तमाम तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारान ऐसे इस्लामी भाइयों पर इनफ़िरादी कोशिश किया करें तो بحمدہ تعالٰی बहुत सारे इस्लामी भाई मदनी क़ाफ़िले के लिये तय्यार हो जाएं।

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदके़ हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।
اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(83) बीमारी में भी दुख्यारों की ख़ैर ख़्वाही

मजलिसे मदनी बहारों के पाकिस्तान सत्ह़ के निगरान, मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ह़ाजी मुह़म्मद इम्तियाज़ अ़त्तारी का बयान है कि मैं फै़ज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची के मुस्तश्फ़ा (अस्पताल) में ह़ाजी **जम जम रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की इयादत के लिये मौजूद था कि अचानक इन की त़बीअ़त बिगड़ी और सारा जिस्म निहायत शिद्दत से कांपने लगा, डॉक्टर ने इन को इन्जेक्शन लगाया, थोड़ी देर बा'द कप-कपी जाती रही और इन की त़बीअ़त कुछ संभल सी गई, उसी वक़्त एक इस्लामी भाई का फ़ोन आया, इन्हों ने न सिर्फ़ फ़ोन सुना बल्कि उन की परेशानी सुन कर उन की दिलजोई की और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले **"रूह़ानी इलाज"** से वज़ाइफ़ भी बताए। मैं ने येह देख कर अ़र्ज़ की, कि हुज़ूर आप की तो अपनी त़बीअ़त नासाज़ है, फ़िलह़ाल फ़ोन रिसीव (Receive) न किया करें तो कुछ इस त़रह़ फ़रमाया :

"बेचारे दुख्यारे कितनी आस से फ़ोन करते होंगे मैं इन की दिलजोई की निय्यत से फ़ोन वुसूल कर लेता हूं।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदके़ हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।
اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

(84) महबूबे अत्तार की इनफ़िरादी कोशिश की मदनी बहार

मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अत्तारिय्या बाबुल इस्लाम सिन्ध पाकिस्तान के रुक्न मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी मुह़म्मद सदाक़त अत्तारी का बयान कुछ यूं है कि मैं हैदराबाद में फ़र्निचर की दुकान पर काम करता था और दा'वते इस्लामी का मदनी काम भी किया करता था। अकषर ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की आते जाते ज़ियारत होती, येह बाइक नहीं चलाते थे, रिक्षे में जाते तो चप्पल उतार कर बैठते, क्यूं कि जब भी कहीं बैठें तो जूते उतार लेने चाहियें कि इस से क़दम आराम पाते हैं, नीज़ कुफ़्ले मदीना का ऐनक भी लगाए रहते। एक बार अपने घर का दरवाज़ा बनवाने हमारी दुकान पर आए तो इन से मुख़्तसर मुलाक़ात की सआदत मिली। कुछ दिनों के बा'द ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** की ख़्वाहिश पर मदनी मर्कज़ फै़ज़ाने मदीना (हैदराबाद) के ता'वीज़ाते अत्तारिय्या के बस्ता ज़िम्मेदार ने मेरा ज़ेहन बनाया कि मैं फै़ज़ाने मदीना में मरीज़ों के लिये प्लेटें लिखने की ज़िम्मेदारी क़बूल कर लूं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ यू मुझे फै़ज़ाने मदीना में मक्तूबातो ता'वीज़ाते अत्तारिय्या के मक्तब में ख़िदमत की सआदत ह़ासिल हुई और महबूबे अत्तार ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की बिल वासित़ा **इनफ़िरादी कोशिश** की बरकत से मक्तूबातो ता'वीज़ाते अत्तारिय्या (हैदराबाद) के मक्तब में रहते हुए दुख्यारों की ख़ैरख़्वाही करने लगा और आज पाकिस्तान सत़ह़ की मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अत्तारिय्या का रुक्न हूं। **अल्लाह** तबारक व तआला दा'वते इस्लामी और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की गुलामी पर आफ़िय्यत के साथ इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالیٰ عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(85) ग़रीबों का दिल ख़ुश किया

रहीम यार ख़ान (पंजाब, पाकिस्तान) के इस्लामी भाई मुहम्मद अस्लम अत्तारी का बयान है कि रुक्ने शूरा हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى एक मरतबा हमारे अलाक़े में मदनी मश्वरे के लिये तशरीफ़ लाए थे। मश्वरे के बा'द रवानगी में कुछ वक़्त था तो इन्हों ने हम से फ़रमाया : मुझे ऐसे ग़रीब इस्लामी भाइयों के घरों पर मुलाक़ात के लिये ले चलिये जिन के घरों पर उमूमन लोग नहीं जाया करते। जब हम उन इस्लामी भाइयों के घरों पर पहुंचे तो वोह हैरान रह गए कि मर्कज़ी मजलिसे शूरा के रुक्न, मदनी इन्आमात के ताजदार महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى हमारे घर तशरीफ़ लाए हैं और बहुत ख़ुशी का इज़हार किया। आप ने उन्हें मुख़्तलिफ़ **मदनी फूल** इरशाद फ़रमाए और उन पर इनफ़िरादी कोशिश कर के अच्छी अच्छी निय्यतें भी करवाईं। जब उन इस्लामी भाइयों को हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के इन्तिक़ाल की ख़बर मिली तो वोह बे इख़्तियार रोने लगे कि ऐसे शफ़ीक़ और ग़रीब परवर इस्लामी भाई दुन्या से रुख़्सत हो गए हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन के मज़ार पर करोड़ो रहमतों का नुज़ूल फ़रमाए और इन के दरजात बुलन्द फ़रमाए और इन के नक़्शे क़दम पर चलते हुए मुर्शिदे करीम की इताअत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

मुसलमान के दिल में खुशी दाखिल करने का इन्आम

किसी के दिल में खुशी दाखिल करना बहुत आसान मगर इस का इन्आम कितना शानदार है, इस का अन्दाज़ा दर्जे ज़ैल रिवायत से लगाइये : चुनान्चे **नबिय्ये रहमत**, शफ़ीए उम्मत, क़ासिमे ने'मत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स किसी मोमिन के दिल में खुशी दाखिल करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस खुशी से एक फ़िरिश्ता पैदा फ़रमाता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत और ज़िक्र में मसरूफ़ रहता है। जब वोह बन्दा अपनी **क़ब्र** में चला जाता है तो वोह फ़िरिश्ता उस के पास आ कर पूछता है : क्या तू मुझे नहीं पहचानता ?" वोह कहता है :"तू कौन है ?" तो वोह फ़िरिश्ता जवाब देता है : "मैं वोह खुशी हूं जिसे तू ने फ़ुलां के दिल में दाखिल किया था, आज मैं तेरी वहशत में तुझे उन्स पहुंचाऊंगा और सुवालात के जवाबात में षाबित क़दम रखूंगा और तुझे रोज़े क़ियामत के मनाज़िर दिखाऊंगा और तेरे लिये तेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सिफ़ारिश करूंगा और तुझे जन्नत में तेरा ठिकाना दिखाऊंगा।"

(الترغیب والترهیب، کتاب البر والصلة، باب الترغیب فی قضاء حوائج المسلین، ٣/ ٢٦٦، الحدیث٢٣)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह फ़ज़ीलत उसी वक़्त हासिल हो सकेगी जब कि वोह खुशी ऐन शरीअ़त के मुताबिक़ हो चुनान्चे अगर औरत ने शोहर को खुश करने के लिये बे पर्दगी की या बेटे ने बाप को खुश करने के लिये दाढ़ी मुन्डा दी या एक मुठ्ठी से घटा दी तो वोह इस फ़ज़ीलत का हरगिज़ हक़दार नहीं होगा बल्कि अज़ाबे नार का हक़दार होगा। हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब से पनाह मांगते हैं और उस से रहमत का सुवाल करते हैं।

किसी के दिल में खुशी दाखिल करने वाले 9 काम

❁ किसी प्यासे को पानी पिला देना ❁ किसी भूके को खाना खिला देना ❁ कोई दुआ के लिये कहे तो हाथों हाथ उस के लिये दुआ कर देना ❁ ज़रूरत मन्द की मदद करना ❁ हाजत मन्द को क़र्ज़ दे देना ❁ पसन्दीदा चीज़ खिलाना ❁ अहम मवाक़ेअ़ पर तोह़फ़ा देना बल्कि मुत़लक़न तोह़फ़ा देना ❁ मज़्लूम की मदद करना ❁ दौराने सफ़र बैठने के लिये दूसरों को जगह दे देना।

रहें भलाई की राहों में गामज़न हर दम
करें न रुख़ मेरे पाऊं गुनाह का या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 97)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(86) दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदारान के लिये लाइके़ तक़्लीद

बदीन (बाबुल इस्लाम सिन्ध पाकिस्तान) के इस्लामी भाई बिलाल रज़ा का बयान है कि हाजी ज़म ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم की एक ख़ास बात येह थी कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वक़्त पर मदनी मश्वरा शुरूअ़ करते और वक़्त पर ख़त्म कर देते। जब हम इन्हें ऐस. एम. ऐस. या कॉल करते तो फ़ौरन जवाब देते, अगर कभी हाथों हाथ जवाब न दे पाते तो बा'द में इन का s.m.s आता कि मैं इजतिमाअ़ या मश्वरे में था मा'ज़िरत ! येह आदत हम ने दीगर इस्लामी भाइयों में बहुत कम देखी।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदके़ हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

(87) कभी कभार खुश तबई भी फ़रमाते

मर्कजुल औलिया (लाहोर) के इस्लामी भाई मुहम्मद अजमल अत्तारी का बयान है कि महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی अगर्चे सन्जीदा और ज़बान व आंख के कुफ्ले मदीना के ज़बरदस्त आमिल थे मगर हस्बे ज़रूरत व हस्बे मौक़अ खुश तबई भी फ़रमाते थे, येही वजह है कि इन की सोहबत में रहने वाला बोर न होता था। बा'ज़ अवक़ात मैं इन को फ़ोन करता तो इन के तीनों बच्चों के नाम ले कर यूं मुखातब करता : يَا اَبَاالْجُنَيْدِ وَالْجِيْلَانِ وَ الْاُسَيْدِ كَيْفَ الْحَال *(या'नी ऐ जुनैद, जीलान और उसैद के अब्बू ! क्या हाल है ?)* तो बहुत खुश होते। एक बार मैं ने जब सिर्फ़ येह कहा : يَا اَبَاالْجُنَيْدِ وَالْجِيْلَانِ तो जवाबन फ़रमाया : क्यूं भाई ! आप ने हमारे तीसरे मुन्ने का नाम क्यूं नहीं लिया ? हमारे उसैद रज़ा को क्यूं छोड़ दिया ? मैं इन की बात पर मुस्कुरा दिया।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(88) बात न मानने पर नाराज़ नहीं हुए

ज़म ज़म नगर हैदराबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के इस्लामी भाई अर्सलान अहमद अत्तारी का बयान है कि जब मैं मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना हैदराबाद के एक मक्तब में कम्प्यूटर ऑपरेटर मुक़र्रर हुवा। मेरा पहला दिन था जब मैं ज़ोहर की नमाज़ पढ़ कर मक्तब में पहुंचा तो महबूबे अत्तार रुक्ने शूरा हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی किसी काम से

कम्प्यूटर के पास एक कुरसी पर बैठे थे। मुझ से इरशाद फ़रमाया : मुझे कम्प्यूटर का पासवर्ड (password) बता दीजिये। उस वक़्त मैं इन्हें पहचानता नहीं था चुनान्चे मैं ने अ़र्ज़ की : चूंकि मैं आप से ना वाक़िफ़ हूं, आप की ज़िम्मेदारी भी नहीं जानता इस लिये पासवर्ड देने से मा'ज़िरत ख़्वाह हूं, हां ! अगर किसी ज़िम्मेदार इस्लामी भाई से कहलवा दें तो मैं आप को पासवर्ड पेश कर दूंगा। वोह इस पर ज़रा भी नाराज़ न हुए और ख़ुद अपना तआ़रुफ़ करवाने के बजाए फ़रमाया : मुझे किन से इजाज़त दिलवानी है ? मैं ने उन इस्लामी भाई का नाम और उन का मक्तब बता दिया। महबूबे अ़त्तार ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى उसी वक़्त उठे और ज़िम्मेदार इस्लामी भाई के हमराह चन्द ही लम्हों में वापस तशरीफ़ ले आए तो मुझे ज़िम्मेदार इस्लामी भाई ने महबूबे अ़त्तार रुक्ने शूरा ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى का तआ़रुफ़ करवाया और मैं ने इन्हें "पासवर्ड" बता दिया। मैं ने बा'द में इन से मा'ज़िरत की : मैं आप से ना वाक़िफ़िय्यत की वजह से शायद बद तमीज़ी कर बैठा हूं। तो महबूबे अ़त्तार रुक्ने शूरा ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने इरशाद फ़रमाया : आप को मा'ज़िरत की ज़रूरत नहीं, येह आप की ज़िम्मेदारी है कि आप किसी भी अन्जान इस्लामी भाई को अपना कम्प्यूटर इस्ति'माल न करने दें। फिर मुझे काफ़ी अ़र्सा इन के साथ काम करने का मौक़अ़ मिला, वोह जब भी मिलते मुस्कुरा कर मिलते।

इन्हों ने मुझे बहुत शफ़्क़त दी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की महबूबे अत्तार रुक्ने शूरा हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تعالىٰ علىٰ محمَّد

इन की सोहबत में ताषीर थी

हैदराबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के इस्लामी भाई मुहम्मद अनीस अत्तारी का बयान है कि इन की सोहबत में बड़ी ताषीर थी, इन की सोहबत में रहने वाला भी **आशिक़े अत्तार** बन जाया करता था। मुझे तवील अर्सा इन की सोहबते बा बरकत में रहने का मौक़अ मिला, फिर मैं ने बाबुल मदीना कराची में रिहाइश इख़्तियार कर ली, ता दमे तहरीर तक़रीबन 12 साल हो गए लेकिन मेरी ज़ात पर इन की नेक सोहबत के अषरात आज भी बाक़ी हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تعالىٰ علىٰ محمَّد

(89) रिक्शा ड्राईवर पर इनफ़िरादी कोशिश

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى सफ़र व हज़र में इनफ़िरादी कोशिश किया करते थे चुनान्चे मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अत्तारिय्या के एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई मुहम्मद सदाक़त अत्तारी का बयान कुछ इस तरह से है कि हैदराबाद में एक मरतबा हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के हमराह कहीं जाने की

सआदत हासिल हुई, दौराने सफ़र रिक्षा ड्राईवर पर इनफ़िरादी कोशिश फ़रमाई और उस का नाम शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद करवाने के लिये ले लिया, फिर ड्राईवर ने कुछ मसाइल बयान किये, इस पर हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने उन्हें मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ रिसाले "**40 रूहानी इलाज**" में से कुछ वज़ाइफ़ पढ़ने के लिये दिये और उन का फ़ोन नम्बर भी ले लिया। कुछ दिनों के बा'द जब हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने ड्राईवर को ग़म ख़्वारी के लिये फ़ोन किया तो ड्राईवर उन के इस अन्दाज़ से बड़ा मुतअष्षिर हुवा और उस ने कई अच्छी अच्छी निय्यतें भी कीं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।
اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(90) बर वक़्त हौसला अफ़्ज़ाई

मदनी चैनल के शो'बे में ख़िदमात अन्जाम देने वाले इस्लामी भाई ग़ुलाम शब्बीर अत्तारी का बयान है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे त़वील अ़र्सा ख़ुसूसी या'नी गूंगे बहरे इस्लामी भाइयों के शो'बे में मदनी काम करने की सआदत हासिल रही है, येह उन दिनों की बात है जब मैं पाकिस्तान इन्तिज़ामी काबीना में शो'बए ख़ुसूसी इस्लामी भाई का ख़ादिम (निगरान) था, ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों के मदनी काम के ह़वाले से एक मरतबा ऐसी आज़माइश आई कि मुख़्तलिफ़ ज़िम्मेदारान त़रह़ त़रह़ की मजबूरियों और रुकावटों की वजह से इस शो'बे में फ़अ़्आल

न रहे और येह मदनी काम अपनी रौनक़ें खोने लगा, मैं इस सूरते ह़ाल पर दिल ही दिल में कुढ़ता रहता मगर उम्मीद की कोई किरन दिखाई न देती, इसी टेन्शन में एक मरतबा रात के तीन बज गए मगर मुझे नींद नहीं आ रही थी ह़त्ता कि मैं ने सोच लिया कि बस अब सुब्ह़ ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى (जो मर्कज़ी मजलिसे शूरा में ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों के निगरान थे) को अ़र्ज़ कर दूंगा कि मैं अब मज़ीद येह मदनी काम नहीं कर सकता। ह़ुस्ने इत्तिफ़ाक़ से उसी वक़्त मुझे इन का s.m.s आ पहूंचा जिस में मेरी किसी काविश के सिलसिले में ह़ौसला अफ़्ज़ाई के अल्फ़ाज़ थे कि "आप ने मेरे निगरान (या'नी निगराने शूरा) की आंखें ठंडी कीं **अल्लाह** तआ़ला आप की आंखें ठंडी करे।" मैं दिल ही दिल में शर्मिन्दा हुवा कि मैं यहां मन्अ़ करने की सोच बना चुका हूं मगर येह तो मेरी ह़ौसला अफ़्ज़ाई फ़रमा रहे हैं। बहर ह़ाल मैं ने जवाबी s.m.s में इन का शुक्रिया अदा किया। मेरी बेदारी पर मुत्तलअ़ हो कर इन्हों ने मुझे फ़ोन किया और मेरी दिलजोई की, कि ख़ैरिय्यत तो है? आप आज रात गए तक जाग रहे हैं! फिर मुझ पर दीगर शफ़्क़तें भी फ़रमाईं और रोज़ मर्रह के जदवल के ह़वाले से मुफ़ीद मश्वरे भी दिये। अब मैं क्यूंकर मदनी काम से इन्कार कर सकता था लिहाज़ा मैं ने अपना फ़ैसला ख़ुद ही बदल दिया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से तमाम रुकावटें एक एक कर के हटती चली गईं और ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों में मदनी काम की धूमें मचना शुरूअ़ हो गईं। बाबुल इस्लाम सत़्ह़ के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में ख़ुसूसी

इस्लामी भाइयों के लिये अलग से मक्तब बनाने की तरकीब हुई जिस में इन्हें तमाम बयानात इशारों की ज़बान में सुनाए गए, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی ने इस हवाले से भी बहुत शफ़्क़तें फ़रमाईं और आख़िरी निशस्त में **"ज़िक्रुल्लाह"** इशारों से करवाने की तरकीब बनाई। **अल्लाह** तआला इन को जज़ाए ख़ैर दे। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(91) इस्तिक़ामत का मदनी नुस्ख़ा

मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई मुहम्मद अजमल अत्तारी का बयान है कि मदनी इन्आमात के ताजदार, महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی ने मुझे बताया था कि एक बार मैं ने बापाजान की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि इस्लामी भाई मदनी माहोल में आते हैं फिर टूट जाते हैं, कोई ऐसा तरीक़ा इरशाद फ़रमा दें कि मदनी माहोल में इस्तिक़ामत मिल जाए! तो आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने जो कुछ फ़रमाया उस का खुलासा येह है कि जो येह चाहता है कि मुझे मदनी माहोल में इस्तिक़ामत मिल जाए तो उसे चाहिये कि अपने कान, आंख और ज़बान बन्द कर के अपने काम में लगा रहे या'नी अपने काम से काम रखे। फिर इस की वज़ाहत फ़रमाई कि अगर कोई ज़ैली मुशावरत का निगरान है तो वोह येह न देखे कि मेरा निगराने हल्क़ा मुशावरत क्या कर रहा है, वोह अपने हल्क़े में आ जा रहा है या नहीं? अगर कोई हल्क़ा निगरान है तो वोह येह न देखे कि मेरा अलाक़ाई निगरान क्या कर रहा है? इसी तरह अगर कोई अलाक़ाई निगरान है तो

www.dawateislami.net

वोह अपने डिवीज़न निगरान को न देखे कि वोह जदवल चला रहा है या नहीं ? फुलां अ़लाके़ या ह़ल्के़ में येह मस्अला हो गया ! इधर येह हो गया उधर वोह हो गया ! याद रखिये ! इस बात को देखना, उस को चेक करना येह हमारी ज़िम्मेदारी नहीं बल्कि हमें जो ज़िम्मेदारी दी गई हम से उस का ह़िसाब होगा लिहाज़ा अपने काम में लगे रहें। हां ! किसी जगह दीन का नुक़्सान होता देखें तो तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ मस्अला ह़ल करें मगर हरगिज़ एक दूसरे पर इज़्हार न करें कि निगरान साह़िब तो सुनते ही नहीं येह तो किसी की मानते ही नहीं ! वग़ैरा कि इस त़रह़ ग़ीबतों, तोहमतों और बद गुमानियों का दरवाज़ा खुल सकता है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالٰى علٰى محمَّد

(92) जब महबूबे अ़त्तार को अ़लाक़ाई निगरान से ज़ैली निगरान बनाया गया

हैदराबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के इस्लामी भाई का बयान है कि बहुत अ़र्सा पहले की बात है कि ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى हमारे अ़लाक़ाई निगरान हुवा करते थे। उस वक़्त हमारा अ़लाक़ा 125 से ज़ाइद मसाजिद पर मुश्तमिल था। एक मदनी मश्वरे में तन्ज़ीमी तरकीब तब्दील हुई तो ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى को सिर्फ़ एक मस्जिद का ज़ैली निगरान बना दिया गया। जब हम मदनी मश्वरे से वापस आ रहे थे, ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने अपने मुषबत जज़्बात का इज़्हार इन अल्फ़ाज़ में किया कि अगर मेरा मदनी मर्कज़ मुझे एक मस्जिद तो क्या

सिर्फ़ एक घर में मदनी काम करने की भी ज़िम्मेदारी दे तो मैं उस घर में मदनी काम करता रहूंगा। हैदराबाद के ही एक और इस्लामी भाई का बयान है कि हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى फ़रमाया करते थे कि **बिलफ़र्ज़ मेरा ज़िम्मेदार मुझे लात भी मारे तो मैं जहां जा कर गिरूंगा वहीं पर मदनी काम शुरूअ़ कर दूंगा।** अल ग़रज़ महबूबे अत्तार (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار) मदनी मर्कज़ की इताअ़त के हवाले से बड़ा मजबूत ज़ेहन रखते थे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(93) अनोखी आरज़ू

मजसिले मक्तूबातो ता'वीज़ाते अत्तारिय्या (दा'वते इस्लामी) के एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई का बयान है कि मदनी इन्आ़मात के ताजदार, महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى मुझ से फ़रमाते थे कि "मेरी ख़्वाहिश येह है कि मुझे दुन्या में कोई न जानता हो, बस मैं होऊं और मेरा पीर, बस मुर्शिद मुझ से राज़ी रहें। मैं इन को छुप छुप कर देखता रहूं।" इस इस्लामी भाई का मज़ीद बयान है कि 1998 ई. में सफ़रे हिन्द में महबूबे अत्तार की रफ़ाक़त मिलने से क़ब्ल मेरी आरज़ू येह थी कि बड़े बड़े तमाम निगरानों से मेरे राबिते हों, सब मुझे जानते हों, मेरी ता'रीफ़ करें, मेरा ख़ूब चर्चा हो, शोहरत मिले ! अल ग़रज़ **हुब्बे जाह** का मरज़ उ़रूज पर था। इन की सोह़बत ने मेरी येह सोच यक्सर बदल दी, इन्हों ने मुझे

www.dawateislami.net

हुब्बे जाह की आफ़ात बताईं जिस से मेरा येह ज़ेहन बना कि मदनी कामों की मसरूफ़िय्यात के बा'द ख़ल्वत व तन्हाई में रहा जाए। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन की तर्बिय्यत की ब दौलत मैं समझता हूं कि मैं आज भी **दा'वते इस्लामी** में हूं, मेरे रब عَزَّوَجَلَّ का करम है कि मुझे इस्तिक़ामत हासिल है, **अल्लाह** तआला मरते दम तक नसीब रखे। अगर महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللہِ الْبَارِی की सोहबत न मिलती तो न जाने मैं कब का बरबाद हो चुका होता।

अल्लाह *عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(94) बातिनी तर्बिय्यत भी फ़रमाते

मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) में मुक़ीम मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी मुहम्मद अजमल अत्तारी का बयान कुछ यूं है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे भी महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللہِ الْبَارِی की सोहबत में रहने का शरफ़ मिला है, आप बातिनी इस्लाह पर बहुत ज़ियादा तवज्जोह दिलाते थे, कभी निगरान से इख़्तिलाफ़ के हवाले से इस तरह समझाते कि देखिये ! दा'वते इस्लामी का काम करना मुस्तहब मगर इस की ख़ातिर ज़िम्मेदार की बिला वजहे शरई दिल आज़ारी करना, ग़ीबत करना, तोहमत लगाना हराम व गुनाह है, ऐसा न हो कि मुस्तहब की आड़ में शैतान हमारे साथ खेलता रहे, लिहाज़ा ख़ूब होशियार रहिये।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदके हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالىٰ على محمَّد

(95) मेरी सुस्ती को चुस्ती में बदल दिया

कोट अत्तारी (कोटरी, बाबुल इस्लाम सिन्ध) के इस्लामी भाई मुहम्मद जुनैद अत्तारी का बयान कुछ यूं है कि एक मरतबा मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** ऑफन्दी टाऊन हैदराबाद में रुक्ने शूरा हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى से मुलाक़ात हुई तो हस्बे आदत मेरी ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त फ़रमाई। फिर एक ऐसा वाक़िआ हुवा जिस ने मेरी सुस्ती को चुस्ती में बदल दिया। हुवा कुछ यूं कि दौराने गुफ़्तगू मैं ने हाजी ज़म ज़म से अर्ज़ की, कि मेरे पास दो "मदनी बहारें" हैं, एक आध दिन में आप को पेश कर दूंगा तो महबूबे अत्तार फुर्ती से उठे और मुझे काग़ज़ दे कर कहने लगे : प्यारे भाई ! अभी हाथों हाथ लिख कर दे दें, मेरा तजरिबा है कि बा'द में शैतान लिखने नहीं देता, बा'ज़ इस्लामी भाई सुस्ती करते हैं और लिख कर न देने से हज़ारों मदनी बहारें जम्अ होने से रह जाती हैं। चुनान्चे मैं ने उसी वक़्त वोह मदनी बहारें इन्हें लिख कर दे दीं। इस से मेरा ज़ेहन बना कि जो नेक काम हाथों हाथ हो सकता हो उस में ताख़ीर नहीं करनी चाहिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالىٰ على محمَّد

www.dawateislami.net

आख़िरत के काम में जल्दी करनी चाहिये

हदीषे पाक में है : इत्मीनान हर चीज़ में हो, सिवाए आख़िरत के काम के।

(سنن ابی داود،کتاب الادب،باب فی الرفق،٤/٣٣٥،الحدیث:٤٨١٠)

या'नी दुन्यावी काम में देर लगाना अच्छा है कि मुमकिन है वोह काम ख़राब हो और देर लगाने में उस की ख़राबी मा'लूम हो जाए और हम इस से बाज़ रहें मगर आख़िरत का काम तो अच्छा ही अच्छा है इसे मौक़अ़ (Chance) मिलते ही कर लो कि देर लगाने में शायद मौक़अ़ जाता रहे। बहुत देखा गया कि बा'ज़ को (हज का) मौक़अ़ मिला न किया फिर न कर सके। रब तआला फ़रमाता है : فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ भलाइयों में जल्दी करो। (پ٢،البقرة:١٤٨) शैतान कारे ख़ैर में देर लगवा कर आख़िर में इस से रोक देता है। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 6/627 मुलख़्ख़सन)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदके़ हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تعالٰی علٰی محمَّد

(96) नामो नुमूद की ख़्वाहिश से कोसों दूर थे ﴾मअ़ दीगर यादगारें﴿

अल मदीनतुल इल्मिय्या में ख़िदमात अन्जाम देने वाले अबू वासिफ़ अत्तारी मदनी का बयान है कि तहरीरी काम के सिलसिले में हाजी ज़म ज़म रज़ा अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى से मेरा तक़रीबन 7 बरस का साथ रहा है। मैं ने इन में नामो नुमूद की रतीभर ख़्वाहिश नहीं देखी हालांकि इन्हों ने आदाबे मुर्शिदे

www.dawateislami.net

कामिल, मदनी गुलदस्ता, सींगों वाली दुल्हन, ख़ौफ़नाक बला, दम तोड़ते मरीज़ को शिफ़ा, तंग दस्ती के अस्बाब, शहज़ादए अ़त्तार की शादी की झल्कियां, अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित, हैरत अंगेज़ ह़ादिषा और दीगर बहुत से रसाइल मुरत्तब फ़रमाए हैं मगर कभी अपना नाम डालने की ख़्वाहिश तक ज़ाहिर नहीं की। बा'ज़ अवक़ात येह कई कई घन्टे हमारे मक्तब में मौजूद रहते थे मगर कभी इन्हों ने अपनी ज़बान से अपने कारनामे इशारतन भी बयान नहीं किये। फिर बहुत सी कुतुबो रसाइल ऐसी हैं जो हम दोनों ने मिल कर लिखीं, मैं इन की तह़रीर में कैसी ही तब्दीली करता कभी ना गवारी का इज़्हार नहीं किया बल्कि मुझ से फ़रमा देते जो आप को मुनासिब लगे कर लीजिये, कभी किसी बात पर हमारा इख़्तिलाफ़े राए भी होता और मैं दो टोक अपना मौक़िफ़ अपनाता तो ज़िद नहीं करते थे बल्कि बा'द में इस की इफ़ादिय्यत सामने आने पर शाबाश देते और हौसला अफ़्ज़ाई किया करते थे। "**क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत**" जैसी कई कुतुबो रसाइल इन्हों ने फ़रमाइश कर के मुझ से लिखवाईं, इस के लिये मवाद मुहय्या किया और वक़्तन फ़ वक़्तन मेरी रहनुमाई फ़रमाते रहते। फिर हम दोनों ने दीगर ज़िम्मेदारान से मिल कर अल मदीनतुल इल्मिय्या में मदनी बहारों के रसाइल वग़ैरा के लिये "शो'बए अमीरे अहले सुन्नत" क़ाइम किया तो इन की ख़ुशी दीदनी (या'नी देखने वाली) थी। बीमारी के बा वुजूद तह़रीरी काम करवाने के लिये मुसल्सल इस्लामी भाइयों से राबिते में रहते। इन की ज़िन्दगी के आख़िरी सालों में दीगर मसरूफ़िय्यात की वजह से मैं इन के तह़रीरी

काम में हाथ न बटा सका मगर फिर भी मुझ से बड़ी महब्बत करते, मैं भी दिल की गहराइयों से इन से अक़ीदत रखता था। अकषर फ़रमाते कि मेरा बस चले तो आप को अपने तहरीरी काम के लिये एक कमरे में बन्द कर दूं। मेरे मदनी मुन्ने और मुन्नियों से बड़ी महब्बत फ़रमाते, अकषर फ़ोन पर इन के बारे में दरयाफ़्त करते रहते थे। हालांकि खुद बीमार थे मगर मेरी तबीअत के हवाले से बहुत फ़िक्र मन्द रहते कि आप को कुछ नहीं होना चाहिये। कभी मेरा गला ख़राब होता तो ता'वीज़ पेश कर देते।

(97) रबड़ी का तोहफ़ा

पाकिस्तान के सूबए पंजाब जाते वक़्त इन के शहर हैदराबाद स्टेशन से गुज़रता तो मुझे रबड़ी का तोहफ़ा भिजवाया करते थे। एक मरतबा मुझे फ़ोन किया तो ट्रेन हैदराबाद में दाख़िल हो चुकी थी, मेरे मन्अ करने के बावुजूद येह एक इस्लामी भाई के साथ मोटरसाईकल पर निकल पड़े, मैं बार बार इन से दरख़्वास्त करता कि हुज़ूर ! आप रहने दीजिये मगर नहीं माने, जब येह स्टेशन के बाहर पहुंचे तो ट्रेन चल दी, येह काफ़ी दूर तक पीछे आए मगर ट्रेन ने रफ़्तार पकड़ ली, इन की इस महब्बत भरी दीवानगी का जब मैं ने पंजाब में अपने भाइयों को बताया तो उन्हों ने बरजस्ता कहा कि इतनी महब्बत और खुलूस से वोह देने आए मगर नहीं दे सके तो समझ लो कि इन्हो ने भेजी और हम ने खा ली।

(98) ज़म ज़म का मतलब है "रुक रुक"

जब कभी इश्क़े मुर्शिद में बहुत बढ़ चढ़ कर कलाम फ़रमाते कि हम येह बात भी तहरीर में डाल देते हैं वोह बात

www.dawateislami.net

भी डाल देते हैं तो मैं इन से मिज़ाह़न अ़र्ज़ करता कि कहीं ऐसा तो नहीं कि बापा ने आप का नाम "ज़म ज़म" इसी ह़िक्मत के तह़्त रखा हो कि आप "रुक" भी जाया करें क्यूंकि ज़म ज़म का मा'ना है "रुक रुक" तो आप ज़रा रुकिये भी कि हर बात एक दम से छाप डालना आसान काम नहीं।

(99) रिसाले की आमद पर बेह़द ख़ुश हुए

इन की निगाहों का कुफ़्ले मदीना, ज़बान का कुफ़्ले मदीना मरह़बा। मक्तबतुल मदीना के रिसाले **ख़ामोश शहज़ादा** की (नई तरकीब के बा'द) इशाअ़त के ग़ालिबन सब से ज़ियादा मुन्तज़िर येही थे, जब रिसाला आने की ख़बर दी तो इन की ख़ुशी देखने वाली थी।

(100) खाना साथ खाते

बाबुल मदीना तशरीफ़ लाते तो अकषर मुझे मेज़बानी का शरफ़ मिलता, दोपहर का खाना उ़मूमन हम साथ ही तनावुल करते। एक मरतबा मैं जामिअ़तुल मदीना में पढ़ा रहा था इस दौरान येह जल्दी में मेरा घर से लाया हुवा खाना खा कर कहीं बयान करने चले गए मगर बाहर से खाना मंगवा कर रख गए, मेरी त़रफ़ से इन को मेरी चीज़ें खाने इस्ति'माल करने की मुकम्मल इजाज़त थी मगर जब मुलाक़ात हुई तो फ़रमाने लगे मैं आप का खाना बिग़ैर बताए खा गया ! मैं ने अ़क़ीदत से अ़र्ज़ की : क्या आप को मुझ से पूछने की ह़ाजत है ? तो मुस्कुरा कर ख़ामोश हो गए। इस बे तकल्लुफ़ी के बा वुजूद बहुत ख़ुद्दार थे, अपनी वफ़ात से चन्द दिन पहले मुझे फ़ोन कर के अस्पताल में याद किया और फ़रमाने लगे कि डॉक्टर ने परहेज़ी खाना शुरूअ़ करने का कहा है तो मुझे आप ही याद

www.dawateislami.net

आए ! लेकिन आप इस की रक़म मुझ से ले लीजियेगा। मैं ने अ़र्ज़ की : सद मरह़बा ! मैं ह़ाज़िर हूं मगर मैं रक़म नहीं लूंगा। लेकिन अफ़्सोस वोह परहेज़ी खाना खाने पर भी क़ादिर न हो सके, मेरी इन से जो आख़िरी गुफ़्तगू फ़ोन पर हुई उस में कुछ यूं फ़रमाया : "दुआ़ कीजिये कि भूक लग जाए और मैं खाना खा सकूं फ़िलह़ाल तो एक निवाला भी नहीं खाया जा रहा।"

(101) नाज़ुक ह़ालत में भी साबिर रहे

एक मरतबा इन की बीमारी के दौरान मेरे सामने इन की त़बीअ़त बहुत बिगड़ी मगर येह इस नाज़ुक ह़ालत में भी साबिर रहे और मुंह से शिक्वा व शिकायत का कोई लफ़्ज़ नहीं निकाला। इन की ज़िन्दगी की आख़िरी रात क़रीबन सवा दस बजे जब मैं इन को देखने के लिये पहुंचा तो ग़ालिबन नज़्अ़ के आ़लम में थे मुझ से इन की ह़ालत देखी नहीं गई, इन की ह़यात में कभी इन्हों ने मुझे अपना हाथ नहीं चूमने दिया, मैं ने उस वक़्त इन के दाहिने हाथ पर बोसा दिया और रो रो कर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में इन के लिये आसानी व आ़फ़िय्यत की दुआ़ की तो इन के सर को जुम्बिश हुई मुझे यूं लगा कि शायद इस दुआ़ पर मेरा शुक्रिया अदा कर रहे हों क्यूंकि ज़िन्दगी में येह छोटी से छोटी बात पर भी मुझे "جَزَاكَ اللّٰه" "جَزَاكَ اللّٰه" की दुआ़ से इतनी कषरत से नवाज़ते थे कि येह अल्फ़ाज़ तह़रीर करते वक़्त भी मेरे कानों में गोया इन की आवाज़ गूंज रही है।

(102) बीमारी में भी ए'तिकाफ़ करने की ख़्वाहिश

रमज़ानुल मुबारक में जब येह मुस्तश्फ़ा में दाख़िल थे तो आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़ शुरूअ़ होने से पहले मुझे दबे

www.dawateislami.net

लफ़्ज़ों में कुछ यूं कहने लगे कि किसी तरह मुझे बापा के क़रीब पहुंचा दो ताकि मैं भी सुन्नत ए'तिकाफ़ कर सकूं मगर मैं ने इन की हालत देखते हुए प्यार से समझाया और आराम की तल्क़ीन की । पच्चीसवीं छब्बीसवीं मनाने के लिये इन्हों ने एक बा क़ाइदा पर्चा मुरत्तब किया था और इस के सब से बड़े दाई येही थे । बहुत से मुआमलात सिर्फ़ मेरे और इन के दरमियान थे, इन के जाने के बा'द मैं अकेला रह गया हूं । इन के अधूरे रह जाने वाले काम اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं मुकम्मल करूंगा । इन का मुस्कुराता हुवा चेहरा अब भी मेरी निगाहों के सामने रहता है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे इन जैसा तक़्वा नसीब फ़रमाए ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(103) मदनी चैनल पर ए'लाने वफ़ात और दुआए मग़फ़िरत

जिस वक़्त हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی का विसाल हुवा तो शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ आलमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में अराकीने शूरा व दा'वते इस्लामी की मुख़्तलिफ़ काबीनात के अराकीन से मदनी मश्वरा फ़रमा रहे थे, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने मदनी इन्आमात के ताजदार, महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی के

www.dawateislami.net

विसाल का ए'लान करते हुए फ़रमाया : मदनी चैनल के नाज़िरीन और हाज़िरीन ! मेरी आंखों की ठंडक मेरे दिल के चैन दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के रुक्न हाजी **ज़म ज़म रज़ा** त़वील बीमारी के बा'द दम तोड़ चुके हैं, (इन का) विसाल हो गया है, اِنَّالِلّٰہِ وَاِنَّااِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ

फिर **शैख़े त़रीक़त** अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने इन के लिये इस त़रह़ के दुआइया कलिमात कहे : **अल्लाह** तबारक व तआ़ला मर्ह़ूम हाजी ज़म ज़म को ग़रीक़े रह़मत फ़रमाए, **अल्लाह** तआ़ला इन के सग़ीरा कबीरा गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाए, **अल्लाह** तआ़ला इन की ख़िदमाते दा'वते इस्लामी को क़बूल फ़रमाए, इन्हों ने बहुत ख़िदमत की इस का ए'तिराफ़ एक मैं नहीं बल्कि हमारे लाखों इस्लामी भाई करेंगे, मदनी इन्आ़मात जो कि नेक बनाने के मदनी फूल और नुस्ख़े हैं इन के सब से बड़े दाई येही थे। ज़बान का कुफ़्ले मदीना, आंखों का कुफ़्ले मदीना (निगाहों की ह़िफ़ाज़त) के दा'वते इस्लामी के सब से बड़े दाई मेरे हुस्ने ज़न के मुत़ाबिक़ येही हाजी **ज़म ज़म रज़ा** थे और ख़ुद इन के अन्दर बहुत ख़ौफ़े ख़ुदा देखा जाता था, **अल्लाह** करे कि इन का कोई ने'मल बदल हमें मिल जाए, **अल्लाह** की रह़मत के ख़ज़ाने में कोई कमी नहीं है, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन को बे ह़िसाब बख़्श दे, मेरे प्यारे प्यारे **अल्लाह** हाजी **ज़म ज़म** को बे ह़िसाब बख़्श दे, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी रह़मत इस के शामिले ह़ाल न रही तो बेचारा क्या करेगा ! मेरे मालिक ! इस ने बहुत तक्लीफ़ें उठाईं, बहुत बहुत तक्लीफ़ें उठाईं, मेरे मालिक ! इन तकालीफ़ को

www.dawateislami.net

इस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बना दे, इन तकालीफ़ को इन के लिये तरक़्क़िये दरजात का सबब बना दे, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन को फ़िरदौसे आ'ला में अपने प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस दे दे, इन के बारे में हमारा हुस्ने ज़न है कि येह तेरे नेक बन्दे थे तेरे महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के आशिक़ थे, उन के चाहने वाले थे, हमारा हुस्ने ज़न है कि इन्हों ने दीन की बे लोष ख़िदमत की, हमारे हुस्ने ज़न की लाज रख ले, इन को बख़्श दे, ऐ अल्लाह ! इन की क़ब्र ख़्वाब गाहे बहिश्त बन जाए, जन्नत का बाग़ बन जाए, इन की क़ब्र पर रहमतो रिज़्वान के फूलों की बारिशें हो जाएं, **या इलाहल आलमीन** ! इन की क़ब्र ता हद्दे नज़र वसीअ़ हो जाए, इन को घबराहट न हो वहशत न हो, क़ब्र में अकेलापन न रहे, तेरे हबीब के जल्वों से इन की क़ब्र आबाद रहे, **या इलाहल आलमीन** ! इन के लवाहिक़ीन और पसमान्दगान को सब्रे जमील और सब्रे जमील पर अज्रे जज़ील मर्हमत फ़रमा, अपने महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े में हम सब का ईमान सलामत रख, हमें मदीने में शहादत दे, ईमान सलामत रख, महबूब के जल्वों में मौत दे, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े में हमारी येह टूटी फूटी दुआ क़बूल फ़रमा। اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(104) ईसाले षवाब की तरग़ीब

दुआए मग़फ़िरत करने के बा'द **शैख़े त़रीक़त**, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया : "हाज़िरीन और मदनी चैनल के नाज़िरीन से मदनी इल्तिजा है कि हाजी ज़म ज़म रज़ा के लिये ख़ूब ख़ूब ईसाले षवाब फ़रमाएं। क़ुरआने

करीम के तोहफ़े, दुरूदे पाक पढ़ने के तोहफ़े, मदनी क़ाफ़िले (में सफ़र की निय्यतों) के तोहफ़े, मदनी इन्आमात पर अ़मल कर के इस के तोहफ़े, हमारे जामिअ़ातुल मदीना व मदारिसुल मदीना भी कुरआन ख़्वानियां कर के हमें जल्दी जल्दी ईसाले षवाब के तोहफ़े दें।" اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों ने ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی को ख़ूब ख़ूब ईसाले षवाब किया, जिस की कुछ तफ़्सील आख़िरी सफ़ह़ात पर मुलाह़ज़ा की जा सकती है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

(105) "फ़ैज़ाने ज़म ज़म" मस्जिद बनाने की निय्यतें

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ ने ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی के विसाल की ख़बर सुनाने के बा'द मर्हूम के ईसाले षवाब के लिये **"मस्जिदे फ़ैज़ाने ज़म ज़म"** के नाम से दुन्या भर में मस्जिदें बनाने की तरग़ीब देते हुए कुछ यूं फ़रमाया : "मेरी ख़्वाहिश है कि **अल्लाह** का कोई नेक बन्दा उठे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस नेक बन्दे की बरकतें लेने के लिये एक मस्जिद बनाने की मुझे ख़ुश ख़बरी दे दे कि वोह **"फ़ैज़ाने ज़म ज़म"** नामी एक मस्जिद बना देगा, मैं दुआ़ करता हूं कि **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये जन्नत में आ़लीशान मह़ल अ़त़ा फ़रमाए, मैं **ज़म ज़म रज़ा** से बहुत मह़ब्बत करता रहा हूं, मेरे दिल को भी ख़ुशी ह़ासिल होगी।" तो इस्लामी भाइयों ने आप دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए बाबुल मदीना कराची, मर्कज़ुल

औलिया लाहोर, इस्लामाबाद, रावलपिन्डी, नवाबशाह, गुजरानवाला, पाक पतन, अत्तारवाला (बूरे वाला), खानीवाल, बलूचिस्तान और बैरूने मुल्क साऊथ आफ्रीका, सीलंका वगैरा में मस्जिदें बनाने की हाथों हाथ निय्यतें कीं और ता दमे तहरीर मुल्क व बैरूने मुल्क तक्रीबन 72 मस्जिदें बनाने की निय्यतें पेश की जा चुकी हैं, जिन में से कमो बेश 40 प्लॉट तो खरीद लिये गए और ता दमे तहरीर (या'नी 12 मुहर्रमुल हराम 1434 हि. में) पांच जगह पर ता'मीराती काम भी शुरूअ हो चुका है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पेट की बीमारी में मरने वाला शहीद है

हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى का इन्तिकाल पेट की बीमारी की वजह से हुवा है, और पेट की बीमारी में इन्तिकाल करने वाले को शहीद करार दिया गया है, चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम किस को शहीद समझते हो ? सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में कत्ल किया जाए वोह शहीद है। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : फिर तो मेरी उम्मत के शुहदा बहुत कम होंगे ! सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फिर वोह कौन लोग हैं ? आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

مَنْ قُتِلَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ فَهُوَ شَهِیْدٌ وَمَنْ مَّاتَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ فَهُوَ شَهِیْدٌ
وَمَنْ مَّاتَ فِی الطَّاعُوْنِ فَهُوَ شَهِیْدٌ وَمَنْ مَّاتَ فِی الْبَطْنِ فَهُوَ شَهِیْدٌ

जो शख़्स **राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ **में क़त्ल किया जाए** वोह शहीद है और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की राह में मर जाए** वोह शहीद है और जो **ता़ऊ़न की बीमारी में मर जाए** वोह शहीद है और जो "पेट की बीमारी" में मर जाए वोह शहीद है।

(صحیح مسلم،کتاب الامارۃ،باب بیان الشھداء ص ۱۰۶۰،حدیث ۱۹۱۴)

शारेहे़ मुस्लिम ह़ज़रते इमाम यह़्या बिन शरफ़ नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى इस ह़दीषे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : मबत़ून से मुराद पेट की बीमारी वाला है और इस से मुराद दस्त हैं। अ़ल्लामा क़ाज़ी इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق ने फ़रमाया : इस से मुराद इस्तिस्क़ा और पेट का फूलना है और येह भी कहा गया है कि इस से वोह शख़्स मुराद है जो पेट की किसी भी बीमारी में फ़ौत हुवा हो (वोह शहीद है)।

(شرح مسلم للنووی ج۷ جز ۱۳ص ۶۲ دارالکتب العلمیۃ بیروت)

जब कि **मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : पेट की बीमारियों से मरने वाला हुक्मन शहीद होता है जैसे दस्त, दर्द, इस्तिस्क़ा(1) चूंकि इन बीमारियों में तक्लीफ़ ज़ियादा होती है कि पेट की ख़राबी तमाम बीमारियों की जड़ है इस लिये इस से मरने वाला हुक्मन शहीद है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 5/427 मुलख़्ख़सन)

मदीना

1 : इस्तिस्क़ा वोह बीमारी जिस में मरीज़ की प्यास बहुत बढ़ जाती है और जिस्म के बा'ज़ अन्दरूनी आ'ज़ा पेट, गुरदा, फ़ौता, क़ल्ब, दिमाग़ या फेफड़ों या झल्ली में रुत़ूबत भर जाती है।

नोट : शहीदे हुक्मी की मज़ीद सूरतों की तफ़्सील जानने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ "बहारे शरीअ़त" जिल्द अव्वल हिस्सा 4 सफ़्हा 857 ता 860 का मुत़ालआ़ कीजिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(106) ग़ुस्ल देने की तरकीब

हा़जी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى का इन्तिक़ाल अस्पताल में हुवा था, इन की मय्यित को शहज़ादए अ़त्तार ह़ज़रते मौलाना अलह़ाज अबू उसैद उ़बैद रज़ा अ़त्तारी मदनी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى के दरे दौलत पर लाया गया, जहां मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी मुफ़्ती अबुल ह़सन मुह़म्मद फ़ुज़ैल रज़ा अ़त्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى और रुक्ने शूरा हा़जी अबू रज़ा मुह़म्मद अ़ली अ़त्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى ने दीगर इस्लामी भाइयों के साथ मिल कर ग़ुस्ल दिया। (**शैख़े त़रीक़त**, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी इस मौक़अ़ पर चन्द लम्ह़ों के लिये तशरीफ़ लाए)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(107) नमाज़े जनाज़ा

हा़जी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى की नमाज़े जनाज़ा 21 ज़ीक़ा'दतिल ह़राम 1433 हि. कमो बेश सुब्ह़ 7 बजे आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची (फ़िनाए मस्जिद) में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने पढ़ाई और इन के लिये कुछ यूं दुआ़ए ख़ैर की :

या रब्बल मुस्तफ़ा جَلَّ جَلَالُہٗ وَ صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ब तुफ़ैले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हम सब के गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा, हम सब की मग़फ़िरत फ़रमा, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ुसूसन तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के रुक्न अबू जुनैद ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** की मग़फ़िरत फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन की क़ब्र की पहली रात आया चाहती है, इलाहल आ़लमीन ! अ़न क़रीब येह रोशनियों से निकाल कर अन्धेरी क़ब्र में उतार दिये जाएंगे। इलाहल आ़लमीन ! इन की क़ब्र अन्धेरी न रहे, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन की क़ब्र नूरे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रोशन हो जाए। या इलाहल आ़लमीन ! इन की क़ब्र को महबूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर से पुरनूर कर दे। रब्बे करीम ! इन की क़ब्र पर रह़मतो रिज़्वान के फूल बरसा। इलाहल आ़लमीन ! इन की क़ब्र की घबराहट दूर कर दे। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ! इन को क़ब्र की वह़शत न सताए, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन्हें क़ब्र में सदमात न पहुंचे, या **अल्लाह** ! मर्ह़ूम ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** को क़ब्र में राह़तें नसीब फ़रमा, फ़रह़तें नसीब फ़रमा, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब मुन्कर नकीर इन से सुवालात करें तो येह ठीक ठीक जवाबात दे पाएं। ऐ **अल्लाह** ! जब तेरे महबूब की तशरीफ़ आवरी हो, तो येह फ़ौरन पहचान कर महबूब के क़दमों में गिर पड़ें और जवाबन इन के मुंह से निकले : هُوَ رَسُوْلُ اللّٰہ صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم । ऐ परवर दगार ! महबूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के जल्वों से इन की क़ब्र आबाद कर दे। इलाहल आ़लमीन ! इन की क़ब्र में जन्नत की ख़िड़की खुल जाए, या **अल्लाह** ! इन की क़ब्र जन्नत का बाग़ बना दे। इलाहल आ़लमीन ! इन की बे ह़िसाब बख़्शिश कर दे। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! बरज़ख़ का त़वील अ़र्सा इन के लिये क़लील हो जाए। इलाहल आ़लमीन ! येह इस त़रह़ सोए जिस त़रह़ दुल्हन सोती है, इलाहल आ़लमीन ! इन्हें कोई

www.dawateislami.net

अज़ाब न हो, इन्हें कोई तक्लीफ़ न हो, इलाहल आलमीन ! बस येह महबूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे पीछे सीधे जन्नत में दाखिल हों हम भी इन के पीछे पीछे हों, या इलाहल आलमीन ! तू जानता है कि मैं इन से महब्बत करता था, इलाहल आलमीन ! मैं आखिरी सांस तक इन से राज़ी था, परवर दगार ! तू भी राज़ी हो जा। या इलाहल आलमीन ! हमारे लाखों इस्लामी भाई इन से महब्बत करते थे, महब्बत करते हैं, इन के बारे में बड़ा हुस्ने ज़न इस्लामी भाइयों में देखा जाता था, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे हुस्ने ज़न की लाज रख ले इन्हें तक्लीफ़ न हो, इन्हें क़ब्र में परेशानियां न हों, इन्हें मुर्दों को पहुंचने वाले सदमें न पहुंचें बस येह तेरे महबूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के जल्वों में गुम रहें, तेरे महबूब के जल्वों में गुम रहें, महबूब के जल्वों में गुम रहें और इन की क़ब्र जन्नत का बाग़ बनी रहे। या इलाहल आलमीन ! मर्हूम की वालिदए मोहतरमा, इन के बच्चे, इन के बच्चों की अम्मी, मर्हूम के भाई और दीगर अज़ीज़ रिश्तेदार सब को सब्रे जमील और सब्रे जमील पर अज्रे जज़ील मर्हमत फ़रमा, इलाहल आलमीन ! मर्हूम ने दा'वते इस्लामी की बड़ी खिदमत की खुसूसन "मदनी इन्आमात", "कुफ़्ले मदीना" (खामोशी और निगाहों की हिफ़ाज़त) के ख़ास दाई थे, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन के बेटे जुनैद को भी इन के नक़्शे क़दम पर चला। इलाहल आलमीन ! इन का बेटा आलिमे बा अमल बने, इन के नक़्शे क़दम पर चले, दा'वते इस्लामी की खिदमत करे, इन के सारे घर वाले इन के सारे खान्दान वाले दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ और मुबल्लिग़ा बन जाएं, सब दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहें। या इलाहल आलमीन ! प्यारे हबीब की सारी उम्मत की मग़फ़िरत फ़रमा।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمّد

(108) सहराए मदीना बाबुल मदीना में तद्फ़ीन

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه निगराने शूरा और कई अराकीने शूरा व दीगर तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारान ने हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के जनाज़े को कन्धा दिया। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه व निगराने शूरा हिफ़ाज़ती उमूर के पेशे नज़र फ़ैज़ाने मदीना ही रुके रहे और जनाज़े का जुलूस सहराए मदीना बाबुल मदीना कराची की त़रफ़ रवाना हो गया, सहराए मदीना पहुंच कर इस्लामी भाइयों को मदनी इन्आमात के ताजदार, महबूबे अत्तार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار का आख़िरी दीदार करवाया गया। फिर इन को मर्हूम निगराने शूरा, बुलबुले रौज़ए रसूल हाजी मुश्ताक़ अत्तारी और मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी हाजी मुहम्मद फ़ारूक़ अत्तारी عليهما رحمت الله البارى के पहलू में दफ़्न करने के लिये ले जाया गया। शहज़ादए अत्तार हज़रते मौलाना हाजी अबू उसैद उ़बैद रज़ा अत्तारी मदनी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى ने मर्हूम की क़ब्र की दीवारों पर अंगुश्ते शहादत से (बिग़ैर रोशनाई के) कलिमए पाक लिखा, फिर क़ब्र की दीवारे क़िब्ला में ताक़ खोद कर इस में शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अत्तारिय्या व दीगर दुआओं के पर्चे तबर्रुकन रखे

गए[1] और सर की जानिब ताक़ खोद कर मर्हूम के नाम लिखी गई अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बा'ज़ तहरीरें रखी गई, मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी, हाफ़िज़ अबुल बषीन मुहम्मद हस्सान रज़ा अत्तारी मदनी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى ने क़ब्र के अन्दर खड़े हो कर सूरतुल मुल्क शरीफ़ की तिलावत की और कई अराकीने शूरा ने हाजी ज़म ज़म रज़ा अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى को क़ब्र में उतारा फिर शहज़ादए अत्तार ने क़ब्र में उतर कर इन का चेहरा क़िब्ला रुख़ किया[2] इस के बा'द मिट्टी से लीप की हुई सिलें क़ब्र पर रख दी गईं[3] इस्लामी

(1) : शजरा या अहद नामा क़ब्र में रखना जाइज़ है और बेहतर येह है कि मय्यित के मुंह के सामने क़िब्ला की जानिब ताक़ खोद कर इस में रखें बल्कि "दुर्रे मुख़्तार" में कफ़न में अहद नामा लिखने को जाइज़ कहा है और फ़रमाया कि इस से मग़फ़िरत की उम्मीद है। (बहारे शरीअत 1/848) आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "शजरए तय्यिबा (और दीगर तबर्रुकात) **क़ब्र** में ताक़ बना कर (रखें) ख़्वाह सिरहाने कि नकीरैन पाइन्ती की तरफ़ से आते हैं उन के पेशे नज़र हो, ख़्वाह जानिबे क़िब्ला कि मय्यित के पेशे रू (या'नी सामने) रहे और इस के सुकून व इत्मीनान व इआनते जवाब का बाइष हो।" (फ़तावा रज़विय्या, 9/134 मुल्तक़तन)

(2) : मय्यित को दहनी तरफ़ करवट पर लिटाएं और उस का मुंह क़िब्ले को करें, अगर क़िब्ले की तरफ़ मुंह करना भूल गए तख़्ता लगाने के बा'द याद आया तो तख़्ता हटा कर क़िब्ला रू कर दें और मिट्टी देने के बा'द याद आया तो नहीं। (फ़तावा हिन्दिय्या, जि. 1 स.166, ردالمحتار على الدر المختار ج٣ ص١٦٧)

(3) : बहारे शरीअत जि, 1. स. 843 पर है : क़ब्र के उस हिस्से में कि मय्यित के जिस्म से क़रीब है, पक्की ईंट लगाना मकरूह है कि ईंट आग से पकती है। **अल्लाह** तआला मुसलमानों को आग के अषर से बचाए। (फ़तावा हिन्दिय्या, 1/166 वग़ैरा) अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं : क़ब्र के अन्दरूनी हिस्से में आग की पकी हुई ईंटें लगाना मन्अ़ है मगर (कराची में देखा है कि) अकषर अब सीमेन्ट की दीवारों और स्लेब का रवाज है। लिहाज़ा सिमेन्ट की दीवारों और सिमेन्ट के तख़्तों का वोह हिस्सा जो अन्दर की तरफ़ रखना है कच्ची मिट्टी के गारे से लीप दें। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुसलमानों को आग के अषर से महफ़ूज़ रखे। (اٰمِين بِجَاهِ النَّبِىِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) (नमाज़ के अहकाम, स. 469)

www.dawateislami.net

भाइयों ने मुस्तहब तरीके के मुताबिक क़ब्र पर मिट्टी डाली[1] और सुन्नत के मुताबिक़ एक बालिश्त ऊंची कोहान नुमा क़ब्र[2] बनाने के बा'द उस पर पानी छिड़का गया (कि बा'दे तदफ़ीन येह भी सुन्नत है) और फिर इस्लामी भाइयों ने क़ब्र पर इतने फूल डाले कि क़ब्र फूलों से ढक गई[3] क़ब्र के पास खड़े हो कर सूरतुल बक़रह की कुछ आयात तिलावत की गई[4] इस के बा'द मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी

मदीना

(1) : मुस्तहब येह है कि सिरहाने की तरफ़ से दोनों हाथों से तीन बार मिट्टी डालें। पहली बार कहें مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ हम ने ज़मीन ही से तुम्हे बनाया। दूसरी बार وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ और इसी में तुम्हें फिर ले जाएंगे। तीसरी बार وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ﴿۵۵﴾ और इसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे। (پ ١٦، طٰهٰ: ٥٥) कहें। (फ़तावा हिन्दिय्या, 1/166) अब बाक़ी मिट्टी फावड़े वग़ैरा से डाल दें।

(2) : क़ब्र चोखूंटी न बनाएं बल्कि इस में ढाल रखें जैसे ऊंट का कोहान। क़ब्र एक बालिश्त ऊंची हो या इस से मा'मूली ज़ियादा। (ردالمحتار على الدر المختار، ٣/١٦٩)

(3) : हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि हादिये राहे नजात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم दो क़ब्रों के पास से गुज़रे तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने खजूर की ताज़ा टहनी मंगवाई और इसे आधों आध चीरा और हर एक की क़ब्र पर एक एक हिस्सा गाड़ दिया। (صحیحُ البخاری، ١/٩٥ حدیث ٢١٦ ملتقطا) क़ब्र पर फूल डालना बेहतर है कि जब तक तर रहेंगे तस्बीह करेंगे और मय्यित का दिल बहलेगा। (رَدُّ المُحتار، ٣/١٨٤ बहारे शरीअत, जि. 1 स. 851)

(4) : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि मैं ने मोहतरम नबी, मक्की मदनी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : जब तुम में से कोई मर जाए तो उसे रोक न रखो, उसे उस की क़ब्र तक जल्दी पहुंचाओ, उस के सर के पास सूरए बक़रह का शुरूअ और पैरों के पास सूरए बक़रह का आख़िरी रुकूअ पढ़ो। (شعب الایمان ج٧ ص١٦ حدیث:٩٢٩٤)

मुस्तहब येह है कि दफ़्न के बा'द क़ब्र पर सूरए बक़रह का अव्वल व आख़िर पढ़ें। (الجوهرة النيّرة ص١٤١) सिरहाने الٓمّٓ ۚ से الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵﴾ तक और पइन्ती اٰمَنَ الرَّسُوْلُ से ख़त्मे सूरत तक पढ़ें। (बहारे शरीअत, 1/846)

www.dawateislami.net

इस्लामी मौलाना अब्दुन्नबी हमीदी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی ने मय्यित को तल्क़ीन की[1] फिर क़ब्र पर अज़ान दी गई[2] आख़िर में मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी व रुक्ने शूरा, हाजी अबू मदनी अब्दुल हबीब अत्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی ने दुआ करवाई, यूं मदनी इन्आमात के ताजदार, महबूबे अत्तार (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار) की तदफ़ीन के मुआमलात तक्मील को पहुंचे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

---

(1) : हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जब तुम्हारे किसी मुसलमान भाई का इन्तिक़ाल हो और उस की क़ब्र पर मिट्टी बराबर कर चुको तो तुम में से एक शख़्स उस की क़ब्र के सिरहाने खड़ा हो कर कहे يَافُلَانَ ابْنَ فُلَانَةٍ कि वोह सुनेगा और जवाब न देगा। फिर कहे : يَافُلَانَ ابْنَ فُلَانَةٍ वोह सीधा हो कर बैठ जाएगा, फिर कहे : يَافُلَانَ ابْنَ فُلَانَةٍ वोह कहेगा : हमें इरशाद कर, अल्लाह तआला तुझ पर रहम फ़रमाए। मगर तुम्हें उस के कहने की ख़बर नहीं होती। फिर कहे :

اُذْكُرْ مَاخَرَجْتَ عَلَيْهِ مِنَ الدُّنْيَا شَهَادَةَ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) وَاَنَّكَ رَضِيْتَ بِاللّٰهِ رَبًّا وَبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَبِمُحَمَّدٍ (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) نَبِيًّا وَبِالْقُرْاٰنِ اِمَامًا

नकीरैन एक दूसरे का हाथ पकड़ कर कहेंगे : चलो हम उस के पास क्या बैठें जिसे लोग उस की हुज्जत सिखा चुके। इस पर किसी ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अगर उस की मां का नाम मा'लूम न हो, फ़रमाया : तो हव्वा की तरफ़ निस्बत करे। (المعجم الكبير، ٨/٢٤٩، حديث٧٩٧٩) **नोट** : फुलां बिन फुलाना की जगह मय्यित और उस की मां का नाम ले। अगर मय्यित की मां का नाम मा'लूम न हो तो मां के नाम की जगह हव्वा رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهَا का नाम ले। तल्क़ीन सिर्फ़ अरबी में पढ़ें। (नमाज़ के अहकाम, स. 460)

(2) : मिट्टी बराबर करने के बा'द क़ब्र पर अज़ान दीजिये। मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "येह वक़्त इम्तिहाने क़ब्र का है, अज़ान में नकीरैन के सारे सुवालात के जवाबात की तल्क़ीन भी है और इस से मय्यित के दिल को तस्कीन भी होगी और शयातीन का दफ़इय्या भी होगा और अगर क़ब्र में आग है तो इस की बरकत से बुझा दी जाएगी, इसी लिये पैदाइश के वक़्त बच्चे के कान में, दिल की घबराहट, आग लगने, जिन्नात के ग़लबे वग़ैरा पर अज़ान सुन्नत है।" (मिरआतुल मनाजीह 2/444)

www.dawateislami.net

(109) हाजी मुश्ताक़ की हाजी ज़म ज़म से मुलाक़ात

हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى के तीजे (सिवुम) के मौक़अ पर दा'वते इस्लामी के मदनी मराकिज़ पर 23 ज़ुल क़ा'दा 1433 हि. बरोज़ जुमा'रात को ईसाले षवाब का एहतिमाम किया गया, अस्र ता मग़रिब कुरआन ख़्वानी हुई और नमाज़े मग़रिब के बा'द आलमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में बयान करते हुए शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया : ग़ुलाम ज़ादए अ़त्तार ह़ाजी उ़बैद रज़ा ने मुझे कुछ यूं बताया : ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى के विसाल से कमो बेश तीन हफ़्ते पहले 14 सितम्बर 2012 ई. की रात मैं ने ख़्वाब में एक मन्ज़र कुछ यूं देखा कि मर्ह़ूम निगराने शूरा **ह़ाजी मुश्ताक़** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى तेज़ी से कहीं जा रहे हैं, मैं ने बे तकल्लुफ़ी वाले अन्दाज़ में पूछा : ह़ाजी मुश्ताक़ ! आप इतनी जल्दी जल्दी कहां जा रहे हैं ? फ़रमाया : **ज़म ज़म भाई को लेने जा रहा हूं, मेरे साथ प्यारे आक़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **भी हैं ।** मैं ने जूंही निगाह उठाई मेरी नज़र **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर पर पड़ी जो कि ह़ाजी मुश्ताक़ के साथ ही जल्वा फ़रमा थे, एक दम मेरे होंट बन्द हो गए, मुझ से कुछ भी अ़र्ज़ न किया जा सका, **सरकारे नामदार** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले जाने लगे और ह़ाजी मुश्ताक़ अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى

www.dawateislami.net

अपने आक़ा صَلَّى اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे पीछे रवाना हो गए। इसी ख़्वाब के दूसरे मन्ज़र में हाजी मुश्ताक़ अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی फिर मुझे दिखाई दिये मगर इस मरतबा वोह अकेले थे, खुशी भरे अन्दाज़ में फ़रमाने लगे : **"मुबारक हो कि रसूले अकरम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सब से पहले ज़म ज़म से मुलाक़ात फ़रमाई।"** हाजी उबैद रज़ा मदनी سَلَّمَہُ الْغَنِی ने मर्हूम हाजी **ज़म ज़म रज़ा** की अलालत (या'नी बीमारी) के दौरान येह ख़्वाब बयान न करने की हिक्मत येह बयान की, कि (ख़्वाब हुज्जत तो होता नहीं मगर) कहीं ऐसा न हो कि ख़्वाब सुन कर इस्लामी भाई इलाज के तअल्लुक़ से ग़फ़्लत में पड़ जाएं। गुलाम ज़ादे का इसरार था कि येह ख़्वाब मेरे नाम से बयान न किया जाए। मैं ने कहा कि येह बात आप मेरी और निगराने शूरा की सवाबदीद पर छोड़ दीजिये इस पर वोह ख़ामोश हो गए। निगराने शूरा इन का नाम ज़ाहिर करने पर मुसिर थे लिहाज़ा इज़्हार कर दिया गया।

(110) मय्यित की उल्टी आंख कुछ कुछ खुल गई!

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ मज़ीद कुछ यूं फ़रमाते हैं कि मर्हूम हाजी **ज़म ज़म रज़ा** के ग़ुस्ल की तय्यारी की जा रही थी, मैं भी हाज़िर हो गया, मैं मर्हूम के चेहरे को बग़ौर देख रहा था, इतने में **बाईं आंख में मा'मूली सी हरकत महसूस हुई, मैं चेहरे की तरफ़ झुक गया तो इन की आंख का कुछ हिस्सा खुल चुका था और आंसू चमक रहे**

थे, मैं ब दस्तूर खड़ा हो गया तो आंख बन्द हो गई, मेरी बाईं तरफ़ निगराने शूरा हाजी इमरान سلمه الرحمن खड़े थे, उन से तज़किरा किया तो वोह भी येह मन्ज़र देख चुके थे, मेरे दाईं तरफ़ दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के मुसद्दिक़ मुफ़्ती फ़ुज़ैल साहिब مَدَّظِلُّهُ العَالِی खड़े थे, उन की तवज्जोह दिलाई तो वोह भी मुतवज्जेह हुए, निगराने शूरा ने मुझ से फिर चेहरे की तरफ़ झुकने का कहा, मैं ने तअमीले इरशाद की तो **अब की बार पहेले से ज़ियादा आंख खुली और पुतली भी नज़र आने लगी, आंसू भी निकल आए ।** येह मन्ज़र मुफ़्ती साहिब समेत कई हाज़िरीन ने अपनी खुली आंखों से देखा ।

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(111) जिन्नात की अश्कबारी

चिश्तियां (पंजाब) के इस्लामी भाई हस्सान रज़ा अत्तारी का बयान कुछ इस तरह है कि मैं आलमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में तजवीद व क़िराअत कोर्स (साले अव्वल) का तालिबुल इल्म हूं, 21 ज़ुल का'दह सि. 1433 हि. शबे मंगल मैं महबूबे अत्तार हाजी ज़म ज़म रज़ा अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَارِی की इयादत व ज़ियारत की निय्यत से अस्पताल हाज़िर हुवा तो वोह बे होश थे । ज़ियारत कर के मैं वापस आ गया और फ़ैज़ाने मदीना में अपने रिहाइशी कमरे में आ कर सो गया । **अचानक कमरे में किसी के रोने की आवाज़ें आने लगीं,** मेरी आंख खुल गई

www.dawateislami.net

देखा तो कमरे में कोई नहीं था, मैं ने करवट बदल कर आंखें बन्द कर लीं और दोबारा सोने की कोशिश करने लगा। **मैं ने महसूस किया कि कमरे में बहुत से लोग हैं जो बेचैनी के आलम में इधर उधर आ जा रहे हैं, रोने की आवाज़ें फिर से आने लगीं,** कमरे की लाइट भी बन्द थी, मुझ पर अजीब दहशत और ख़ौफ़ तारी हो गया लेकिन मैं दिल मज़बूत कर के लैटा रहा। थोड़ी ऊंघ आई तो किसी ने मेरा पाऊं हिलाया, मैं एक दम उठ बैठा मगर कमरे में कोई नहीं था। मैं कमरे से बाहर निकला और वुज़ू ख़ाने की तरफ़ चल दिया। रास्ते में एक इस्लामी भाई ने हाजी ज़मज़म रज़ा अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के इन्तिक़ाल की ख़बर दी, सच्ची बात है कि मुझे यक़ीन नहीं आया लेकिन मदनी चैनल पर देखा तो इन के इन्तिक़ाले पुर मलाल की ख़बर चल रही थी। अब मुझे अन्धेरे कमरे में लोगों का रोना, बेचैनी से इधर उधर टहलना और मुझे जगाना लेकिन किसी का दिखाई न देना समझ में आ गया, ऐसा लगता है कि वोह जिन्नात थे जो मदनी इन्आमात के ताजदार, महबूबे अत्तार हाजी ज़मज़म रज़ा अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के विसाल पर ग़मज़दा हो कर आंसू बहा रहे थे क्यूंकि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने बयानात व गुफ़्त्गू में जिन्नात बिल ख़ुसूस अत्तारी जिन्नात का गाहे ब गाहे ज़िक्र किया करते थे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(112) ख़्वाब में तशरीफ़ ले आए

ज़म ज़म नगर हैदराबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के इस्लामी भाई मुहम्मद सलीम अत्तारी का बयान है कि मेरा तअल्लुक़ हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى के अलाक़े "हीराबाद" से है, मुझे इन से बेहद महब्बत थी, जिन दिनों येह शदीद बीमार हुए तो मेरी बहुत ख़्वाहिश थी कि मैं इन की इयादत व ज़ियारत कर सकूं लेकिन किसी मजबूरी की वजह से ऐसा न कर सका। एक रात जब मैं सोया तो हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى मेरे ख़्वाब में तशरीफ़ ले आए और मेरी ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त की और अपने लिये दुआ का फ़रमाया। फ़िर जिस रात इन का इन्तिक़ाल हुवा तो मुझे इस का इल्म नहीं था लेकिन रात को मेरे ख़्वाब में एक इस्लामी भाई तशरीफ़ लाए और फ़रमाने लगे : अब **मदनी चैनल** पर हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى का चर्चा होगा। सुब्ह जब मैं बेदार हुवा तो पता चला कि महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى इन्तिक़ाल फ़रमा गए हैं, फिर मुझे सारा दिन मदनी चैनल पर इन्हीं का चर्चा दिखाई दिया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मर्हूम पर करोड़ों रहमतें नाज़िल फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(113) बा'दे वफ़ात हाजी ज़म ज़म ने ख़्वाब में आ कर ख़बर दी कि ....

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : गुलाम ज़ादा हाजी उ़बैद रज़ा मदनी سَلَّمَهُ الْغَنِى की

www.dawateislami.net

तर्बिय्यत में मदनी इन्आमात के ताजदार, महबूबे अत्तार, हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى का बहुत हिस्सा था, दोनों के माबैन महब्बत का अज़ीम रिश्ता क़ाइम था, मर्हूम की अलालत के दौरान गुलाम ज़ादे ने अपनी बसात के मुताबिक़ ख़ूब ख़िदमत की सआदत हासिल की, इन की वफ़ात पर येह बेहद रन्जीदा हो गए थे, मर्हूम ने ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर इन की दिलजोई का सामान किया। चुनान्चे गुलाम ज़ादे का बयान अपने अल्फ़ाज़ में अर्ज़ करने की सअ्य करता हूं : "मैं ने मर्हूम हाजी **ज़म ज़म रज़ा** को बा'दे वफ़ात दो से तीन बार इस हालत में ख़्वाब के अन्दर देखा कि दाढ़ी मुबारक के अकषर बाल काले हैं और कहीं कहीं हल्की हल्की लाल मेहंदी लगी है, इन्हों ने सफ़ेद लिबास ज़ैबे तन किया हुवा है और सब्ज़ सब्ज़ इमामे का ताज सर पर सजा रखा है और फ़रमा रहे हैं : **"आप परेशान न हों मैं बहुत ख़ुश हूं।"**

वासिता प्यारे का ऐसा हो कि जो सुन्नी मरे
यूं न फ़रमाएं तेरे शाहिद कि वोह फ़ाजिर गया

(हदाइक़े बख़्शिश शरीफ़, स. 53)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(114) मैं नमाज़े अस्र पढ़ने लगा हूं

एक इस्लामी बहन का बयान कुछ यूं है कि महबूबे अत्तार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار की मौत पर रश्क आता है काश ! ऐसी मौत मुझे भी आए। मदनी चैनल पर इन की तदफ़ीन के मनाज़िर देखने के बा'द मैं इन की सआदतों पर रश्क करते करते सो गई, ख़्वाब में क्या देखती हूं कि हाजी **ज़म ज़म**

www.dawateislami.net

रज़ा अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى सब्ज़ सब्ज़ इमामा सजाए बैठे हैं। मैं बड़ी हैरान हुई कि येह इन्तिक़ाल फ़रमा चुके हैं, इस तरह क्यूं बैठे हुए हैं तो फ़रमाने लगे : "मैं अस्र की नमाज़ पढ़ने लगा हूं।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(115) क़ब्र में तिलावते कुरआन कर रहे हैं

रावल पिन्डी (पंजाब पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन का बयान कुछ यूं है कि मुझे (तीजे के) इजतिमाअ़ के दौरान कुछ ऊंघ आ गई तो क्या देखती हूं कि हाजी **जम़ जम़ रज़ा अत्तारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى **अपनी क़ब्र शरीफ़ में तिलावते कुरआन फ़रमा रहे हैं।**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(116) हाजी ज़म ज़म को रौज़ए अत़हर के क़रीब देखा

जामिअ़तुल मदीना (सख्खर, बाबुल इस्लाम सिन्ध पाकिस्तान) के मुदर्रिस मुहम्मद नवीद अत्तारी मदनी के बयान का लुब्बे लुबाब है कि हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى के विसाल के बा'द 27 ज़ुल क़ा'दा सि 1433 हि. ब मुताबिक़ 15 अक्तूबर सि. 2012 ई. बरोज़ पीर नमाज़े फ़ज्र से कुछ देर पहले मैं ने ख़्वाब में ख़ुद को जामिअ़तुल

मदीना (सख्खर पाकिस्तान) के एक तालिबे इल्म के साथ सरकारे रिसालत मआब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के रोज़ए मुबारका के सामने पाया। मैं ने देखा कि रौज़ए मुबारका की जालियां खुली हुई हैं, मैं एक रास्ते से अन्दर जाना चाहता हूं मगर जा नहीं पा रहा। दो तीन बार ऐसा हुवा फिर मुझे **दा'वते इस्लामी** की **मर्कज़ी मजलिसे शूरा** के मर्हूम रुक्न हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى मज़ारे पाक की पिछली तरफ़ नज़र आए और इन्हों ने मुझे इशारा कर के अन्दर बुलाया। मैं मज़कूरा तालिबे इल्म के साथ अन्दर हाज़िर हुवा, दोनों हाथ अदब से बांध लिये, मेरी आंखों से अश्क जारी थे कि आज किस **अज़ीमुल मर्तबत आक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हूं। इस के बा'द हाजी ज़म ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने मुझे मज़ारे मुबारक के बिल्कुल क़रीब बिठा दिया। मुझे ख़्वाब ही ख़्वाब में यूं महसूस हो रहा था कि **गोया हाजी ज़म ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم **मज़ारे मुबारक पर ख़ादिम की हैषिय्यत से मौजूद हैं।**

येही आरज़ू हो जो सुर्ख़रू मिले दो जहान की आबरू
मैं कहूं : ग़ुलाम हूं आप का, वोह कहें कि हम को क़बूल है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

www.dawateislami.net

नेक ख़्वाब बिशारतें हैं

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है : "नुबुव्वत गई, अब मेरे बा'द नुबुव्वत न होगी मगर **बिशारतें**।" अ़र्ज़ की गई : "वोह क्या हैं ?" फ़रमाया : "**अच्छे ख़्वाब** कि नेक आदमी खुद देखे या उस के लिये देखा जाए। (या'नी दूसरा शख़्स इस के मुतअ़ल्लिक़ ख़्वाब देखे)।"

(الموطّا لامام مالك، ٢/ ٤٤٠، الحديث ١٨٣٣ ملتقطاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मदनी एहतिमाम

इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अपने रिसाले "صَفَائِحُ اللُّجَيْن فِي كَوْنِ التَّصَافُحِ بِكَفَّيِ الْيَدَيْن" में लोगों के आगे ख़्वाब बयान करने के बारे में तह़रीर फ़रमाते हैं : अह़ादीषे सह़ीह़ा से षाबित है कि हुज़ूरे अक़्दस सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इसे (या'नी ख़्वाब को) अम्रे अ़ज़ीम जानते और इस के सुनने, पूछने, बताने, बयान फ़रमाने में निहायत दरजे का एहतिमाम फ़रमाते। सह़ीह़ बुख़ारी वग़ैरा में ह़ज़रते समुरा बिन जुन्दब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से हैं : **हुज़ूरे पुरनूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़े सुब्ह़ पढ़ कर ह़ाज़िरीन से दरयाफ़्त फ़रमाते "आज की शब किसी ने कोई ख़्वाब देखा ?" जिस (किसी) ने देखा होता अ़र्ज़ कर देता, हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ता'बीर फ़रमाते।

(صحيح بخارى، ١/ ٤٦٧ الحديث ١٣٨٦ ملتقطاً و فتاوىٰ رضويه ج ٢٢، ص ٢٧٠)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अच्छे ख़्वाब बयान करने की इजाज़त

अच्छे ख़्वाब अच्छे ही होते हैं इन को बयान करने की शरअ़न इजाज़त है, चुनान्चे फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : जब तुम में से कोई ऐसा ख़्वाब देखे जो उसे प्यारा मा'लूम हो तो चाहिये कि इस पर **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द बजा लाए और **लोगों के सामने बयान करे ।**

(مُسندِ امام احمد، ٢/ ٥٠٢ الحديث ٦٢٢٣)

صَلُّوا عَلَى الۡحَبِيبِ ! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

ख़्वाब बयान करने में क्या निय्यत होनी चाहिये ?

सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ की सब से पहली ह़दीष है : اِنَّمَا الۡاَعۡمَالُ بِالنِّيَّات या'नी आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है । लिहाज़ा अगर कोई **हुब्बे जाह** के बाइ़ष लोगों को अपना ख़्वाब सुनाता, अपनी शोहरत और वाह वाह चाहता है तो वाक़ेई **मुजरिम** है और अगर अच्छी निय्यत से सुनाता है, मषलन **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से मुतअ़ल्लिक़ कोई ईमान अफ़्रोज़ बिशारत मिली, सुन्नतों की तर्बिय्यत के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र के दौरान किसी ख़ुश नसीब ने अच्छा ख़्वाब देखा अब वोह इस लिये सुना रहा है कि इस पुर फ़ितन दौर में लोगों को राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र की तरग़ीब मिले और उन्हें इत़्मीनान की दौलत नसीब हो कि **दा'वते इस्लामी** अहले ह़क़ और आ़शिक़ाने रसूल की सुन्नतों भरी मदनी तह़रीक है और इस पर **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم का ख़ास फ़ज़्लो करम है तो यूं वोह तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता

हो कर अपने **ईमान की हिफ़ाज़त** का सामान करें, येह निय्यत महमूद है और इस निय्यत से ख़्वाब सुनाने वाले को اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ षवाब मिलेगा। नीज़ **तहदीषे ने'मत** या'नी ने'मत का चर्चा करने की निय्यत से सुनाता है तब भी जाइज़ है। हां, अगर रियाकारी का ख़ौफ़ हो तो अपना नाम ज़ाहिर न करे कि इस में ज़ियादा आफ़िय्यत है। बहर हाल दिल की निय्यत का हाल **अल्लाह** जुल जलाल عَزَّوَجَلَّ जानता है। मुसलमान के बारे में बिला वजह **बद गुमानी करना हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है,** लिहाज़ा अ़र्ज़ है कि किसी ख़्वाब बयान करने वाले मुसलमान पर ख़्वाह म ख़्वाह बद गुमानी न की जाए। बद गुमानी की कुरआने पाक और अहादीषे मुबारका में मज़म्मत वारिद हुई है। पारह 26 सूरए हुजुरात की बारहवीं आयत में इरशादे रब्बे काइनात عَزَّوَجَلَّ है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ

(پ۲۶، الحُجرات: ۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! बहुत गुमानों से बचो बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है।*

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "बद गुमानी से बचो बेशक बद गुमानी बद तरीन झूट है।"

(صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب مایخطب علی خطبة اخیه، الحدیث ۵۱۴۳، ج۳، ص۴۴۶)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

झूटा ख़्वाब बयान करने वाले का अन्जाम

बिल फ़र्ज़ कोई झूटा ख़्वाब घड़ कर सुनाता भी है तो इस का वोह ख़ुद ही ज़िम्मेदार, सख़्त गुनाहगार और अज़ाबे नार का ह़क़दार है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जो झूटा ख़्वाब बयान करे उसे बरोज़े क़ियामत जव के दो दानों में गांठ लगाने की तक्लीफ़ दी जाएगी और वोह हरगिज़ गांठ नहीं लगा पाएगा ।" (صحيح بخاری،٤/٤٢٢ حديث ٧٠٤٢) **अलबत्ता** ख़्वाब सुनाने वाले से क़सम का मुत़ालबा शरअ़न वाजिब नहीं और जो مَعَاذَاللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ झूटा होगा, हो सकता है वोह झूटी क़सम भी खा ले ।

ख़्वाब की चार क़िस्में

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़षे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द 29 सफ़ह़ा 87 पर फ़रमाते हैं : ख़्वाब चार क़िस्म के है : **एक** ह़दीषे नफ़्स के दिन में जो ख़यालाते क़ल्ब (या'नी दिल) पर ग़ालिब रहे जब सोया और इस त़रफ़ से ह़वास मो'त़िल हुए आ़लमे मिषाल ब क़दरे इस्ति'दाद मुन्कशिफ़ हुवा । इन्हीं तख़य्युलात की शक्लें सामने आईं येह ख़्वाब महमल व बे मा'ना है और इस में दाख़िल है

वोह जो किसी ख़लत के ग़लबे इस के मुनासिबात नज़र आते हैं मषलन सफ़रावी आग देखे बलग़मी पानी। **दूसरा** ख़्वाब इलक़ाए शैत़ान है और वोह अकषर वह़शतनाक होता है शैत़ान आदमी को डराता या ख़्वाब में उस के साथ खेलता है इस को फ़रमाया कि किसी से ज़िक्र न करो कि तुम्हें ज़रर न दे। ऐसा ख़्वाब देखे तो बाईं त़रफ़ तीन बार थूक दे और अऊ़ज़ पढ़े और बेहतर येह है कि वुज़ू कर के दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े। **तीसरा** ख़्वाब इलक़ाए फ़िरिश्ता होता है इस से गुज़श्ता व मौजूदा व आयन्दा ग़ैब ज़ाहिर होते हैं मगर अकषर पर्दए तावीले क़रीब या बईद में व लिहाज़ा मोह़ताजे ता'बीर होता है। **चौथा** ख़्वाब कि रब्बुल इ़ज़्ज़त बिला वासित़ा इलक़ा फ़रमाए वोह साफ़ सरीह़ होता है और एह़तियाजे ता'बीर से बरी, واللہ تعالیٰ اعلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالیٰ علیٰ محمَّد

(117) मज़ार शरीफ़ बनाने का ए'लान

ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्त़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی के तीजे में बयान करते हुए अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने जब इस ख़्वाहिश का इज़हार किया कि ह़ाजी मुश्ताक़ अ़त्त़ारी, मुफ़्ती फ़ारूक़ अ़त्त़ारी मदनी और ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्त़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم की क़ब्रों पर मज़ार शरीफ़ की इ़मारत ता'मीर कर देनी चाहिये कि बुज़ुर्गाने दीन की क़ुबूर पर ऐसा करना अहले सुन्नत का मा'मूल भी है और ज़ाइरीन के लिये सहूलत का सामान भी, लेकिन दा'वते इस्लामी के चन्दे से येह काम न किया जाए बल्कि इस के लिये अलग से रक़म जम्अ़ की जाए। येह बयान मदनी चैनल पर बराहे रास्त (LIVE) टेली कास्ट हो

www.dawateislami.net

रहा था, अ़रब अमारत के एक इस्लामी भाई ने मदनी चैनल पर सुन कर हाथों हाथ निगराने शूरा को s.m.s किया कि मज़ार शरीफ़ बनाने का सारा ख़र्चा में उठाऊंगा। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने ख़ुश हो कर उन्हें ख़ूब दुआओं से नवाज़ा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अय्यामे मुबल्लिग़ीने दा'वते इस्लामी मनाने का अ़ज़्म

तीजे के इजतिमाए पाक में शैखे़ तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत (دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه), अराकीने शूरा व दीगर ज़िम्मेदारान की त़रफ़ से बुज़ुर्गाने दीन के अय्याम के साथ साथ तीनों मर्हूमीन के अय्याम मनाने का भी अ़ज़्म किया गया कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ 29 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म को "**यौमे मुश्ताक़**", 18 मुहर्रमुल ह़राम को "**यौमे मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी**" और 21 ज़ुल क़ा'दह को "**यौमे ज़म ज़म**" मनाया जाएगा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल मदीना लाइब्रेरियों का क़ियाम

तीजे के बयान में मह़बूबे अ़त्तार ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى के ईसाले षवाब के लिये "**अल मदीना लाइब्रेरी**" के नाम से बे शुमार लाइब्रेरियां क़ाइम करने की भी तरग़ीब दी गई और येह भी वज़ाह़त की गई कि इस का इन्तिज़ाम व इन्सिराम आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में मौजूद "**मजलिसे अल मदीना**

लाइब्रेरी" करेगी, इस लिये जो इस्लामी भाई अल मदीना लाइब्रेरी क़ाइम करना चाहते हैं, वोह आलमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना कराची से राबिता करें, अपने तौर पर किसी को दुन्या में कहीं भी येह लाइब्रेरी क़ाइम करने की मदनी मर्कज़ की तरफ़ से इजाज़त नहीं। जो इस्लामी भाई अल मदीना लाइब्रेरी के लिये अतिय्यात जम्अ करवाना चाहते हों, वोह इस अकाउन्ट नम्बर में जम्अ करवा सकते हैं :

अकाउन्ट टाइटल : दा'वते इस्लामी (अल मदीना लाइब्रेरी) अकाउन्ट नम्बर 089101012077

बैंक का नाम UBL Ameen ब्रांच : एम ए जिन्नाह रोड, कराची, सोफ़्ट कोड : UNILPKKA

नोट : इस अकाउन्ट नम्बर में लाइब्रेरी के लिये ज़कात फ़ित्रा नहीं सिर्फ़ नफ़्ली अतिय्यात जम्अ करवाए।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللهُ تعالٰی علٰی محمَّد

(118) ईसाले षवाब के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र

हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के तीजे में बयान करते हुए शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने जब हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के ईसाले षवाब के लिये दा'वते इस्लामी के **मदनी क़ाफ़िलों** में तीन दिन के सुन्नतों भरे सफ़र की तरग़ीब दिलाई तो हाथों हाथ सेंकड़ों इस्लामी भाइयों ने मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र किया, जिन में कषीर इस्लामी भाइयों ने सह़राए मदीना बाबुल मदीना कराची की तरफ़ सफ़र किया, और तीन दिन हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के मज़ार के अतराफ़ में नेकी की दा'वत आम करने का ख़ूब ख़ूब सिलसिला

रहा जिस में दीगर सेंकड़ों इस्लामी भाई भी शरीक हुए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(119) इ़ब्रत अंगेज़ बात

हाजी ज़म ज़म के बच्चों की अम्मी का बयान है कि चन्द माह से हैदराबाद (हीराबाद काली मौरी) में हम अपना मकान बना रहे थे, मर्हूम ने बहुत दिलचस्पी से इस का ता'मीरी काम करवाया था, अभी हम नए घर में मुन्तक़िल हुए ही थे और इन्हों ने वहां एक ही दिन का खाना खाया था, कि बाबुल मदीना चले गए और फिर वहीं से दारे आख़िरत की तरफ़ कूच कर गए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत के तअ़ष्शुरात

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मदनी इन्आ़मात के ताजदार, महबूबे अ़त्तार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار के तीजे के मौक़अ़ पर बयान करते हुए इन के बारे में अपनी महब्बतों का ख़ूब इज़हार फ़रमाया, इस के चन्द इक़तिबासात मुलाह़ज़ा कीजिये :

(ह़स्बे ज़रूरत तरमीम की गई है)

www.dawateislami.net

❁ हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने मेरे साथ बहुत वक़्त गुज़ारा, मैं ने इन में बहुत ख़ूबियां पाई हैं और सहीह़ बात है कि मैं इन की सोह़बत पसन्द करता था और इन के सबब अपने अन्दर बेहतरियां महसूस करता और अपने लिये इस्लाह़ का सामान करता, सच्ची बात है नेकों की ख़ूब बरकतें होती हैं।

❁ **हाजी ज़म ज़म रज़ा** मुझ से बड़ी महब्बत करते थे, मैं भी इन से महब्बत करता था, मुझे तो इतना चाहते थे कि इन को ह़ैदराबाद में चैन नहीं पड़ता था, आम त़ौर पर भाग भाग कर आ जाते थे और बारहा ऐसा होता कि जब येह जाने लगते थे तो अफ़्सुर्दा होते और अकषर पेड के एक दो सफ़्हे लिख कर मुझे पढ़ा देते थे और उस में कुछ इस त़रह़ के तअष्युरात होते थे कि "आप के यहां की दुन्या कुछ और है, और अब मैं जहां जाऊंगा वोह दुन्या कुछ और है। आह ! अब हर त़रफ़ बद निगाही का सामान होगा, गुनाहों भरी गुफ़्तगू का सिलसिला होगा" और बेचारे ह़ाजी ज़म ज़म बोलते थे कि "बाहर बहुत आज़माइश है, बहुत आज़माइश है" येह इन का ज़ेह्न था।

❁ बरसों से मेरे पास इन का आना जाना था और कई कई दिन येह मेरे पास तशरीफ़ फ़रमा रहते थे लेकिन इन का अपना अन्दाज़ था, कभी सुवाल करते नहीं देखा कि "येह दे दो, वोह ज़रा मुझे खिला दो, वोह जो आप के पास फुलां चीज़ है ज़रा मुझे दे दो, मैं अपने बच्चे को दूंगा" हां कभी कुछ पेश किया तो इन्कार भी नहीं फ़रमाते थे ख़ुशी ख़ुशी क़बूल फ़रमा

www.dawateislami.net

लेते थे लेकिन सुवाल की आदत नहीं थी, खुद्दारी बहुत थी। मैं ने कभी अपनी ज़िन्दगी में इन को क़हक़हा मार कर हंसते नहीं देखा, क़हक़हा न लगाना सुन्नत है, इस सुन्नत पर येह सख़्ती से आमिल थे, इसी तरह मैं ने कभी इन को मज़ाक़ मस्ख़री करते नहीं देखा और येह भी नहीं देखा कि किसी पर चीख़े हों या किसी को झाड़ा हो।

❁ अपनी तक्लीफ़ों का ज़ियादा तज़किरा नहीं करते थे, बेचारे बीमारियों से बहुत परेशान हो गए थे तो मुझे कुछ बताते थे जैसे बाप को बच्चे बताते हैं और मुझे बताने का मक़्सद आम तौर पर दुआ करवाना होता था। अस्पताल से भी दुआओं के लिये इन के s.m.s आते रहते थे, जब तक इन में ताक़त रही दुआओं के लिये मुझे पैग़ामात भेजते रहते थे।

❁ सिक्यूरिटी और हिफ़ाज़ती उमूर के मुआमलात एक दम सख़्त हो जाने के बा'द मैं किसी मरीज़ को इतना देखने नहीं गया होऊंगा जितना इन को देखने गया, मैं कितनी बार अस्पताल पहुंचा इन को देखने के लिये मुझे गिनती भी अब याद नहीं रही, मुझे याद आते थे और मैं जा जा कर देखता था और फ़ोन पर भी कई बार मेरी गुफ़्तगू इन से हो जाती थी।

❁ बहर हाल हमारे हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى बहुत ख़ूबियों के मालिक थे और ईमानदारी की बात है कि बड़ी यादें इन्हों ने छोड़ी हैं, मदनी इन्आमात के तअल्लुक़ से हाजी ज़म ज़म का मुझ पर बहुत बड़ा एहसान है, बहुत बड़ा एहसान है, बहुत ही बड़ा एहसान है कि मदनी

इन्आमात इतने कामयाब नहीं हो रहे थे क्यूंकि इस में अमल करने की बात है, पहले मर्कज़ी मजलिसे शूरा और दीगर तरकीबें नहीं थीं बस मैं अकेला ही उमूमन मदनी इन्आमात के लिये कोशिश करता था और ज़िम्मेदारान की तरफ़ से कोई ख़ास हौसला अफ़्ज़ाई नहीं होती थी, हाजी ज़म ज़म ने मेरा बहुत हौसला बढ़ाया कि येह मदनी इन्आमात बहुत अच्छे हैं, इन में बड़ा फ़ाइदा है, आप हिम्मत रखिये। (दर अस्ल शुरूअ में येह "सुवालात" कहलाते थे, हाजी ज़म ज़म ने ही इन का नाम "मदनी इन्आमात" रखा !)

۞ **हाजी ज़म ज़म** ने जब "सुवालात" का नाम **मदनी इन्आमात** रखा, **मदनी इन्आमात** आम करने की कोशिशें कीं तो येह दुन्या में कहां से कहां निकल गए ! और आज اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तन्ज़ीमी तौर पर मदनी इन्आमात हमारे मदनी कामों का बहुत अहम हिस्सा बन चुके हैं। मदनी इन्आमात मेरे नफ़्स के लिये नहीं हैं, मैं नेक नहीं बन सका इस का मुझे ज़रूर ए'तिराफ़ है लेकिन मुझे नेकियां बहुत पसन्द हैं, मैं चाहता हूं कि हम सब नेक बन जाएं। हक़ीक़त में मदनी इन्आमात दा'वते इस्लामी की रूह हैं, तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस रूह को दा'वते इस्लामी वालों के अन्दर उतारने में हमारे हाजी ज़म ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم का बहुत बड़ा किरदार है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

शहज़ादए अत्तार के तअष्षुरात

शहज़ादए अत्तार हज़रत मौलाना हाजी अबू उसैद उबैद रज़ा अत्तारी मदनी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی से महबूबे अत्तार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار को बड़ी महब्बत थी, ब क़ौले अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی की वफ़ात का ख़ानदान के अफ़राद के बा'द जिस को सब से ज़ियादा सदमा पहुंचा होगा वोह शायद ग़ुलाम ज़ादा हाजी उबैद रज़ा होंगे। हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی के विसाल के बा'द **मदनी चैनल** पर होने वाले ख़ुसूसी मदनी मुकालमे में ब ज़रीअए फ़ोन शहज़ादए अत्तार ने जो कुछ फ़रमाया वोह बित्तसर्रुफ़ अर्ज़ है :

❁ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी अब मोहताजे तआरुफ़ नहीं रही, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने दा'वते इस्लामी के बाग़ की ख़ूब ख़ूब आबयारी की, इस की देख भाल के लिये मर्कज़ी मजलिसे शूरा की तरकीब की اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ इस के लिये चुन चुन कर बाग़बान रखे, मर्कज़ी मजलिसे शूरा का हर हर रुक्न अपनी जगह एक अनमोल हीरा है, इन्हीं में हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی भी थे, इन की तो बात ही कुछ और थी।

❁ महबूबे अत्तार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के पेश कर्दा मदनी इन्आमात पर आमिल थे, ज़बान व आंख के कुफ़्ले मदीना वाले थे।

❁ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की ख़्वाहिश थी कि मेरे इस्लामी भाई मदनी इन्आमात वाले हों, तो हाजी

ज़म ज़म रज़ा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इन मदनी इन्आ़मात को ले कर चले और इन की ख़्वाहिश थी कि इस्लामी भाई मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करें, ज़बान और आंख का कुफ़्ले मदीना लगाएं।

❁ ग़म ख़्वारी का तो बताने की ज़रूरत नहीं कि ह़ाजी ज़म ज़म रज़ा अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی दुख्यारों के किस क़दर ग़म ख़्वार थे और किस त़रह़ इस्लामी भाइयों से राबित़ा कर के इन की दिलजोई फ़रमाते थे, बा'ज़ अवक़ात येह मुझे भी s.m.s करते थे कि इन का येह मुआ़मला है आप ज़रा इन से सलाम दुआ़ कर लें। मेरे मोबाइल में इस त़रह़ का s.m.s मह़फ़ूज़ है कि "आप ह़ाजी ज़म ज़म से राबित़ा फ़रमा लें, येह इन का नम्बर है।" जब कोई पेचीदा मस्अला आता तो मैं इन की त़रफ़ रीफ़र (Refer) करता था। बा'द में हमारी मुशावरत हो जाती थी।

❁ सफ़र में हमारा काफ़ी साथ रहा है, सि. 1998 ई. में हिन्द के सफ़र में हम साथ रहे थे, इसी साल इन्हों ने **मदीनतुल औलिया अह़मदाबाद शरीफ़** में ए'तिकाफ़ भी किया था। इसी त़रह़ फ़ैज़ाने मदीना सरदाराबाद (फ़ैसलाबाद) के इफ़्तिताह़ के मौक़अ़ पर मेरी ह़ाज़िरी हुई वहां पर मेरी चन्द दिन रुकने की तरकीब बनी तो मैं ने बापा से अ़र्ज़ की : अगर मुझे ह़ाजी ज़म ज़म मिल जाएं तो आसानी हो जाएगी। तो बापा ने ह़ाजी ज़म ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के रुकने की भी तरकीब फ़रमाई और इस त़रह़ पंजाब में मेरा रुकना हुवा।

❁ इस के इ़लावा भी हमारा काफ़ी साथ रहा है रमज़ानुल मुबारक में, मो'तकिफ़ीन से मुलाक़ात के जदवल में, इसी त़रह़ जब सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत होती उस वक़्त भी येह

मेरे साथ होते थे, इन की वजह से मुझे काफ़ी आसानी हो गई थी, बा'ज़ अवक़ात येह मुझे s.m.s करते थे कि आप ज़िम्मादारान को येह s.m.s कर दे तो इस की अहम्मिय्यत बढ़ जाएगी, फिर मैं बा'ज़ ज़िम्मेदारान को अपने नम्बर से फ़ोरवर्ड करता था। येह अपना नाम नहीं फ़क़त मदनी काम चाहते थे कि बस जिस त़रह़ मेरे मुर्शिद चाहते हैं इस त़रह़ काम होना चाहिये। **अल्लाह** तआ़ला ह़ाजी ज़म ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की मग़फ़िरत फ़रमाए।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अराकीने शूरा के तअष्षुरात

ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्त़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی के विसाल के वक़्त हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से कई अराकीने शूरा बाबुल मदीना में मौजूद थे क्यूं कि इन के मदनी मश्वरे चल रहे थे। चुनान्चे मदनी मश्वरे में मुख़्तलिफ़ ज़ावियों से महबूबे अ़त्त़ार (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار) का ख़ूब ज़िक्रे ख़ैर हुवा, अराकीने शूरा ने इस के बारे में मुख़्तसर तौ़र पर जो तअष्षुरात दिये वोह येह थे कि ۞ ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्त़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی मुतह़म्मिल मिज़ाज व हमदर्द थे ۞ इन में ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा था ۞ समझाने का अन्दाज़ जारिह़ाना नहीं बल्कि नर्म होता था ۞ बिल ख़ुसूस अपने शहर ह़ैदराबाद की बुज़ुर्ग शख़्सिय्यत थे ۞ अ़वाम से घुलने मिलने वाले थे ۞ आ़म शख़्स का फ़ोन भी रिसीव कर लेते थे ۞ फ़ोन पर भी ग़म ख़्वारी किया करते थे ۞ आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची आते तो कई इस्लामी भाई इन को देख

कर मिलने पहुंच जाते और दुआओं के लिये अर्ज़ करते ۞ मज़ाक़ मस्ख़री से दूर थे ۞ सन्जीदा रहते ۞ ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले थे और गुनाहों के इर्तिकाब से डरते थे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

दीगर इस्लामी भाइयों के तअष्युरात

मदनी इन्आमात के ताजदार, महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَارِی के विसाल के बा'द कषीर इस्लामी भाइयों ने इन के बारे में अपने तअष्युरात मदनी चैनल को भेजे, ऐसे ही 14 तअष्युरात मुलाहज़ा कीजिये : (जुम्लों में हस्बे ज़रूरत तरमीम की गई है)

۞ रावल पिन्डी (पंजाब) के एक इस्लामी भाई अर्सलान क़ादिरी का कहना है : हमारा हुस्ने ज़न है कि रुक्ने शूरा व महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَارِی बहुत नेक व परहेज़गार इस्लामी भाई थे, हम मदनी चैनल पर जब भी इन्हें देखते तो वोह क़ुफ़्ले मदीना की ऐनक लगाए रखते थे और येह बहुत अच्छे अन्दाज़ में नेकी की दा'वत देते और बहुत अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारी और अब मर्हूम निगराने शूरा हाजी मुश्ताक़ अत्तारी और मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी मुफ़्ती मुहम्मद फ़ारूक़ अत्तारी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا के पहलू में दफ़्न हुए हैं,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

❁ साहिवाल (पंजाब) के एक इस्लामी भाई मुहम्मद इरफ़ान का बयान है कि हाजी ज़म ज़म रज़ा अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى हमारे अलाक़े में बयान के लिये तशरीफ़ लाए थे। जब बयान के बा'द हम गाड़ी पर इन को मदीनतुल औलिया मुल्तान छोड़ने के लिये जा रहे थे तो इन्हों ने हमें अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बहुत अच्छी अच्छी बातें बताईं और हमारी तर्बिय्यत फरमाई, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन की मग़फ़िरत फ़रमाए, اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

❁ मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के एक इस्लामी भाई अब्दुल क़दिर अत्तारी का बयान है कि बागे़ अत्तार के गुलाब के फूल (या'नी हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى) का इस दुन्या से रुख़्सत का पुर कैफ़ मन्ज़र देखा तो दिल में ह़सरत पैदा हुई कि काश मुझे भी ऐसी मौत मिल जाए।

❁ सरदाराबाद (फ़ैसलाबाद) के एक इस्लामी भाई मुह़म्मद शहबाज़ अत्तारी कहते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मेरी दुआ है कि मुझे भी हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى जैसा मदनी इन्आ़मात का आ़मिल बना दे।

❁ वोह केन्ट (पंजाब) के इस्लामी भाई अब्दुल ख़ालिक़ अत्तारी का बयान है कि मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى के ग़ुस्ल के वक़्त (आंख खोल कर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को देखने वाली) मदनी बहार नज़र आई तो आंखे अश्कबार हो गईं और दिल में

www.dawateislami.net

येह ह़सरत पैदा हुई कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम गुनाहगारों को भी येह सआ़दत नसीब फ़रमाए, اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

❁ बाबुल मदीना (कराची) में ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों के ज़िम्मेदार इस्लामी भाई मुह़म्मद वसीम अ़त्तारी का बयान है कि ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی के साथ बहुत वक़्त गुज़रा जिस में बहुत कुछ सिखने को मिला, आप इतने शफ़ीक़ थे कि बयान करने के लिये मेरे पास अल्फ़ाज़ नहीं, **बिल ख़ुसूस आप इस्लामी भाइयों के ज़ाएअ़ होने के मुआ़मले में बहुत ज़ियादा कुढ़ते थे और ज़ियाअ़ से बचाने के लिये हर एक को अपना महबूब बना कर रखते थे,** आप बिल ख़ुसूस आंखों के **कुफ़्ले मदीना** का बहुत ज़ेह्न देते थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन को आ'ला इ़ल्लियीन में जगह अ़त़ा फ़रमाए, اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

❁ शिफ़ा इन्टरनेशनल अस्पताल इस्लामाबाद के न्यूरो सर्जन डॉक्टर शाहिद अ़त्तारी का बयान है कि ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی यक़ीनन एक मुख़्लिस मुबल्लिग़ थे, इन्हों ने ज़िन्दगी के कई मुआ़मलात में मेरी रहनुमाई फ़रमाई, मुर्शिद से महब्बत और इत़ाअ़त का ज़ेह्न दिया। इन का इस दुन्या से चले जाना बहुत बड़ा अलमिया है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन के दरजात बुलन्द फ़रमाए, اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

۞ ज़म ज़म नगर (हैदराबाद बाबुल इस्लाम सिन्ध) मजलिसे मालियात के एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई मुहम्मद शाहिद अत्तारी का बयान है कि महबूबे अत्तार रुक्ने शूरा हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى जब भी मक्तब में तशरीफ़ लाते तो निगाहें झुकाए रखने, धीमी आवाज़ में बात करने और फ़िक्रे मदीना का ज़ेहन दिया करते थे।

۞ ज़म ज़म नगर (हैदराबाद बाबुल इस्लाम सिन्ध) में हिफ़ाज़ती उमूर के एक इस्लामी भाई का बयान है कि हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى को जब भी देखा मुतवाज़ेअ (या'नी आजिज़ी करने वाला) ही पाया।

۞ मदीनतुल औलिया मुलतान (पंजाब) की एक इस्लामी बहन का बयान है कि **मदनी चैनल** पर खुसूसी मदनी मुकालमे में सीरते महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के मुतअल्लिक़ सुन कर क़ल्बी खुशी हासिल हुई और आ'माले सालिहा का जज़्बा नसीब हुवा। मैं ने निय्यत की है कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आयन्दा मेरी कोई भी नमाज़ क़ज़ा नहीं होगी।

۞ कुसूर (पंजाब पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई नादिर रज़वी का बयान है कि **मदनी चैनल** पर मर्हूम रुक्ने शूरा महबूबे अत्तार, ताजदारे मदनी इन्आमात हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की सवानेहे हयात सुन कर, जनाज़े और तदफ़ीन के पुर कैफ़ मनाज़िर देख कर मेरी क़ल्बी कैफ़िय्यत तब्दील हो गई है, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने ता हयात इमामा सजाने की निय्यत की है।

www.dawateislami.net

(120) ज़म ज़म भाई ने मुझे बचा लिया

❁ ज़म ज़म नगर (हैदराबाद बाबुल इस्लाम सिन्ध) के इस्लामी भाई ग़ुलाम फ़रीद अत्तारी का बयान है कि महबूबे अत्तार رحمۃاللہ تعالٰی علیہ का मुझ पर बहुत बड़ा एह्सान है कि इन्हों ने मुझे बद मज़हबों के चुंगल से छुड़ा कर दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे मदनी माहोल में तक़रीबन बीस साल हो गए, मैं 17 साल से एक ही मस्जिद में इमामत करने की सआदत पा रहा हूं, येह मेरे ज़म ज़म भाई का सदक़ा है, **अल्लाह** तआला मुझे ईमान पर आफ़िय्यत के साथ मौत नसीब करे।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बक़िय्या उम्र मदनी काम करते हुए गुज़ारूंगा

❁ मिठयां (खारियां, पंजाब पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई मुहम्मद सईद अत्तारी ने मदनी चैनल को अपने तअष्षुरात कुछ यूं रेकॉर्ड करवाए कि मुझे अठ्ठारह साल हो गए दा'वते इस्लामी में कुछ ख़ास काम नहीं कर सका, मदनी चैनल पर हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَیہِ رَحمَۃُ اللہِ البَارِی का ज़िक्रे ख़ैर देख कर इन के काम की मदनी बहारें और ईसाले षवाब के ख़ज़ाने देख कर मैं निय्यत करता हूं कि जो उम्र बाक़ी बची है अब ख़ूब ख़ूब दा'वते इस्लामी का मदनी काम करूंगा और इसी जुमए से मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत भी करता हूं।

मदनी काम किया करूंगी

❁ सादिक़ाबाद (पंजाब) की एक इस्लामी बहन का बयान कुछ इस त़रह़ है कि पहले मैं दा'वते इस्लामी का ख़ूब मदनी काम किया करती थी, मदनी इन्आ़मात का रिसाला भी पुर कर के जम्अ़ करवाती और रोज़ाना **फ़ैज़ाने सुन्नत** से चार "घर दर्स" दिया करती थी, फिर मेरे वालिद साहिब का इन्तिक़ाल हो गया और मैं हिम्मत हार बैठी और सारा मदनी काम छोड़ दिया। मदनी इन्आ़मात के ताजदार, महबूबे अत्तार ह़ाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के विसाल पर मदनी चैनल के ज़रीए **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه व अराकीने शूरा की इन के लिये महब्बतें, मदनी क़ाफ़िलों और ईसाले षवाब की बहारें देख कर मैं ने पक्की निय्यत की है कि अब मैं दोबारा दा'वते इस्लामी का मदनी काम करना शुरूअ़ कर दूंगी, **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त मुझे इस पर इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(121) महबूबे अत्तार पर इनफ़िरादी कोशिश करने वाले इस्लामी भाई के तअ़ष्षुरात व ह़िकायात

ज़म ज़म नगर ह़ैदराबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के इस्लामी भाई मुह़म्मद नईम अत्तारी के बयान का लुब्बे लुबाब है कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुझ गुनाहगार पर बड़ा एह़सान है और उस का फ़ज़्ले अ़ज़ीम है कि मुझे आज से तक़रीबन 21

www.dawateislami.net

साल पहले हीराबाद (ज़म ज़म नगर हैदराबाद) के अ़लाक़े की ज़िम्मेदारी मिली और मैं ने जब वहां मदनी काम की शुरूआ़त की तो किसी ने मुझ से कहा कि यहां पर जावीद भाई[1] रहते हैं जो पहले दा'वते इस्लामी के मदनी माहो़ल से वाबस्ता थे लेकिन अब दूर हो चुके हैं मगर हैं बहुत समझदार ! आप इन से मुलाक़ात कर लें हो सकता है वोह दोबारा माहो़ल में आ जाएं। जब मैं कुछ इस्लामी भाइयों को साथ ले कर हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के घर पहुंचा और इन से मुलाक़ात की तो इन्हों ने फ़ौरन हमारी दा'वत क़बूल की और **मदनी माहो़ल** से दोबारा वाबस्ता हो गए और इतने अच्छे अन्दाज़ में मदनी काम किया कि हमें इन पर रश्क आता था कि مَاشَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन्हों ने हम सब को पीछे छोड़ दिया है। इन में शुक्रिया अदा करने का इतना जज़्बा था कि 21 साल में जब भी मेरी इन से मुलाक़ात होती या मैं इन के साथ होता तो दूसरों से मेरा तआ़रुफ़ इस त़रह़ करवाते कि येह मेरे मोह़सिन हैं और इन का मुझ पर एह़सान है कि येह मुझे मदनी माहो़ल में लाए, येह मेरे उस्ताद हैं और इन की येह कैफ़िय्यत आख़िर तक रही। मैं बारहा इन को रोकता था लेकिन येह फ़रमाते : "अगर आप ने

---

(1) : हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى का नाम पहले जावीद था **शैख़े त़रीक़त,** अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्दील कर के इन का नाम **मुह़म्मद** कर दिया और उ़र्फ़ या'नी पहचान के लिये आ़म नाम "**ज़म ज़म रज़ा**" रखा।

www.dawateislami.net

मुझ पर इनफ़िरादी कोशिश न की होती तो न जाने मैं आज कहां होता ! "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे मदनी इन्आमात के ताजदार, महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی की बरकतों से मालामाल फ़रमाएं । اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالىٰ على محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिये कि जो इस्लामी भाई मदनी माहोल से दूर हो गए हों, इन्हें फ़रामोश न करें, इन पर ज़रूर इनफ़िरादी कोशिश फ़रमाएं कि बा'ज़ इन में अनमोल हीरे तो बा'ज़ रोशन सितारे बन कर उभर सकते हैं जिस से इन की और आप की आख़िरत संवर सकती है । मदनी इन्आम नम्बर 55 के मुताबिक़ हफ़्ते में कम अज़ कम एक बिछड़े हुए इस्लामी भाई पर इनफ़िरादी कोशिश करनी होती है । **आप भी इस मदनी इन्आम पर अमल कीजिये, शायद ज़म ज़म भाई नुमा कोई चमकदार हीरा आप के भी हाथ लग जाए !**

मदनी माहोल से वाबस्ता रहिये

ज़म ज़म नगर हैदराबाद के इस्लामी भाई मजीद फ़रमाते हैं कि हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی नए और पुराने इस्लामी भाइयों को येह तरग़ीब देते रहते थे कि आप अपने आप को मदनी माहोल से वाबस्ता रखें और मदनी काम करते रहें ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो ।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالىٰ على محمَّد

www.dawateislami.net

(122) डाकूओं से हिफ़ाज़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी की दा'वत का जज़्बा पाने, सुन्नतों पर अमल करने, नेकियों का षवाब कमाने, दिल में इश्के़ रसूल की शम्अ़ जलाने के लिये तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपने ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ते रहिये, नमाज़ों की पाबन्दी जारी रखिये, सुन्नतों पर अमल करते रहिये, **मदनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये हर रोज़ "**फ़िक्रे मदीना**" कर के मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करते रहिये और हर मदनी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये और अपने इस मदनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है" के हुसूल की ख़ातिर पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के सुन्नतों की तर्बिय्यत के **मदनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये। नेक बन्दों से लोग मह़ब्बत करते हैं यहां तक कि बसा अवक़ात डाकू भी नेक बन्दों का एह़तिराम करते हुए इन्हें लूटने से बाज़ रहते हैं, ऐसी ही एक मदनी बहार मुलाह़ज़ा कीजिये :

चुनान्चे ताजदारे मदनी इन्आ़मात मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी व रुक्ने शूरा ह़ाजी अबू जुनैद **ज़म ज़म रज़ा** अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى का कुछ इस त़रह़ बयान है कि एक बार मैं जैब में काफ़ी रक़म लिये ह़ैदराबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध पाकिस्तान) से बाबुल मदीना कराची आने के लिये बस में सुवार हुवा। बस

www.dawateislami.net

अभी ब मुश्किल आधा घन्टा चली होगी कि अचानक मुख़्तलिफ़ निशस्तों से चार पांच अफ़्राद एक दम अस्लहा (اَس۔ل۔حہ) तान कर खड़े हो गए। इन में जो सब से क़द आवर था उस ने लपक कर ड्राईवर को एक ज़ोरदार त़मांचा जड़ दिया और उसे धकेल कर ड्राईविंग सीट पर क़ाबिज़ हो गया, बस एक कच्चे रास्ते में उतार दी गई, अब डाकूओं ने चलती बस में हर एक की जामा तलाशी लेनी और लूटना शुरूअ़ कर दिया। बस में शदीद ख़ौफ़ व हिरास था, मैं भी एक दम सहमा हुवा था, मेरी अगली निशस्त पर मज़बूत क़दो क़ामत के नौजवान बैठे थे और मुझे अन्देशा था कि कहीं ऐसा न हो कि येह डाकूओं के ख़िलाफ़ मुज़ाह़मत करें और वोह गोली चला दें। बहर ह़ाल मैं ने एह़तियात़न तजदीदे ईमान करने के बा'द आंखें बन्द कर लीं, मेरे बराबर जो साह़िब बैठे हुए थे एक डाकू ने उन की तलाशी ली और जो हाथ आया छीन लिया मगर मुझे हाथ न लगाया। दूसरा डाकू आया, उस ने भी इन्हीं साह़िब की तलाशी ली, मज़ीद उन की, किसी जैब से 100 रूपे का नोट बर आमद हुवा वोह भी लूट लिया और मुझे छेड़े बिग़ैर जाने लगा, तीसरे डाकू ने मेरी त़रफ़ इशारा कर के आवाज़ दी **मौलाना साह़िब को मत लूटना** येह देख कर मेरे पीछे बैठे हुए किसी पेसन्जर ने मौक़अ़ पा कर अपनी रक़म की गड्डी मेरी पीठ की त़रफ़ कुर्ते के अन्दर सरका दी, किसी ख़ातून ने पीछे से सोने का लॉकेट नीचे मेरे पाऊं की त़रफ़ फैंक दिया (इस का इ़ल्म मुझे बा'द में हुवा) बह़र ह़ाल डाकू लूट मार करने के बा'द बस से उतरे और फ़िरार हो गए, अब बस के लूटे हुए पेसिन्जरों की आवाज़

www.dawateislami.net

निकली। शोरो गुल और वावेला शुरूअ़ हो गया। किसी ने मेरी त़रफ़ इशारा कर के चिल्ला कर कहा : इस मौलाना को पकड़ लो येह **डाकूओं का आदमी** मा'लूम होता है क्यूंकि हम सब को लूटा और इस को नहीं लूटा, मैं डर गया कि अब गए ! येह लोग कहीं मुझे तोड़ फोड़ न डालें, यकायक ग़ैबी मदद यूं आई कि इन्हीं मुसाफ़िरों में से किसी ने इस त़रह़ कहा : **नहीं-नहीं, भाइयो ! येह शरीफ़ आदमी है, इस का लिबास और चेहरा नहीं देखते ! बस इस की नेकी आड़े आ गई और बच गया, हम लोग गुनाहगार हैं, हमें गुनाहों की सज़ा मिली है।**

मर्हूम ह़ाजी ज़म ज़म का मज़ीद बयान है : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ पहले डाकूओं से ह़िफ़ाज़त हुई बा'द में लुटे हुए मुसाफ़िरों की त़रफ़ से आने वाली शामत दूर हुई। येह **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल की बरकत की "मदनी बहार" है कि मैं दाढ़ी, ज़ुल्फ़ों और इ़मामा शरीफ़ का ताज सजाए सुन्नतों भरे लिबास में मल्बूस रहता हूं वरना मुझे भी शायद बे दर्दी से लूट लिया जाता। मदनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं फुल मॉडर्न रहता और स्टेज ड्रामों में काम किया करता था। **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم का करम हुवा कि मुझ गुनाहगार को दा'वते इस्लामी ने तौबा का रास्ता दिखाया, नमाज़ी बनाया, सुन्नतों का रंग चढ़ाया, ह़ुज़ूर ग़ौषे पाक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق के सिलसिले में मुरीद बनने का शरफ़ दिलाया, नेक बनने के नुस्ख़े या'नी **मदनी इन्आ़मात** का आ़मिल और अपने पीर साह़िब की त़रफ़ से मिलने वाले "शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या" के कुछ न कुछ अवराद पढ़ने वाला बनाया जिस में एक विर्द येह भी है

بِسْمِ اللّٰہِ عَلٰی دِیْنِیْ بِسْمِ اللّٰہِ عَلٰی نَفْسِیْ وَ وُلْدِیْ وَ اَھْلِیْ وَ مَالِیْ

www.dawateislami.net

*या'नी **अल्लाह** के नाम की बरकत से मेरे दीन, जान, अवलाद और अहलो माल की हिफ़ाज़त हो।*

(तर्जमा पढ़ना ज़रूरी नहीं, अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

फ़ज़ीलत : येह दुआ जो रोज़ाना सुब्हो शाम तीन तीन बार पढ़ ले उस के दीन, ईमान, जान, माल, बच्चे सब महफ़ूज़ रहें। (اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं (या'नी हाजी ज़म ज़म रज़ा) रोज़ाना सुब्हो शाम येह विर्द पढ़ता हूं, मेरा हुस्ने ज़न है कि डाकूओं से हिफ़ाज़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत से इसी **विर्द** की बरकत से हुई है। जब दुन्या में इस का येह षमर (या'नी फ़ाइदा) है तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मरते वक़्त ईमान भी सलामत रहेगा। मेरी तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों से मदनी इल्तिजा है कि **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहें और मक्तबतुल मदीना से मदनी इन्आमात का रिसाला हासिल कर के इस के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश करें, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दोनों जहानों में बेड़ा पार होगा।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की भी क्या ख़ूब **मदनी बहारें** हैं ! मज़्कूरा विर्द करने के अवक़ात या'नी "सुब्हो शाम" की ता'रीफ़ भी समझ लीजिये, चुनान्चे मक्तबतुल मदीना के मत्बूआ शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या सफ़हा 10 पर है : आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमकने तक "**सुब्ह**" है। इस सारे वक़्फ़े में जो कुछ पढ़ा जाए उसे सुब्ह में पढ़ना कहेंगे और दोपहर ढले (या'नी इब्तिदाए वक़्ते ज़ोहर) से ले कर गुरूबे आफ़्ताब तक "**शाम**" है। इस पूरे वक़्फ़े में जो कुछ पढ़ा जाए उसे शाम में पढ़ना कहेंगे। (नेकी की दा'वत, स. 299)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ईसाले षवाब की तफ़्सील

मदनी चैनल के नाज़िरीन, जामिअ़ातुल मदीना व मदारिसुल मदीना के त़लबा व त़ालिबात और दीगर इस्लामी भाइयों और बहनों की जानिब से मदनी इन्अ़ामात के ताजदार महबूबे अ़त्तार रुक्ने शूरा हाजी ज़म ज़म अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى को ईसाले षवाब की तफ़्सील

ईसाले षवाब	ता'दाद	ता'दाद अल्फ़ाज़ में
कुरआने पाक	9074623	(नव्वे लाख चोहत्तर हज़ार छे सो तेईस)
ज़िक्रुल्लाह	318258559	(इक्तीस करोड़ बयासी लाख अठ्ठावन हज़ार पांच सो उन्सठ)
सूरतुल फ़ातिहा	3363755	(तेंतीस लाख तिसठ हज़ार सात सो पचपन)
सूरतुल बक़रह	206	(दोसो छे)
सूरतुर्रहमान	40971	(चालीस हज़ार नव सो इकहत्तर)
सूरतुल मुज़्ज़म्मिल	63315	(तिरसठ हज़ार तीन सो पन्दरह)
सूरतुल मुद्दष्षिर	430	(चार सो तीस)
सूरतुस्सजदा	103	(एक सो तीन)
सूरह मुहम्मद	35	(पैंतीस)
सूरतुत्तग़ाबुन	1	(एक)
सूरतुद्दुख़ान	38650	(अड़तीस हज़ार छे सो पचास)
सूरतुल कहफ़	378	(तीन सो अठत्तर)
सूरतुल कौषर	1015	(एक हज़ार पन्दरह)
सूरतुल इख़्लास	1821071	(अठ्ठारह लाख एक्कीस हज़ार इकहत्तर)
सूरह काफ़िरून	2361	(दो हज़ार तीन सो इकसठ)
सूरतुत्त़ारिक़	400	(चार सो)

www.dawateislami.net

सूरतुन्नास	3549	(तीन हज़ार पांच सो उन्चास)
सूरतुल फ़लक़	1833	(अठ्ठारह सो तैंतीस)
दीगर सूरतें	1431172	(चौदह लाख इकत्तीस हज़ार एक सो बहत्तर)
मख़्लिफ़ सिपारे	25901	(पच्चीस हज़ार नव सो एक)
दलाइलुल ख़ैरात	26	(छब्बीस)
दुरूदे तुनज्जीना	1643	(सोलह सो तैंतालीस)
दुरूदे लखी	20	(बीस)
दुरूदे ताज	1039	(एक हज़ार उन्तालीस)
दुरूदे इब्राहीमी	121	(एकसो एक्कीस)
दुरूदे ग़ौषिया	25	(पच्चीस)
कन्जुल ईमान पढ़ने की निय्यत	70	(सत्तर)
आयतुल कुरसी	511178	(पांच लाख ग्यारह हज़ार एक सो अठत्तर)
इस्तिग़फ़ार	4931559	(उन्चास लाख इकत्तीस हज़ार पांच सो उन्सठ)
मुतफ़र्रिक़ नवाफ़िल	37100	(सैंतीस हज़ार एक सो)
घर दर्स	24	(डबल बारह)
नफ़्ली रोज़े	60	(साठ)
नफ़्ली त़वाफ़	12	(बारह)
ए'तिकाफ़	476	(चार सो छहत्तर)
आयते करीमा	162824	(एक लाख बासठ हज़ार आठ सो चोबीस)
अ़हद नामा	183	(एक सो तिरासी)
ख़त्मे क़ादिरिय्या	2	(दो)
मदनी क़ाफ़िलों का षवाब	13526	(तेरा हज़ार पांच सो छब्बीस)

www.dawateislami.net

इस्लामी बहनों के कुफ़्ले मदीना का षवाब	60	(साठ)
हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत का षवाब	317	(तीन सो सतरह)
फ़िक्रे मदीना का षवाब	240	(दो सो चालीस) दिन
रसाइल तक़्सीम करने का षवाब	20,029	(बीस हज़ार उन्तीस)
उ़मरह	159	(एक सो उन्सठ)
ह़ज	49	(उन्चास)
मुतफ़र्रिक़ मदनी काम	30	(तीस)
जामिअ़तुल मदीना में दाख़िले की निय्यत	14	(चौदह)
नेकी की दा'वत	14	(चौदह)
मदनी मुज़ाकरे	63	(तिरसठ)
फ़िक्रे मदीना करने की निय्यत करने वाली इस्लामी बहनों की ता'दाद	8	(आठ)
कुफ़्ले मदीना लगाने की निय्यत करने वाली इस्लामी बहनों की ता'दाद	80	(अस्सी)
शरई पर्दा करने की निय्यत करने वाली इस्लामी बहनों की ता'दाद	19	(उन्नीस)
जुल्फ़े रखने की निय्यत	161	(एक सो इकसठ)
ज़बान का कुफ़्ले मदीना	227	(दो सो सत्ताईस)
पेट का कुफ़्ले मदीना	191	(एक सो इकानवे)
हर माह कम अज़ कम 12 नमाज़ी बनाने की निय्यत	136	(एक सो छत्तीस)

www.dawateislami.net

रोज़ाना एक रिसाला (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पढ़ने की निय्यत	119	(इक सो उन्नीस)
रोज़ाना मदनी चैनल कम अज़ कम (1 घन्टा 12 मिनट) देखना और कम अज़ कम 12 को देखने की दा'वत देना	336	(तीन सो छत्तीस)
दीगर सूरतें	9341946	(तिरानवे लाख इक्तालीस हज़ार नौ सो छियालीस)
मुतफ़र्रिक़ पारे	88405	(अठ्ठासी हज़ार चार सो पांच)
वक़्फ़े मदीना	6	(छे)
चांद रात से हाथों हाथ मदनी तर्बिय्यती कोर्स 63 दिन	110	(एक सो दस)
चांद रात से हाथों हाथ मदनी क़ाफ़िला कोर्स 41 दिन	133	(एक सो तेंतीस)
चांद रात से हाथों हाथ 30 दिन मदनी क़ाफ़िले में सफ़र	367	(तीन सो सरसठ)
चांद रात से हाथों हाथ 12 दिन मदनी क़ाफ़िले में सफ़र	880	(आठ सो अस्सी)
शबे जुमुआ़ के इजतिमाअ़ के लिये रोज़ाना 2 को दा'वत देने की निय्यत	480	(चार सो अस्सी)
चांद रात से हाथों हाथ 3 दिन मदनी क़ाफ़िले में सफ़र	3099	(तीन हज़ार निनानवे)
हफ़्तावार तर्बिय्यती हल्क़े में शिर्कत	205	(दो सो पांच)
हर माह 3 दिन का मदनी क़ाफ़िला	167	(एक सो सरसठ)
हफ़्तावार यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़ में शिर्कत	224	(दो सो चोबीस)
मुस्तक़िल इमामा शरीफ़ की निय्यत	155	(एक सो पचपन)
बयान / मदनी मुज़ाकरा (ओडियो / वीडियो) सुनने की निय्यत	606	(छेसो छे)
दाढ़ी शरीफ़ की निय्यत	186	(एक सो छियासी)
मदनी लिबास की निय्यत	597	(पांच सो सत्तानवे)

www.dawateislami.net

फिर तवज्जोह बढ़ा मेरे मुर्शिद अत्तार पिया

के 26 हुरूफ़ की निस्बत से इस्तिग़ाषा के 26 अश्आर

(अज़ : महबूबे अत्तार हाजी **ज़म ज़म रज़ा** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى)

फिर तवज्जोह बढ़ा मेरे मुर्शिद पिया
नज़रें दिल पर जमा मेरे मुर्शिद पिया

नफ़्स हावी हुवा हाल मेरा बुरा
तुझ से कब है छुपा मेरे मुर्शिद पिया

अब ले जल्दी ख़बर तेरी जानिब नज़र
मैं ने ली है लगा मेरे मुर्शिद पिया

सख़्त दिल हो चला, होगा अब क्या मेरा
दे दे दिल को जिला मेरे मुर्शिद पिया

तेरी बस इक नज़र दिल पे हो जाए गर
पाएगा येह शिफ़ा मेरे मुर्शिद पिया

ऐसी नज़रें झुकें फिर कभी न उठें
दे दे ऐसी हया मेरे मुर्शिद पिया

गर मैं चुप न रहा बोलता ही रहा
होगा नामा बुरा मेरे मुर्शिद पिया

बस तेरी याद हो दिल मेरा शाद हो
मुझ को मय वोह पिला मेरे मुर्शिद पिया

ऐसा ग़म दे मुझे होश ही न रहे
मस्त अपना बना मेरे मुर्शिद पिया

हर बुरे काम से ख़्वाहिशे नाम से
दूर रखना सदा मेरे मुर्शिद पिया

मुझ गुनाहगार को इस ख़ताकार को
तू ही मुख़्लिस बना मेरे मुर्शिद पिया

शहवतों की तलब ख़त्म हो जाए अब
कर दो तक़्वा अता मेरे मुर्शिद पिया

जो मिले शुक्र हो कल की न फ़िक्र हो
हो क़नाअत अता मेरे मुर्शिद पिया

डाल दी क़ल्ब में अज़मते मुस्तफ़ा
तू रज़ा की ज़िया मेरे मुर्शिद पिया

www.dawateislami.net

गुल्शने सुन्नियत पे थी मज़लूमिय्यत — तूने दी है बक़ा मेरे मुर्शिद पिया
तेरे एहसान हैं सुन्नतें आम हैं — दीं का डंका बजा मेरे मुर्शिद पिया
हिक्मतों से तेरी हर सू धूमें पडीं — तू जमाले रज़ा मेरे मुर्शिद पिया
है येह फ़ज़्ले ख़ुदा कि है तुझ पे फ़िदा — बच्चा हो या बड़ा मेरे मुर्शिद पिया
हों नमाज़ें अदा पहली सफ़ में सदा — हो ख़ुशूअ़ भी अ़ता मेरे मुर्शिद पिया
नफ़्ल सारे पढ़ूं और अदा मैं करूं — सुन्नतें क़ब्लिया मेरे मुर्शिद पिया
बा वुज़ू मैं रहूं, एक रुकूअ़ भी पढ़ूं — कन्ज़ुल ईमां सदा मेरे मुर्शिद पिया
पूरे दिन हो नसीब सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ — सुन्नते दाइमा मेरे मुर्शिद पिया
क़ाफ़िलों में सफ़र कर लूं मैं उ़म्र भर — जज़्बा हो वोह अ़ता मेरे मुर्शिद पिया
मुझ से बदकार से इस गुनाहगार से — रहना राज़ी सदा मेरे मुर्शिद पिया
आख़िरी वक़्त है और बड़ा सख़्त है — मेरा ईमां बचा मेरे मुर्शिद पिया
इक अ़जब था मज़ा जब येह तेरा गदा — तेरी जानिब चला मेरे मुर्शिद पिया

-: मदनी मश्वरा :-

येह अशआ़र याद कर लें और रोज़ाना चन्द मिनट तसव्वुरे मुर्शिद ज़रूर करें और येह अशआ़र पढ़े اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकतें आप ख़ुद देखेंगे ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मस्लक का तू इमाम है इल्यास क़ादिरी

मस्लक का तू इमाम है इल्यास क़ादिरी — तदबीर तेरी ताम है इल्यास क़ादिरी

फ़िक्रे रज़ा को कर दिया आ़लम पे आश्कार — येह तेरा ऊंचा काम है इल्यास क़ादिरी

सर मस्तिये रज़ा की हर आ़लम में धूम है — साक़िये दोरे जाम है इल्यास क़ादिरी

फ़ैज़ाने सुन्नते नबी फैलाता है तेरी — तह़रीक को दवाम है इल्यास क़ादिरी

अमरीका, यूरोप, एशिया, अफ़्रीक़ा हर ज़मीं — करती तुझे सलाम है इल्यास क़ादिरी

सुन्नत की ख़ुश्बूओं से ज़माना महक उठा — फ़ैज़ान तेरा आ़म है इल्यास क़ादिरी

सर पे इमामा माथे पे सज्दों का नूर है — जो भी तेरा ग़ुलाम है इल्यास क़ादिरी

है दा'वते इस्लामी की दुन्या में धूम धाम — मक़्बूल तेरा काम है इल्यास क़ादिरी

तन्हा चला तू, साथ तेरे हो गया जहां — मीठा तेरा कलाम है इल्यास क़ादिरी

साया है तेरे सर पे दुआ़ए ख़वास का — तू मरजए़ अ़वाम है इल्यास क़ादिरी

है **बदरे रज़वी** भी तेरे किरदार का असीर

इस का तुझे सलाम है इल्यास क़ादिरी

مدینہ

(1).... येह कलाम अ़ल्लामा बदरुल क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی (हॉलेन्ड) ने 26 रमज़ानुल मुबारक सि. 1431 हि. को जश्ने विलादते अमीरे अहले सुन्नत के मौक़अ़ पर ब ज़रीअ़ए रेकॉर्ड कॉल पेश किया था।

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	6	चेहरा खिल उठता	30
बादशाहों की हड्डियां	7	मदनी हुल्ये में रहा करते	31
महबूबे अत्तार की विलादत व रिहलत	10	इल्मे दीन सीखने का जज़्बा	32
निकाह़ व अवलाद	11	मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत का शौक़	33
कुछ लोगों का दीन के लिये वक़्फ़ होना ज़रूरी है	12	मदनी चैनल पर मदनी मुज़ाकरा देखने का अन्दाज़	33
ख़िदमते दीन के लिये वक़्फ़ होने वाले की अ़ज़मत	13	मदनी मुज़ाकरे की क्या बात है !	33
तर्बिय्यते अवलाद	13	मैं ने गुनाहों से तौबा कर ली	35
तर्बिय्यते अवलाद की अहम्मिय्यत	14	200 मदनी मुज़ाकरे	35
मिज़ाज में नर्मी	16	शदीद बीमारी में भी नमाज़ की फ़िक्र	36
अपने बच्चों तक से मुआ़फ़ी मांग लेते	16	शदीद ज़ख़्मी ह़ालत में नमाज़	37
किसी का दिल न दुखे	16	तयम्मुम का इन्तिज़ाम कर लीजिये	37
मोमिन की शान का बयान ब ज़बाने क़ुरआन	17	सफ़र में भी नमाज़ों का ख़याल रखते	38
गुस्सा रोकने की फ़ज़ीलत	17	नमाज़ फ़र्ज़ है	38
गुस्सा पीने वाले के लिये जन्नती ह़ूर	18	नमाज़ की अहम्मिय्यत का बयान	39
बच्चों की अम्मी का शुक्रिया अदा किया	18	बे नमाज़ी का हौलनाक अन्जाम	40
लोगों का शुक्र अदा करने की अहम्मिय्यत	19	सर कुचलने की सज़ा	40
सब से पहले वालिदए मोह़तरमा की ज़ियारत करते	19	सियाह ख़च्चर नुमा बिच्छू	41
वालिदा की क़दम बोसी की मुन्फ़रिद ह़िकायत	20	मुत़ालए़ का शौक़	41
रोज़ाना जन्नत की चोखट चूमिये	20	शदीद बीमारी में भी रिसाले का बग़ौर मुत़ालआ़ किया	42
वालिदा की इत़ाअ़त की	21	नई कुतुबो रसाइल शाएअ़ होने पर बहुत ख़ुश होते	43
मां के ह़क़ की अहम्मिय्यत	22	किताबें पढ़ने की तरग़ीब दिलाया करते	44
मदनी माह़ोल से कैसे वाबस्ता हुए ?	22	ख़ामोश रहना एक त़रह़ की इबादत है	45
दा'वते इस्लामी में ज़िम्मेदारियों की तफ़्सील	26	"ख़ामोशी आ'ला दरजे की इबादत है" की वज़ाह़त	46
महबूबे अत्तार की तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारियां	26	ख़ामोशी के 60 साल की इबादत से बेहतर होने की वज़ाह़त	46
महबूबे अत्तार की अपने पीरो मुर्शिद से अ़क़ीदत	27	लिख कर बात करने की आ़दत	47
छुप छुप कर ज़ियारत किया करते	28	लिख कर बात करना कैसे शुरूअ़ किया ?	48
ईदें और बड़ी रातें बापा की सोह़बत में गुज़ारते	29		

www.dawateislami.net

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा
निगाहें नीची रखने की अहम्मिय्यत	49	बीमारी में भी खुश अख़्लाक़ रहे	73
क़ुफ़्ले मदीना का ऐनक	50	मुस्कुरा कर बात करना सुन्नत है	74
नर्सों की वजह से आंखें बन्द कर लेते	52	नौमुस्लिम पर इनफ़िरादी कोशिश	74
मताार पर निगाहों की हिफ़ाज़त	53	महबूबे अत्तार का ता'ज़िय्यत का अन्दाज़	76
आंखों पर सब्ज़ पट्टी बांध ली !	53	हाजी ज़म ज़म हमारे घर तशरीफ़ ले आए	78
आंखों के क़ुफ़्ले मदीना की मश्क़ करवाया करते	54	हाथ की सूजन जाती रही	79
जामिअ़तुल मदीना के तालिबुल इल्म के तअस्सुरात	55	बिग़ैर ऑपरेशन शिफ़ा मिल गई	80
नेकी की दा'वत के कार्ड सीने पर सजाया करते थे	56	दुआए मा'रूफ़ कर्ख़ी की बरकत	81
बारगाहे रिसालत में ग़ीबत कुश कार्ड की मक़्बूलिय्यत	57	माल से बे रग़बती	83
तहाइफ़ से नवाज़ते	58	ज़ाती सुवारी नहीं थी	83
चटाई पर सोते थे	59	मदनी कामों में मसरूफ़िय्यत	84
सोते वक़्त चेहरा क़िब्ले की तरफ़ रखना सुन्नत है	60	स्कूल के अवक़ात में राबिता न फ़रमाएं	86
क़िब्ला सम्त बैठने की कोशिश फ़रमाते	60	मदनी क़ाफ़िले में सफ़र का शौक़	86
महबूबे अत्तार की अश्क बारियां	61	ज़म ज़म भाई गिलगित वाले	87
ख़ौफ़े ख़ुदा से रोने की फ़ज़ीलत	63	मदनी क़ाफ़िले में हाजी ज़म ज़म की मदनी बहार	88
इस्लामी भाई की नींद में ख़लल न पड़े	64	क़ब्र का तसव्वुर	89
पाऊं पकड़ कर मुआफ़ी मांगी	65	गुनाहों से बचने का ज़ेहन दिया करते	91
शकर रन्जी के बा'द मा'ज़िरत की	65	25 वीं और 26 वीं की बहारें	92
मुआफ़ी के लिये सिफ़ारिश करवाई	66	महब्बते मुर्शिद बढ़ाने का नुस्ख़ा	92
मस्जिद का अदब	67	हर माह यौमे रज़ा की धूम	93
नीले (bule) रंग का लोटा इस्ति'माल नहीं करते थे	67	हर माह विलादते अमीरे अहले सुन्नत की धूम	93
मदनी इन्आमात के ताजदार की आजिज़ी	68	अमीरे अहले सुन्नत के मदनी फूल और मदनी इन्आमात	95
हाफ़िज़े क़ुरआन की ता'ज़ीम	69	किस के लिये कितने मदनी इन्आमात ?	95
सब्ज़ रिज़ा के पैकर	70	महबूबे अत्तार सरापा तरग़ीब थे	96
मैं ने इन्हें साबिर पाया	70	मदनी इन्आमात के लिये इनफ़िरादी कोशिश	97
मायूसी के अल्फ़ाज़ नहीं बोलते थे	71	मदनी इन्आमात के रसाइल तक़्सीम कर रहे थे	98
सब्र करना चाहिये	71	सरसब्ज़ व शादाब बाग़	99
मुसीबत की हिक्मत	72	मुझे मदनी माहोल की बरकतें नसीब हुईं	101
परेशान न होने दिया	73	पान वाले पर इनफ़िरादी कोशिश	102

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा
डॉक्टर की मदनी माहोल से वाबस्तगी	103	किसी के दिल में खुशी दाख़िल करने वाले 9 काम	132
इनफ़िरादी कोशिश की अहम्मिय्यत	107	दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदारान के लिये लाइक़े तक़्लीद	132
सफ़रे मदीना	109	कभी कभार खुश तब्ई भी फ़रमाते	133
मशहूर आशिक़े रसूल अल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी		बात न मानने पर नाराज़ नहीं हुए	133
का अन्दाज़े अदब	110	इन की सोहबत में तासीर थी	135
रूमाल पर अश्आर लिख कर मदीने शरीफ़ भेजे	112	रिक्षा ड्राईवर पर इनफ़िरादी कोशिश	135
उसे ग़ौषे पाक की ज़ियारत हुई थी	113	बर वक़्त हौसला अफ़्ज़ाई	136
मरज़ुल मौत में भी दूसरे मरीज़ की दिलजोई	114	इस्तिक़ामत का मदनी नुस्ख़ा	138
फ़ोन कर के ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करते	115	जब अलाक़ाई निगरान से ज़ैली निगरान बनाया गया	139
केन्सर के मरीज़ की इयादत	116	अनोखी आरज़ू	140
मेरी इयादत के लिये सब से ज़ियादा फ़ोन इन्हों ने किये	117	बातिनी तर्बिय्यत भी फ़रमाते	141
फ़र्ज़ उलूम कोर्स के तालिबे इल्म की इयादत	118	मेरी सुस्ती को चुस्ती में बदल दिया	142
पुराने रफ़ीक़ की इयादत	118	आख़िरत के काम में जल्दी करनी चाहिये	143
सहरी पेश की	119	नामो नुमूद की ख़्वाहिश से कोसों दूर थे	143
अपना लिहाफ़ मुझे पेश कर दिया	120	रबड़ी का तोहफ़ा	145
जामिअतुल मदीना के तालिबुल इल्म की ख़ैर ख़्वाही	121	ज़म ज़म का मतलब है "रुक रुक"	145
बीमारी के आलम में भी महरूम नहीं लौटाया	121	रिसाले की आमद पर बेहद खुश हुए	146
मुसलमान की हाजत रवाई करना कारे षवाब है	122	खाना साथ खाते	146
हाजत रवाई का जज़्बा	123	नाज़ुक हालत में भी साबिर रहे	147
वलीमे में ज़ियादा रक़म दिलवाई	124	बीमारी में भी ए'तिकाफ़ करने की ख़्वाहिश	147
शायद मैं जामिआ छोड़ देता	124	मदनी चैनल पर ए'लाने वफ़ात और दुआए मग़फ़िरत	148
दुख्यारों की हाजत रवाई की झलकियां	125	ईसाले षवाब की तरग़ीब	150
सर का दर्द ख़त्म हो गया	126	"फ़ैज़ाने ज़म ज़म" मस्जिद बनाने की निय्यतें	151
ग़मज़दों की दिलजोई	127	पेट की बीमारी में मरने वाला शहीद है	152
बीमारी में भी दुख्यारों की ख़ैर ख़्वाही	128	ग़ुस्ल देने की तरकीब	154
महबूबे अत्तार की इनफ़िरादी कोशिश की मदनी बहार	129	नमाज़े जनाज़ा	154
ग़रीबों का दिल खुश किया	130	सहराए मदीना बाबुल मदीना में तद्फ़ीन	157
मुसलमान के दिल में खुशी दाख़िल करने का इन्आम	131	हाजी मुश्ताक़ की हाजी ज़म ज़म से मुलाक़ात	161
		मय्यित की उल्टी आंख कुछ कुछ खुल गई !	162

www.dawateislami.net

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा
जिन्नात की अश्कबारी	163	इब्रत अंगेज़ बात	176
ख़्वाब में तशरीफ़ ले आए	165	शैख़े त़रीकत, अमीरे अहले सुन्नत के तअष्युरात	176
बा'दे वफ़ात हाजी ज़म ज़म ने ख़्वाब में आ कर ख़बर दी कि	165	शहज़ादए अत्तार के तअष्युरात	180
मैं नमाज़े अ़स्र पढ़ने लगा हूं	166	अराकीने शूरा के तअष्युरात	182
क़ब्र में तिलावते कुरआन कर रहे हैं	167	दीगर इस्लामी भाइयों के तअष्युरात	183
हाजी ज़म ज़म को रौज़ए अत़हर के क़रीब देखा	167	ज़म ज़म भाई ने मुझे बचा लिया	187
नेक ख़्वाब बिशारतें हैं	169	बक़िय्या उ़म्र मदनी काम करते हुए गुज़ारूंगा	187
मदनी एहतिमाम	169	मदनी काम किया करूंगी	188
अच्छे ख़्वाब बयान करने की इजाज़त	170	महबूबे अत्तार पर इनफ़िरादी कोशिश करने वाले इस्लामी भाई	
ख़्वाब बयान करने में क्या निय्यत होनी चाहिये ?	170	के तअष्युरात व हिकायात	188
झूटा ख़्वाब बयान करने वाले का अन्जाम	172	मदनी माहोल से वाबस्ता रहिये	190
ख़्वाब की चार क़िस्में	172	डाकूओं से हिफ़ाज़त	191
मज़ार शरीफ़ बनाने का ए'लान	173	ईसाले षवाब की तफ़्सील	195
अय्यामे मुबल्लिग़ीने दा'वते इस्लामी मनाने का अ़ज़्म	174	फिर तवज्जोह बढ़ा	199
अल मदीना लाइब्रेरियों का क़ियाम	174	मस्लक का तू इमाम है इल्यास क़ादिरी	201
ईसाले षवाब के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र	175	फ़ेहरिस्त	202

مأخذ و مراجع

نام کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
ترجمہ قرآن کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
تفسیر خزائن العرفان	صدرالافاضل مفتی نعیم الدین مرادآبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
تفسیر نعیمی	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	مکتبہ اسلامیہ مرکز الاولیاء لاہور
صحیح البخاری	امام ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۱۹ھ
صحیح مسلم	امام ابوالحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دارابن حزم بیروت، ۱۴۱۹ھ
سنن الترمذی	امام ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دارالفکر بیروت، ۱۴۱۴ھ
سنن ابی داؤد	امام ابوداؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	داراحیاء التراث بیروت، ۱۴۲۱ھ
الموطا	امام مالک بن انس، متوفی ۱۷۹ھ	دارالمعرفۃ بیروت، ۱۴۲۰ھ
المسند	امام احمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	دارالفکر بیروت، ۱۴۱۴ھ
الفردوس بماٗثور الخطاب	حافظ ابوشجاع شیرویہ بن شہردار بن شیرویہ دیلمی، متوفی ۵۰۹ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۱۷ھ
موسوعۃ ابن ابی الدنیا	حافظ امام ابوبکر عبداللہ بن محمد قرشی، متوفی ۲۸۱ھ	مکتبۃ العصریۃ بیروت، ۱۴۲۶ھ
شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۲۱ھ

www.dawateislami.net

المعجم الکبیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۲ھ
المعجم الاوسط	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
الجامع الصغیر	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۵ھ
الترغیب والترھیب	امام زکی الدین عبد العظیم بن عبد القوی منذری متوفی ۶۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۷ھ
حلیۃ الاولیاء	امام ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
کنز العمال	امام علی متقی بن حسام الدین ہندی متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
شرح مسلم	امام محی الدین ابو زکریا یحیی بن شرف نووی متوفی ۶۷۶ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۰۱ھ
فیض القدیر	علامہ محمد عبد الرؤف مناوی متوفی ۱۰۳۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۲ھ
مراٰۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور
فتاوٰی ہندیہ	ملا نظام الدین متوفی ۱۱۶۱ھ وعلمائے ہند	دار الفکر بیروت ۱۴۱۱ھ
رد المحتار	علامہ سید محمد امین ابن عابدین شامی متوفی ۱۲۵۲ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
الدر المختار	علامہ علاء الدین محمد بن علی حصکفی متوفی ۱۰۸۸ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
فتاوٰی رضویہ (مخرجہ)	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن لاہور ۱۴۱۸ھ
بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
نماز کے احکام	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
اسلامی بہنوں کی نماز	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
مکارم الاخلاق	الحافظ سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
عیون الحکایات	امام ابو الفرج عبد الرحمن بن علی ابن الجوزی متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۴ھ
کتاب الکبائر	امام محمد بن احمد بن عثمان ذہبی متوفی ۷۴۸ھ	دار مکتبۃ الحیاۃ للطباعۃ والنشر بیروت ۱۹۸۸ء
تنبیہ المغترین	امام عبد الوہاب بن احمد شعرانی متوفی ۹۷۳ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۵ھ
روض الریاحین	امام عبد اللہ بن اسعد یافعی متوفی ۷۶۸ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
احیاء علوم الدین	امام ابو حامد محمد بن محمد الشافعی الغزالی متوفی ۵۰۵ھ	دار صادر بیروت ۲۰۰۰ء
مکاشفۃ القلوب	امام ابو حامد محمد بن محمد الشافعی الغزالی متوفی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
قرۃ العیون بہامش الروض الفائق	فقیہ ابو اللیث نصر بن محمد سمرقندی متوفی ۳۷۳ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۱۹ھ
شجرۂ قادریہ رضویہ	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
انوار قطب مدینہ	جناب خلیل احمد رانا صاحب	برکاتی پبلشرز باب المدینہ کراچی
عاشقان رسول کی 130 حکایات	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
نیکی کی دعوت	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
بادشاہوں کی ہڈیاں	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
پردے کے بارے میں سوال جواب	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
163 مدنی پھول	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
لقط المرجان فی احکام الجان	امام جلال الدین سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۰۶ھ
حدائق بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
وسائل بخشش	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

ज़म ज़म रज़ा के ना क़ाबिले फ़रामोश कारनामे

''मदनी इन्आमात ब सूरते सुवालात'' जो कि दर ह़क़ीक़त नेक बनने के अ़ज़ीम नुस्खे़ हैं, नफ़्स पर सख़्त गिरां होने की वजह से बा 'ज़ इस्लामी भाई क़बूल करने में पसो पेश कर रहे थे जिस की वजह से मैं काफ़ी मायूसी का शिकार था, ऐसे में मदनी इन्आमात के ताजदार ह़ाजी ज़म ज़म रज़ा अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی ने मेरी ढारस बंधाई और ''मदनी इन्आमात'' को आ़म करने के लिये कमर बस्ता हो गए। ज़रूरतन इन में तरामीम व इज़ाफ़े भी करवाते रहे, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज दा 'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में ''मदनी इन्आमात'' की धूम धाम है (मैं ''सुवालात'' कहा करता था ''मदनी इन्आमात'' नाम ह़ाजी ज़म ज़म रज़ा ही का तजवीज़ कर्दा है) اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज कषीर इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें ''मदनी इन्आमात'' की बरकात से माला माल हैं। इस का ज़ियादा तर सहरा ह़ाजी ज़म ज़म रज़ा के सर जाता है ताहम इस सिलसिले में दीगर इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों ने भी ख़ूब तआ़वुन फ़रमाया है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सभी को जज़ाए ख़ैर से नवाज़े। आमीन। ह़ाजी ज़म ज़म रज़ा ज़बान व आंख के क़ुफ़्ले मदीना के भी अ़ज़ीम दाई थे। यक़ीन मानिये ता दमे तह़रीर कमा ह़क़्क़ुहू इन का कोई ने 'मल बदल मुझे नज़र नहीं आया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मर्हूम पर करोड़ों रह़मतें नाज़िल फ़रमाए।

ज़म ज़म रज़ा को प्यारे ख़ुदा ! बे ह़िसाब बख़्श
जन्नत में क़ुर्बे माहे रिसालत म आब बख़्श

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ता़लिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़फ़िरत

2, रजबुल मुरज्जब, 1434 हि.

मक्तबतुल मदीना

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बाग़ीचे के सामने,
मिरज़ापूर, अह़मदाबाद - 1, गुजरात, अल हिन्द Mo. + 91 9327168200
E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com, www.dawateislami.net

MC 1286